ए६०॥ ॐ नमो वीतरागाय॥ नमिऊण॰। जिनवरेंद्र श्रीवीतरागदेव नमीनइं उपदेसमाला बा-
लिसु। किस्या तं श्रीवीतरागदेव। इंद्र नरेंद्र तीए अर्चित। पूजीता बइ। किसइ करी बालिसु। गुरु उप-

ए६०॥ प्रवचनाय नमः॥ नमिऊण जिणवरिंदे इंदनरिंदच्चियतिलोयगुरू
उवएसमालमिणमो वुच्छामि गुरूवएसेण १ जगचूडामणिभूओ उसभो
वीरो तिलोयसिरितिलओ एगो लो- गाइच्चो एगो चक्खू तिहुयणस्स
२ संवच्छरमुसभजिणो छम्मा- सा वद्धमाणजिणचंदो इय
विहरिया निरसणा जइज्ज ए- वमाणेणं ३ जइ ता तिलो-
यनाहो विसहइ बहुआइं अस- रिसजणस्स इअ जीयंतकरा-
इं एस खमा सव्वसाहूणं ४ न चइज्ज- इ चालेउं महइमहावद्धमाणजि-
णचंदो उवसग्गसहस्सेहिं वि मेरु जहा वाययुंजाहिं ५ भद्दो विणीय-
विणओ पढमगणहरो समत्तसुयनाणी जाणंतो वि तमत्थं विम्हियहि-

चलइ नही॥ भद्दो॰। प्रथम गणधर॥ श्रीइंद्रभूति संपूर्ण श्रायत श्रुतज्ञान न उद्धणी। भद्द-
अ नइ विनीत प्राप्त विनय धिकउ। जे अर्थ जाणतउ हंतउ विस्मित हृदय वकउ। श्री महा-

का विइ संगमादिकना उपसर्ग
नइ जिष्टां ति जीवत॰ बीजा जीव
ना जीवत विनाश करणहार॥
एहवा सवि क्षमइ स्वामी रइड जो-
ईनइं जइ स्वामी त्रिलोकनाथ श्रीवी-
र। असरिसजन नीच माणुस
नाकीधं बहु ध्याइ। घणा
इं कदर्थन विसह
इ खमणि इस। इह॥३॰१४
॥ न चइज्ज॰। म हामा रउ वर्द्ध-
मान जिनचंद्र मेरु पर्वतनी प-
रि मारुतइ विषइ एकचित्त ध्यान
बइठा पक उच्चलावी न सकीय-
इ। उपसर्ग न सहा सकरी। जिम
मेरु गिरि पर्वत वायुनी गुंजा दिं

देस करी बोलिसु॥१ जगचूडाम-
णि॰॥ श्री ऋषभ जगनइ चूडामणि
समु गरु समान वर्तइ। अनइ म
श्री वीर त्रैलोक्य श्री त्रिभुवनल-
क्ष्मीनइ तिलक समान वइ। एक श्री
ऋषभ लोकनइ आदित्य समान
एक श्री वीर लोचन समा-
न। त्रिभुवन कइ अं-
खि वइ॥ २ सं। वच्छर०। श्री
ऋषभ वरस दी। सलगी निराहा-
र विहरिउ। अनइ श्री वर्द्धमान जिन
चंद्र छम्मास निरसण विहरिउ। जे
तीर्थंकर इम निरसन विहरिया। ते
इणि दृष्टांति न १ पक्षि मानइ विष-
इ॥ जइज्ज॰ सा णीयइ यत्न क-
रिवउ॥ ३ जइ ता॥ x तोइ त्रिलोक्य

वीर नइ उ चिवनी सलइ॥६ जं आण॰। जं राजा आज्ञा दिइ। तं प्रगई उलणीय इ लोक सिरेण म-
स्तकि इस करी इच्छंति वांछइ। इम गुरुजनमुखि बोलणइ तिहि कर्य॰ हाथ जोडी नइ सांभलिव-

यओ सुणइ सव्वं ६ जं आणवेइ राया पगईओ तं सिरेण इच्छंति इय गुरुज-
णमुहभणियं कयंजलिउडेहिं सोअव्वं ७ जह सुरगणाण इंदो गह-
गणताराणं च जह चंदो जह य पयाण नरिंदो गणस्स वि गुरु
तहाणंदो ८ बालु त्ति महीपालो न पया परिभवइ एस गुरु-
उवमा जं वा पुरओ काउं वि- हरंति मुणी तहा सो वि ९ प-
डिरूवो तेयस्सी जुगप्पहा- णागम मधुरवक्का गंभीरो धि-
इमंतो उवएसपरो य आयरिओ १० अपरिस्सावी सोमो संगहसी-
लो अभिग्गहमई य अविकत्थणो अचवलो पसंतहियओ गुरू होइ
११ कइया वि जिणवरिंदा पत्ता अयरामरं पहं दाउं आयरिएहिं पवयणं

ऽवो। दिक आश्रइ लिइ। आनरा नइ दिश अविकत्थणो॥ घाडउं बोलइ। अचलो आपणी सल-
घा न करइ। अचपल। प्रशांत हृदइ। एवं विध गुरु हुइ॥११ कइया॰। कदाचि कालि जिन प्रपंच लणी
यइ ज्ञानादिक मार्गी दाउंलणी॰ दिषाडी॥ अयरामरं अजरामर लणी इम गति ति हूं। पवा॰ पवना त

करीनइ विहार करइ। तउ गुरु
नी परि। अथवा रायनी परि आरा-
धिवउ॥ ९ पडिरूवो॰ प्रतिरूप
लक्षणीयइ स्वरूप। अथवा जिनतुम-
ल्यइ। तयस्सी तेजइ। आज्ञासार-
ज्ञान॰ युगप्रधा- नस वलिष्टइ
आगमसुधर वाक्या धर्म-
तीरउ। बमन
व॥ पधत्रिम। न निःकंप
संतोष वंतव। इ॥१० अपरि-
॰ अपरिश्रावी परनी गुफवात क-
हइ ही। आगलि न प्रकाशइ। सा-
म्या नंद मयः संद्रह शीलगुण-
शिष्या। तेहा या गण वस्त्र पात्रादिक
संग्रह करइ। अभिग्रह आपणि।

उं॥ ७ जह॰। जिम सुरगणा देवस-
मूह मांहि इंद्र श्रेष्ठ तम अनइ ग्रहम-
गलादिक गण नक्षत्र तारा अ-
श्विन्यादिक अनइ तारा नासमू-
ह मांहि जिम चंद्रमा॥ जिम प्रजा
लोक माहि नरेंद्र राउ॥ तिम
गच्छ माहि। गुरु आनं-
द दायक जाणि-
वउ॥ ८ बा। लु त्ति॰। य
जा लोक माहि। पाल नणि इ
राजा बालक लहुडउ इधिक
न पराभवइ नहीं। इणि उपम
लहुडइ गुरु मानिवउ। अथ-
वा जं समा॰ निश्चु निंदइ। म
हातमा पुरउ लणी इआगलि।

स्या महासती नइ पूज्या ॥१५ धाम्मा०
धर्म ध्रुव गण धरऊपनउ ॥ अन
रउ रूप वरथी तीर्थंकर देव तहे
उपदेसिउ ॥ उम घाज्झ लोकमा
हि प्रत्तुवाऊ रउ रूप इज
जइ । तउ लोका त्रम धर्म पणि
उ रूप डि डिप जाणिवउ
॥१६ संबा हण०॥
तदा कालि । बाणारसी
नगरी यइ । संब धनराय अउ
त्री अमृता तहरायनइ कन्या स
हम अधिकी रूपवंत हूंती ॥१७
तद वि० तथा पिसा तहनी राय
लक्ष्मी ऊ लुहंती विणसती धम्मी
तिणि रूपवंति कन्या महस्निनरा

उसंपयं संपत्तं प्रवचन सिद्धांत आचार्य धरीयइ ॥१२ अ पु० । भगवती चंदनबाला राजसुता । आ
र्या महासती पुष्पचूला कानसहअ रंद अज्ज गम्मइ संविग्नइ । तथा पि मान अहंकार न करइं ।

धारिज्जइ संपयं समयं ॥ १२ ॥ अणुगम्म भगवई रायसुअ अज्जा सहस्स वंदे
हि । तहवि न कारइ माणं पविअ वइ तं तहा तूणं ॥ १३ ॥ दिण दिक्खिअस्स
दमगस्स अभिमुहा अज्ज चंद । णा अज्जा । निवइ आसण गहणं ॥
सा विणउं सव्व अज्जाणं ॥ वरिस सइ दिक्खीआए अज्जाए
अज्ज दिक्खीओ साहू । अ भिगम णवंदणनमंसणाण
। विणएण सा उ जुज्जा ॥ १४ ॥ धा म्मा उ पुरिसप्पभवा उ पुरिसवरदे
सिउ उ पुरिस जिट्ठो । लोए विपहू उ पुरिसो । किं पुण लोगुत्तमे धम्मे ।
॥ १६ ॥ संवाहणस्स रन्नो तइया बाणारसीइ नयरीए कन्ना सहस्स महि
अं आसी किर रूववंतीण ॥ १७ ॥ तहविय सा रायसिरी उल्लुहंती न ताइ

धी । तथा उदर माहिं गर्भ तइ एक अंगवीरि संबाधन राया नइ कम्म सिरा ज्यलक्ष्मी राषी ॥१८॥ ॥

परि० न्हनि भ्रष्ट । तथा जिम गुणन
उमा हातम्य घइ तिम परी वइ जाण
इ ॥१३ दिण ० ॥ तद्दीहनउ दी
क्षित द्रमक भिक्षा चरजइ । आर्य
चंदना अभिमुख वसा मी ऊठी आ
सण नवा बइ ॥ रूम हातम्य प्र
तिइ विनइ । सवि ह्त आ
र्या महा । सती का
रिवउ ॥१४ । वरिस० । व
र्ष ३ नी दीक्षित आर्यि महाम
ती रुइ आ हाण उदीक्षउ महा
त्मा अभिगमन सामहाउ ऊईइ । वं
दनं वांदइ । वन्न वंदन का नम०
नमस्कार णाम ण म । इत्या
दिक विनय २ करी महा ॥

विपदे षीमं निमं काइ । उन्मा गि
पइतां षकां विषराषइ । जिम रा
जा राण पदा दमना लाकनइ ।
अंनाइं करता राषइ ॥१९ अप्पा
० आत्मा यथा स्थित स्वरूप
आत्मा इजि जाणइ । न
ल उ । अथ वा लाम
उ मन: परि णाम । अने
रउ वद मस्तन । जाणइ । धर्म
आत्मा सा क्षिक वइ आपणा पउं
जि पती जि वउ । आत्मा मी क्षिक
उ पेल व ध विविक उ इ कइ । तउ
तं करिस्य इ जिम आत्मा रइ आ

मंदिंगाण ० महिला: स्त्री । सबज घणी पवती मा क्षिकी समस्त घरनउ भार राय उराम० राउ उर

याता हि उय रह्हिएण णगण ताइया अंगवीरेण ॥ १८ ॥ महिला णसु
वउ आण वि मज्झा उइ हसमन्न घरस्सा ता रायउ रिस हि निज्जइ ॥
जाण विउ रिसा उहि ह्नि ह्वि ॥ १९ ॥ । किं परउ ण वउ जाणा वणाइं । व
रमप्पसक्खियं सुकयं इया । नरदचक्कवट्टी पसन्न चंदा य ॥
दिहंता ॥ २० ॥ विसाविज्जप्प माणा असंजम पए सुवट्ट
माणस्स । किं परिअ ज्झिअ विसं । विसंतमा रइ खउ तं ॥ २१ ॥ धम्मं
रक्खइ वासो । संकइ वास मणाहि ॥ रिक्खउ मिअ हं उम्मा गणए उं तं ॥
रक्खइ रायाउ णवउ व ॥ २२ ॥ अप्पा जाणइ अप्पा । जहहि उ अप्पसक्खि
उ धम्मा । अप्पा कार इ तं तह जह अप्पसुहावहं होइ ॥ २३ ॥ जं जं सम

गलि सुस्सावह जमी ॥२३ । जं जं स० । जीवजीण रम मइ जिम इंना विण रिण मि आवस्यइ । त

पेली जइ ॥ ज्ञाण वि० जीण इ धरि भरू
पन षी । पलोक विवहार उ मिठ वइ
॥२० किं परि ज० । पर अनराजा णमा
णासर हइ ज णा विश्व उ त किस्तु का उ
आत्मा सा क्षिक सुकृत वरन लउं । इ
हां नरतच क्रवर्त्ति अन इ प्रसन्न चं
द्र न उ द्रष्टांत जा णिव उ ॥२०
वासा वि०। विसदी
का रूप असंम जा । उइ अ
संक्रम पद प्रवर्त्ति । इ । किस्युं विष
पालटी विषापहारक ला हक्ति नमि
त्र रक्षित विसर वायत उ स्तंनमरइ
नमा रइ ॥२२ धम्मं ० विस धर्म्म नइ र
क्षा करइ । मइ ही क्षा ली धी उ इ म ।

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

जीवती ण इत्सम इत्युत्रा गुर० । मुत्रा । अथवा अशुभकर्मबंधः । अबंधन ॥२४॥ धम्मामए० । जह
किमइ भदिइं अदंका विइंधर्म्मा दायततउबा रूबलिक्र थिवरमदी मलगई मातत्र तापता उक्ती

यं जीवा आविमइ जणाजणला वण माति मिति मिममए सुहासुहं
बंधए कम्मं २४ धम्मामएण जंता ता नविसी उण्हवायविज्झडिउ सं
वसे रमणमि उ वाजबली तड ॥ किलिस्संता ॥२५॥ नियमइवि
गप्पीयचिंतिएण सबंदबुद्धि रइएण कत्तापारत्तहियं की
रइ युक्त अणुवएसेणं २६ पाणिवहवहयारी अविणी
यं गाढिउ निरवणामा साज ॥ जणस्स गरहिउ जाणविचया
णि कियंलहइ २७ पावणविस पुरिसा मणकुमारु वाकइउवसं
ति दहरवणपरिहाणी जं किरबावहिसकहियं २८ जइतालवस
त्तमड्सविमाण वासी थिपरिवडंति मुरा चिंतिजं तामसं संसा

वडंति वडइत्रा प अनरुंघी तवितं संसार मा हिकिस त्रमउसा त्वतऊ रुमिइपत लड्ड स्व
तच्चकांईनही ॥२७॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ता गविति निरुव० युरुरदइनन
मइ साधुजनकइगहिता एवं म
विधशिह लोकजनमाहि वचनी
यता लहइं ॥२७॥ पाव ण वि० ॥
घाहिलइउप । दमिकतला
इमत्तुरुघम सनक्रमा
रजिमहू कइान
चउलषइ ॥ दहनइवि
षइह्लणिरपरि दाणिजइडं
किइमिइंमा वइस नदमनक्र
मारचक्रवर्त्ति रिद्धइदेवपरिता
डंता ० कहिउं । जइतालव ० । ज
इ अनुत्तरविमाननादेवपरि

विश्वटित ॥ आहणिउव्यादत्तघक
उनिरसन आहारपषइ क्रुत्रानपा
मत ॥ एतलइ अदंका रिधर्मनथी ॥
रपनियगमइ ॥ निज आपणी मत
तिइं विकल्पितवी नवी सबंदास्व
न्नाउ विडंकाडु करइ का
त्रा० तिम्रा ॥ छपरत्न
हित किमकर इायुक्तना
उपादेशटाली ॥ म अनरउदित
उपायनथी । एतलइ स्वबुंदचारी
नालाइवउ ॥ युक्तनउवचनजिक
रतो जिला खुहइ ॥२८॥ पाणानिर
० स्तत्र निरूप कारीरुतघ अविनी

३

रुदत्तांन० किमते मोप्पलणियइ । सुचिर० घणाइकालि जइत्तवि इंउपआत्मिषइ आ वइतेह
लणी अनुत्तर विमाणना सुखनकहीइ । अनइऊ दसि रयमरणा आयइरुंतइ नवनरका दि

रसासयं कयरं २९ कइतं नत्रइ सुरकं सुचिरणविजस्स जरकमलि
अइ जंवमरणावसाणं । नवसंसाराणुबंधिंच ३० उवएसमसहस्सहि
वि । बाहिज्जंता नबुज्झइ कोइ जह बंभदत्तराया उदाइनिवमारउव्वे
व ३१ गयकंनवंचलाए अप्पवि । चत्ताइ रायलच्छीए जीवासक
म्मकलिमल । नरियत्तरा ताए डंतिअहे ३२ बुन्नणविजी
वाणं सुडुक्करायंति पावचरियाइं । लयवंजासा सामाएइ जाए सा
जइण मात ३३ पंडिवहिक्रणादा । म नियएसम्मं वणाय वडियाए
ता किंसिमिगावइए उप्पन्नांकवलंनाणं ३४ किंमक्कावुंडेज सरागध
म्ममिकोइ अकसाउ जा उणधरिउधणियं जबयणुजालीए समुणी ३५

की । मृगावतीराणी महासती रहइं रुमावतां केवलज्ञान ऊपनउं ॥३४॥ किंमक्का० किमत उइमक
ही मकीइं । हिवडां सरागधर्मवि त्तयि कुणकषायरहित जापणि जमहात्मा करवायकपजा ।
ता मैयइउपन्नामावडं । उव० परायाडधण रूपीया उवचन ततहंकाली ता जकया या ग्रिउ उन्ह

जिक कलिमलकचरा ॥ ता हअ
पणा आत्मा रहइ ॥ इरउसा
रकरी नरकिपडइं ॥ इरबु
त्रूणवि० । कितला इजीवनाप
पचरितबोलता सुडुक्कर । बो
लइनसकीय इ । एवातस
णी दृष्टांत स गवनया
साएप म त्तचोर
इश्रीवीरकु रइंकीध
उं । वलतउबी ॥ खतरदीध
उ सा आपति हिरूपद्या० एवा
तउ परि दृष्टांत कहिया एहस
णी पाप न करिवा ॥३३ पडि
वहि नियए । निजक आप ।
णा दास पडि वजी समप्ता प
कारिणी नीता ण पगे लागी घ

कउग्रीति तहमाहि फिरवउ
त्तदनउ । अतुबंध वहि जिक
रइ तहसुख किम कहीइ ॥३
० ॥ उवएस० । कोई बजलक
र्मी जीवा उपदेश तुम्हहुके
री बूझवी तउ ब्रकतव्रुकइ ॥ म
जिमुब्रह्म । दत्तराजा
अनइ उदाय
नृपकुमार कहिम
रगयकम० ॥ गजकर्णवि
त ॥ चपलराजलक्ष्मी । अप
रि० । तउ इन्दी । तजीव स
कर्म्मल० । आपणा कर्मरू
पिआ जिकलिमलकचरा
ता हआपणा कर्मरूपिआ

तिबुधादीसइ जिमतिचलातीव्र
त्रसुममा। छिक्रमरीनइदृष्टां
तिप्रतिबोधपामिउ॥३८ पुप्फि
य०फूलिइं। मधनणाइकरी।
फलिइंधननउपालागिकरी।
पिठ्ठ्थदिक्रमलनइघरिघइंदंडा
कुमारिशिषिइं रत्नाङ्कधसम
णाबुद्धा०नि। रंतरविसदा
॥३७॥ णारहित
तिमकिमइ सदा॥जिम
आफलक्कडा।क वलनपामिउ
इति॥३९॥ अहो।रम०।सुलासर
सआदारनइविषइ।सुखनइ
विषइ।रम्यआवासानइविषइ
।उपाश्रयरूपानइविषइ।कान
नवननइविषइसा हाण०साधुम
हातमानइअधिकारनही॥पही

वइ।तसराग धर्मयमादिसुनिउत्तममहात्माकहीइ॥३५ कडुय०।कडूयाकाषायरूपवृक्ष॥
॥तेहनाफूलनइफलबिन्हइविरसजाणिवां॥कषायनइउदयिजिवारइविरूवंध्यायइ॥त

कडूयकसायतरूणं पुप्फंचफलंचदाविविरसाइ पुप्फणझाइकु।
वीउ फलेणपावंसमायरइ ॥३६॥ संतविकाविउझइ कोइअसंतवि
अहिलसइलाए वयइपरपढव णवि पत्नावादहूणउदइंड्ढे ॥३७॥
दीसंतिपरमघोराविधि पवरध॥ म्मफलावपडिबुद्धा जहासावि
लाइपुत्ता पडिबुद्धासुसुम णाए ॥३८॥ पुप्फियफलिएत
हपिउघरंमि तण्हाबुहासमणुब द्धा ढंढणतहाविसहा विसहा
जहसफलयाजाया ॥३९॥ आहारा सुसुहसुय रम्मावसादसुकाा
णणसंच साहूणनाहिगारा अहिगाराधम्मकज्जेसु ॥४०॥ साहूकंता
रमहानएसु अविजणवणविसुईअंमि अवितमसरीरपीडं सहंतिनल

ऊणपि।।साहनकरिउं।साधुनइअधिकारधर्मकार्यनिउ॥४०साहूकं०।कांतारअटवीमा।
हानयराऊतियहादिकसूतेनइसुदसुहितनजनपदादर्विारहितानलिइतिमतिहांइनलिइ।
अवितं०वशितसयरपीडासूपवनसदइउणिविदरुअसुष्मानआहारअन्नउदकपात्रादि।

कूलजाणिवउ।अनइजिवार
इ।क्रोधधमधमतउधिकउइ।
वचिनाबालइ।पहारमल्हइ।
पापसमाचरइ॥तकषायवृक्ष
तणउंफलजाणिवउं॥३६॥स
तवि०॥काईलागपतजीवसं
तविद्यातांइलो गपरिहरइ।
।काइवकूल कर्मआणा
ताइंलाग अहिल
सइ।अलिल षइ।वयइ
।कोईएकपरघ। त्पयआनरा
ह्वांडतउदेषीनइच्चयइ।नाणीन्त्य
जइजिमपनवडूंवस्वाभिदेषी
नंइ।लागसुखवंछा॥३७दीस
ति०परमघोर।गाढा।रोइजीवा
।घवर०।प्रधान ४ वीतरागना
धर्मवचननइ पञ्चाविइं

तथकादेवतासेवतारहता॥४४
दावा०।देवनारकीकीडापतंग
प्रमुखतिर्यंचघाइ॥कतीवाश
।पुड्डीवसुनिध घाइ।रूव०रू
पवंतघाइ॥ विरू०कुरू
पघाइ।सुषला गीघाइ।डरव
लागीघाइ॥ भपराउग्र
०।राजा घाइ।ज
मकल्लिघा॥ रीघाइ।स्वा
णाकवडलव ७इ।वदवंन
बाह्मणघा॥ इ।स्वामी
घाइदासघाइ। पूज्यउपाधम
यादिकघायउर्जननियघाइ
।अधनघाइलक्ष्मीवंतघाइ॥४
हनविद्याका०॥इहां नियमनि
श्चयनही।आणाइजनमिजि

कनलियइ॥४२जं।तदिन यत्रयंणीकरीखरकसूरिनाशिष्यपीलया घकाजणानही।वि
इ०॥विनपरमार्थजाणाउजोदा।तपंडिततबबुद्धिनाधणीखमंतिमांसहइ।महात्माइं॥

हंतियविरूहंध१ जंतदिपीलियाविज खंदगसीसानचेवपरिकुविया
।वियइपरमबसारा॥ खमंतिजपंडियाजंति॥४२ जिणवयणसुइस।
कन्ना अवगइसंसारघोरपया ला बालाणखमंतिजइ जयतिकिं
इब्बआवरं॥४३ नकुलेइब्बपहा। णं हरिएसबलस्सकिंकुलंआसि
।आकंपियातवेणं सुरावि जंपज्जुवासंति॥४४ देवानेरइ
उत्तिअ कीडपयंगुत्तिमाणुसा। विसा रूवस्सीअविरूवा सुह
भागीडरकभागीय॥४५ राउत्तियद। मगुत्तिय एसखपागुत्तिएसवयविक्र
।सामीदासापूज्जा खलुत्तिअधाणा अंधणवइत्ति॥४६ नविइत्थकोइनिय
मा। सकम्मविणिविट्ठसरिसकयचिठ्ठाअन्नन्नरूववासा॥ नडुव्वपरिअत्त

सुंकर्मविणविष्ठनीपजावववउं॥तदसरीपुचघानविशनवनावरूपावषधरउ।नटावानीप
वि।संसारिफिरइ॥—॥—॥—॥— जणपजीव॥

मक्कमाझाईयइ॥४२जिणव
०।जिनवचनआगमनणीश्र
तिनइविषइसकर्णअनइआ
वगतजाणिउ संसीरनउघो
रापयाला विवारबइ
जाहा।तियति महात्माबाल
अज्ञानना। कीधंइष्ट
ष्टितखम इतइदु
किसुंआश्च रछिकइ
जि॥४३नकुलं ०।एहांधर्म
नइविषइअ धिकारअ
लप्रधानकाइ॥ नहीहरिके
सबलमहात्मानउंकिहउंकु
लहूंतउ।जेहरिकेसबलसु
निनइतपिआकंपिता।आवजि

॥४७॥ कोडीसएण संवत्सर ... कन्या करी श्री वसुदेव ...
पितुन्नातश्री वयरसामिल्लो जिनगा ॥ साधु ... ॥४८॥ अंतेउर० अत.

एजीवो ४७ कोडीसए छिंधणसंवयस्स गुणसमहियाइं कन्नाइं नविवु
ज्झावयरंसि आलोनयाएमसाइणं ४८ अंतेउरवरबलवाहणछि
वरसिरिघरक्खित्तुणिवसहा का मच्छिवज्जविछद्दि छिंदिज्जंतावनडे
ति ४९ बंधोलत्तवसणं आया। सकिलेसनयविवागय मरण
धम्मसंसा अरईअडाउस। होइ ५० दासमयसुलजाले
उवरिमिविवज्जियंजइवितो आ। वेवइमिअणवे कोमनिरवेतवं
चरंसि ५१ वहबंधणमारणासद्द णाउ काउपरिग्गहेनहि तेजइपा
रिग्गहच्चियजइधम्मातानणुपवेसो ५२ किंआसिनंदिसेणस्स कुल
जंद रिकुलस्स विउलस्स आसीपियामहोसुचरिएण वसुदेवनामु

न्या नाधकार ... ॥ एतला ...
... धर्मनिंदा ...
॥ ...

वरिचिकदी ... विउल ... पितामह ... वसुदेव ... ॥ पञ्च विज्जा० । विद्याधरी ...
जिमा ... राजकुमारी ... तदा ... वसुदेव ...

त्ति ५३ विज्जाहरीहिं सहरिसं नरिंदडुहियाहिं अहमहंतीहिं जंपत्थिज्जा
इतइया वसुदेवो तं तवस्स फलं ५४ सपरक्कमराउलवाइएण सीसप
लविपनियए गयसुकुमालेणख मा तहाकयाजहसिवंपत्तो ५५
रायकुलेसुविजाया नीयाजर। मरणगळवसइणं साहुसंद
तिसद्वं नीयाणविपेसाणमा। णं ५६ पणमंतियउव्वयरं कु
लयाननमंति अकुलयाउरिसा। पणउडविंइहजइजणस्स जह
चक्कवट्टिमुणी ५७ जहचक्कवट्टिसा। हू सामाइयसाजणनिरूवयारे त
णिडनाचवक्कविन्न पणऊवज्जअन्नाणगुणेण ५८ तधन्नातेसाहू तेसिन
मो जे अकज्जपडिविरया धीरावयमसिधारं चरंतिजहथूलिभद्दमुणी

नपांदिश ... ॥ ५८ ॥ तधन्ना० । ... साधु ... नमस्कार ...
... धीरव्रत ...
॥५९॥

स्त्रीजनतणाइ।संबूतिकारिमंस।
थिउसयात्ता बिजंपरितउगिन
।महात्मानकहिइ।चारित्रनाउ
णामविना।अनइयहस्तमकह
इ।वयणाणी॥६२जइवाणी०।ज
इकतीबारक। उस्सुमाकरइ
म्मीनीव्रतध ।री।मुंडीलुं
चित।।उ। षवाक
लोपहिरइ। तणसीत
पकरइ।इस्य उघकउजइ
॥अवहेलप्रार्थइ ।किमारइबस्य
।जइ।तदुमअरइनगमइ॥६३
।तापहियं।तायुणिअंतउंसुणि
उं।तउजाणिउ।प्रमाणउजआत्मा
चितीउययास्वरूपउलषीउप्रमाण
।आदं०।जःसीलनामंसर्गतउपि
ज्ञियउकमित्रेपेरिअस्त्रीजनादि

पए॥विसया०।लोकमाहिजाज्ञादिक।पंचप्रकारिविषयानदातधर्मस्तपीयासयरनइछेदइ।चिक्क
दिसिषजनीवाडिदेषी।वइ।तहस्त्रणीषजनापोजरामरीषाकहीइ।तहस्त्रणीसीहनीपरिपंज

पए विसयासियरमिव लोए असिपंजरंतितिरिकं मि सीहावपंजरगया वसं
तितवपंजरमाह ६० जाकुणइ अपमाणं गुरुवयणं नयलएइ उवएसं सा
पच्छातहसोअइ उवकोसघरजह तवस्सी ६१ जिहच्चयपच्चयलरमगुच्छ
हणं ववसिअस्सअच्चंतं जुवइजण संवइयरा जइकणंउलयंतसुह
६२ जइठाणीजइमोणी जइ मुंडीवक्कलीतवस्सीवा पत्थं
ताअअबंभं बंभाविनारावएमज्झ ६३ तापढियं तायुणिअं तासु
णिअंताअचेइअप्पा आवडियपिल्लि यामंतिउवि जइनकुणइअकज्जं ६४
पागडियसव्वसल्लो गुरुपामूलेमिलइइमाजपयं अविसुद्धस्सनवइइ गुण
।सेढीतित्तियाठाइ ६५ जइछकुरइकारगंति नाणिउजहहिउसाह्व ताकी

कआमंत्रिउघकनजइ।अकार्यनकरइ॥६४पागडिय०।पर्वट्टितसर्वशल्यगुरुपादमूलिसाधुपदल
हइ।गितइ।साधपणुं।वलीलहइ।अविसुद्ध०।अप्रकटितशल्यहइयगुणश्रेणिनवाधइ।ततली।जिरह
इ।६५जइछकरण०जइस्थूलिभद्रआवतांयरिछकरणाइकारककहितं।यथा।सिथूलमाधुषकउतत्रकोइ

रगताधकावसइ।जिमसीहविज
दिसिपजनीवाडिदेषीसदरहित
पंजरइरहइ।तिमसाधुस्त्रीयादि
कविषयअसिपंजरासरीषाजा।
णीनइतपरूपपांजरामाहिरह
इ॥६०जाकुण ६०जयकवच
नअप्रमाण। करइ।वित्रा
षापदा। उ।नलि
इ।तपछइ। तिमपश्चा।
तापधरइजिम उपाकोइप।
तस्यानीबहिरा ननइघरितन
पस्वीमहात्मा॥६१जिहवय०।जो
इवतपाचमहाव्रततहरूपपर्व
तहनउलारकहीइ।तहउंकण
डिवउं।विवसी ६ यणउद्यमपर
धकाअर्त्यंतिहिं जावजीवाप
वइतिणिसीहगुफावासीयुवति०।

णीपाइस्थूलिभद्रं।विवादवच
नवूढावडिए।तिहना।दाषलग
डं।कलिइ।गणिइ।संघिइ।ज
वाहिरिक्तीधउ।तहइंकि।
रिसावइंढवाला।किंदेवनीस
नामाहिअवक। आनषी॥७०
जइताए॥य ।यदिता
वतजन। लोक
व्यवहारावा। जितिलो
कनिंद्या।अकार्य यचिायीदि
क।आनरउ।काईएकन्याचरइ
।अनउजउ।अनरा उकीध
उं।अकार्यविकद्धइसरा समहि
।बोलइ।तपरनइव्यासनिउरिक
यउकजइ॥७१स्थूलिभद्रविक०।स्थूल

आर्यसंभूतविजयगुरुनशिष्यनवमिउं।पतलइईर्ष्यानिकरिवी॥६६जइता०।जइतांकर्मनइं।
उपशमिकरीजन।अनइस्तुंदरसलउ।इसलो।कवीलीयइप्रसंसांप्रामइ।धर्म०इतरअनाध

सअघसंन्नय विजयमीसहिनविरवमिअं ६६ जइतावसव्वउंसुंदरु
त्ति कम्माणउवसमेणजइ धम्मंवियाणमाणेण इयरा किंमच्छरेवहइ
६७ अइसुद्दिउत्तियुणसमिउत्ति जानसहइजइपसंसं सोपरिहा
इपरलाव जहामहापीढपीढरि सी ६८ परपरिवायंगिह्नइ अ
ट्ठमइविरहणाण सयारमइ जइयपरसिरीए सकसाउ
रकिंउनिवं ६९ विगहविवाय रुइणा कुलगणसंघणबाहि
रिकयस्स नविकिरदेवलोए द वसुमईस्सअवगासो ७० जइता
जणसंववहार वज्जियमकज्जमायरइअन्नो जोतं पुणोविकंषइ पर
स्सवसणेणसाडहिउ ७१ सुहविकुद्धसमाणं पावरकंतिसिन्नयंसम

नलीपरिउद्यमकरताधका श्रमणमहात्मारहइं।एं।तबोलेकरीरीउवालुंकरइं।तके।
हा।आपणीप्रशंसा।परनीनिंदारजिहारस।तडीयकरीइवउसुंफरासहीजइवमिनक

मनाजाणप्रकाममत्सरकांइधर
इं॥६७अइसुहिउत्तिण।अतिसु
स्थितस्त्रोनरगुणकरी।तया
दृश्यकरणादिकिगुणकरीस
मुदित।इतिइसीमहात्मानीस
चीप्रसंसाजन सहइ।तप
रलाकिप। रिहाएप
वमहा। पीठ।
नीपरिहीन। नघाइ॥
६८परए।परन उपरिवाद।
करइं।अष्टमदताणविरत्नण
।वचनविस्ताररिवइंसदारम
।परलक्ष्मीदेषीदाफइं।सक
०।कषायसहितसदाउरकीउ
जइ॥६९विगहए।विग्रहन।

यणादंतां स्वमइ। रीसावइ। न
णिउ। सारणवारणादंता। अ
णुसयं पश्चात्ता पछियइ धर
इ। नय। न।   हीं किस
इकाजि   गुरुन
नइ आलं।   किंउ। ते शि
ष्य नहीं॥ उविल्ल   णण। वप
नइ धकट   करइ
करी लज्जावि।   वंचा सूअ०।
दावतुं इम।   । चितिवइं
करी परा०   लवूं
करिउं। इइ   न०अ० दुष्ट
शिरधा वचन।   नंबा लिउं
उक०० दृष्टकर्कश वचन ते बोलि
उं॥ ७७॥ माणं०। मानइं जादिक

रइ॥ धर्मपंचमा कषाया॥ ७२॥ परना अपवाद बोलिवनी जेहनी मति छइ। ते जे दोषवच
निकरी परनइ दूषइ। ते ते दोष ते छिद्र जोवणहार मइं इणि कारणि परपरवादी अपछ। अइ

णं। अप्पच्छंदईयरनिंदा। जिब्भोवत्थाकसायाय ७२ परपरिवायमईउ दूस
इवयणेहिं जेहिं जेहिं परं। तातपावइदोसे। परपरिवाई इअअपिच्छो। ७३
थद्धा छिद्दप्पेही। अवन्नवाई सयंमई। चवला। वंका कोहणसीला। सी
सा उव्वेअगा गुरुणो। ७४ जस्स गुरुंमि न भत्ती न य बहुमाणो न ग
उरवं न भयं। न वि लज्जा न वि नेहो। गुरुकुलवासेण किं
तस्स। ७५ रूसइ चोइज्जंतो वहइ हियएण अणुसयं भणिओ न
य कम्हि करणिज्जे गुरुस्स आलो न सो सीसो। ७६ उव्विल्लण सूअण
परिभवेहिं। अइभणियदुट्ठभणिएहिं। सत्ताहिया सुविहिया। नावव भिं
दंति मुहरागं। ७७ माणंसिणो वि अवमाणवंचणा। ते परस्स न करंति सुहदु

नीकीधी रजाभ रजी दरकइं ते तिसा मदात्मा। परफइ। अवमानवंचन परनइ नव नइ विषइ ते।
शिवउ। न करइ। सुख न मुखइ। रवनं ते मिवउं। उपपणी। वदना थइ छइ जो हरइ। नथी

ॐ
उपसुखः॥ ७३॥ धा हिइ छिद्राण॥ शि
ष्य गर्व अहंकारी॥ छिद्रप्रेक्षी म
हिद्र जोइ। अवर्णवाद बोलइ।
स्वयं मति। कास्वभावी। कृइ।
अनइ चपलवांकउं। क्रोध नउ शी
लमुं दा। राम।   लाइ सा शिष्य
गुरुइंउ।   दगनांक
राद्या   रजा
णिवा। ७४   जस्स०। जेह
शिष्यइं गुरु   प्रतिइं लगति
नहीं। बहुमान नहीं। गौरव न
हीं गुरु नहीं गुरु न उ भय नहीं
। मान न हीं लाज न हीं। तदन
इ गुरुकुलवा   सिकिसंनु
कीजइ। ७५॥ ७ रूसइ०। चो

वारपाणीमादिधाई जिम तुप
णि अज्ञानतप लाणी अल्पफ
ल जइ॥ ८१ छजीवण। छइ जीव
निकायना वधक। ते ते णवली
। हिंसक शास्त्र उपदिसइं। ते
हवा ललतपस्वी   नउ घणउई
तप क्लेश   अल्पफल।
जाणिव   उ॥ ८२
परियच्छं०।   सर्वजीवा
जीवादिक य।   यथास्थित अ
वितथ। असंदिग्ध। परियंछंति
परिछइ। जाणइं उ। जिनवच
नविधिना जाण बहुयघणाई।
सामान्य लोकना वरू०घणा
इ दुर्वचन सां सहइ। ८३ जो०जस्स

उदधि समुद्र तणी परि गंभीर उद्धत नहीं॥ अथवा आपणउं सुख दुख तेह कारणि जाणइ नहीं क
हइ॥ ७८ मेउया। मृदु सुकमाल। निहुउ नि स्वस्थ स्वभाव निर्व्यापार हास्य सामान्य॥ इद्दव

क्खुग्गिरणत्थं। साहू उअहिव्व गंभीरा। ७८ मउया निहुयसहावा। हासदवविव
ज्जिया विगहमुक्का। असमंजसमइबहुयं। न भणंति अपुच्छिया साहू। ७९ मउरं
निउणं थोवं। कज्जावडियं अगव्वियम तुच्छं। पुव्विंमइसंकलीअं। भणंति जं धम्म
संजुत्तं। ८० सट्ठिं वाससहस्सा ति। मत्तखुत्तोदएण धोएण। अणुचिन्नं।
तामलिणा। अन्नाणतवुत्ति अप्प फला। ८१ छज्जीवकायवहगा।
हिंसगसत्थाइं उवइसंति पुणो। सुबहुंपि तवकिलेसो। बालतवस्सी
णं अप्पफला। ८२ परियच्छंति य सव्वं। जहट्ठियं अवितहं असंदिद्धं। तो जिण
वयणविहिन्नू। सहंति बहुयस्स बहुयाइं। ८३ जो जस्स वट्टइ हियए सो तं
ठावेइ सुंदरसहावं। वग्घी छावं जणणी भद्दं सोमं च मन्नेइ। ८४ मणिकणगरय

सत्व ८०। जो जेहनइ हियइ वसइ। ते तेहनइ सुंदर स्वभाव थापइ। वाघिणि माता। बाघ बे
टा बाघरहइ। भद्रं सुखावह सौम्य शीतल। आपणं मानइ॥ ८४ मणि। मणि चंद्रकांतादिक कनक सु

अनइ इवपरिहास त्तीणइ। वि
वर्जित। विगह०। विकथा। राज
कथादिक। तेह करी रहित मु
क्या। इसा साधु असंबध। घाडूइ
वचन न बोलइ। अइबहुयं। सं
बंध रहुई वचन   घणुं। न बोलइ
अपूछ्या   का॥ ७९
मजरं०म   धुरंनि
उणं॥ थोडिं   लांकाजि
ऊपनइ गर्व रहि   तितुच्छ
गंभीर। पूर्व पहिलउं मति संक
लित बुद्धिसुं आलोची नइ जं धर्म
संयुक्त ते बोलइ॥ ८०॥ सट्ठिं०। ता
मलि तपस्वी यइं साठि सहस्र व
र्ष लगी छइ वनइ पारणाइ इकवीस

वंतीसुकमालमहारिसिनंच
रित्रडुक्कर।।आनरकाइन।।
दीक्षीसकरंथ।संसलताईस
यरारामीचक्कक्कंरउकरइ
।रीइलाणकिमअप्पाविणअ
प्पाउमयरुइ मत्यजिंवआ
वंतीसुकु। मालिइ।
अद्वेरयं ।८४।८
याश्चर्यीमा दउंजाणि
वंतीउद्दश८०।। सुविहितम
हामाउवइरक्तहिंसइरनघ
राजाहतममताहिताआनर
उजीवाआनरउमथरा।इमउ
वीतवइ।धर्मनइकारणिसय
रुवीइइ।।८५णादिएजीवए

वर्षसत्रकंबलादिकधणाइच्या।पदा।करीसंग्रहसंधरत्नरिइस्त्रिया।बतइश्रीआलिसइविगतका
मत्यक्तसंसारसुखत्यक्तकिल्लश।अन्नो०माहरस्वल्ली।आनरउ।।गाऊरत्नशइमवीतवइ।।८५

णाधणश्चरियंमि उववण्णंमिमालिनद्दावि अन्नोकिंरिमञ्जविसामिझत्ति उ
ववियायकामा ८५ नकरंतिजंतवमेजमेव तंत्रल्पाणिपायाणं उरि
सासमउरिसाणं अवस्माणमन्नण सुचिंति ८६ खुंदरसुक्कमालसुहो
इयण विविदद्धितवधिमामद्धिं ।तहामासविंत्रअप्पा जहनविन
त्रंसलवाणवि ८७ डुक्करसुहो मकरं अवंतिसुकुमालमहि
रिसीचरियं अप्पाविनामतहक्का। इति आब्बरयंणयं ८८ अइद्दसा
वीरघरा अन्नाजीवासरीरमन्नंतिध। मम्मकाराणसुविद्दिया सरीरंपि
बउंति ८९ एगदिवसंपिजीवा पव्वज्जमुवागउअणन्नमाणा जइविनपाव
इमुक्खं अवस्मावमाणिउदोइ ९० सीसावदणमिरंमिवहिए।निग्गया।

कदिवसअन्यानमनएकार्थिवित्रकुउ।प्रवज्यापाश्चकउयद्यपीकालादाषिइ।करीमारु
नणामइ।ताइअवउयनिश्वयावेनिकदेवनीपजइ।।९०सीमाप।मर्वउीर्षविद्दिकरी।मस्तकिवा।

नकन।जडीवतपसंथमनक
रइ।तेम्सूत्रल्या।एकउतेलादि
पणिहाथपाथए।।इसासमउ
रुषसमाना।वइव।उरुषानइए
रिपसन्नणउ।अवश्यनिश्चइंदा
मणणउण।मि। सिइ।।८६सुंद
रण।।सुदरश। रमसुक
मालदेहो। दनश्च
रवाचितसु खयोग।।
इमिइस्त्रीत्रा।। लिसउवित
दिएनवाशवइव्अवमसामसरूप
णादिकतपात।द्कुकरी।।आप
उदइतिम।मामवित्र।जिमआ
पाइघरिमाग्रसुखरुणहीनउ
लरवइ।।८७।। ८ डुक्कर०।अ

ष्याइ।इव।।ईमउजिनणिवउं।।
कार्यंयुक्ता।उक्तसुकृजिजाण
इ।हिमासणानदी।।८९कार
ण।।कारणनेउजाण।कदा।
चित।गुरुकागउाश्वतकइत्र
शिष्यअंतवचन तिमईजिम।
इहिवस।नवि ०तिहास
हीकांईक गणजि
बइ।उयरुइ मस्राइस
उइसजाणिवउं।।८८।।जाणि
पाजउमनउंवो।लिउंत्रिहाव
चनतावइ।मनःसुखिहंपहिव
जइ।तावचनऊपधर्मापिशिक्ष
णावइयुणकारकजइ।।८९दी
अद्भयत्नप।अउवन्तीकअउरु

दिउ।धकइमतायेनगावततणीआघिनीमरी।पणितमनिइकरीआपिउंनदी।।८९जाचंदाणपा
।एकजाणंदनिकरी।।शदाविलेपनकरइ।आनरउएकवंमोलउलईतावइएकजाणस्तवइ।प

णिअद्दीणि।मंथज्जासमगावउ नयमामणमाविपरिक्कवित्र ८१।जावंद।
णणवाजं आलिंपइवासणावतवेइ संघुणइजावनिंदइ महरिसिणाएत।
व्वसमत्तावा मीहगिरिसुसीसा णं।नदंगुरुवयणसद्दंताणं।वइरो
किरदाहीवायणत्ति।नविकावि। अंवयणं ८३ मिणागाणसंगुली।
हिं गणहिंवादतवक्कलाइं। समइवतिलाणिरूणं कद्यंत
नएवजाणंति काणणविक्का। याइ।सयंकायंवयंतिआयरिया।
तंतहसद्दहियव्वं।नवियव्वकारणं। णतहिं ८५ जागिद्दइगुरुवयणं न
न्नंतंतावउविसुद्दमाणा उंसहमिवपिज्जंत तंतस्सुहावहदोइ ८६ अणुय।
त्तगाविणीयावजखमानिच्चनत्तिमंताय गुरुऊलवासीअमुइधन्नासीसाइह

लविनीतकाजकरइअनइवजघणीक्षमाकरइ।।रागनदी।गुरुविषइंनक्तिमंतगुरुकुलवा
।मिवसइ।गंधनिणाश्विइ।गुरुरहइंमल्हइनदी।इसाशिष्य ५३५३३ सुसीलधन्य।।८७

कजाणस्तवइएकनिदइपणिम
हर्षिमविरुंधतिईसमतावम
सवितऋ।।८१मीहगिणा।श्री
सिंहगिरिसुरिनाशिष्यरहइ
।गुरुवचनसदहतामंका।ना
हकल्याणज। वयरमाहेला
उपहइवा। वनाहिस
इ।नवि ०।इमि
उयरुनउ। वचनात।
हविचारणउ। नदीकाणवि
उनदी।।८८मणिगाण।गाण
सत्रपविग्रेपञाउलीकरी।
मविताअथवा।मतेहागाणतं
दोभतवदनमंडलिगाणि।जइ
गुरुकिवारइंमकहइ।नउति

तपा। बिलानवनांकी धावुाप
ताद्यप्ररियानविथसता ०
नविकजीवइदालाकिस्त्री
साजनज्ञानादिलस्मीतुप
चा। अनइपरलोकिाजाह्न
रसइकल्पाणा बइ॥ सुगु
अघवामा। स्रातशि
ष्यगुरु। दईदे
वतणीवशि। सवइ।
आराधइ॥१०१ बजुस्वरम
आचार्यगुरुबजुघणंसुरन
नाशातसदसलरूपतलइ
निरनरसारता। नादायका
अनइडरकजमजरामरण
गर्लवासा। दिक्ष। तहनांस्थत्य
त्रा

जीवंतस्समा। सयुणाशिष्यरूइजीवतांधकांइदालाकिजसज्जइ। मृयांश्वविइ। कीतिपरनविध
म्माधर्मफलनागवइ॥ अनइनिगुणशिष्यरूइ। अजीवंअकीर्त्ति। अधर्मतुंफल॥ ९८ बुद्धा०।
सुसीला ९७ जीवंतस्सइह जासा किन्नी अमयस्स परत्तविधम्मा सगुणस्स
यनिगुणस्सय अयसोअकिन्ती अहम्माय ॥ ९८ बुहाबासविविअ अइव
गिलाणं गुरुंपरिलवंति दत्तद्वधम्म वीमंसणणकम्मिकियं तंपि ॥ आ
यरियत्तिरागा कस्सस्तुन रकत्ते महरिसीसरिसा अविजीविअव
वसियं नाचवयुरुपरिलावा सहितं ॥ ९० उज्ज्विवाइयाउ
रकाढदि मिरिलायणं लविथमत्ता गुरुमागामसिलद्दा दवयमिव
पज्जवामंति १ वजुस्वरकसयसहम्मा णं दायगामायगाउदसयाणं आ
यरियाऊउमयं कमिपरसीयतदादिक्ष २ नरयगइगमणपडिहव्वएकए
तहप्पपमिणारन्ना अमरविमाणंपत्तं तं आयरियप्पनावेण ३ धम्ममइएहि
घक॥ मा चक। मल्लवणाहार। पवानकूरप्रकट। जाणिवी। कशिकुमारस्वरूअनइप्रदेशी
उनइदतिहृष्टांतजाणिवउं॥ २ नरयगण। प्ररादशीराजा। इनरगकगतिइंजावानइपडि। यगा
कर्मकीधइहंतइं। ऊं प्रादशीराऊ। इ अमरविमाणपामिउं। तआचार्यनउप्रसादजाणिवउं॥

हधावासिउस्सरदइं अथविगि
लाणउस्सरदइं। रागयस्तयुरू
रूइ। पराल्वइं। जशिष्यदन्न
तणीपरिइं धर्मनी विमासणइ
। आस्ट्रधर्मी तरुउ। शिघत
रूगतिऊइ। ए दसुजाणिव
उं॥ ९९ आयरिम
यसत्रि पस्तुन
ढातमहा। रिषिना
सरीखुं। आचा र्यनइविषइ
नकिरागऊणनइकहीइ
। जीणइआपणउंजीवनच
वसि। बांडिउं। वृणीयुरून
उपरालवन ९ सदित्त॥१०
०॥ उन्नढि ०॥ सुराक

णानउ। महासमुद्रहतउ॥ इकाल
नण। करुणावच्चनिदयासास
याद्य। डिवइं। अनइरूत्तणरवड
नादिकनइगावइ। विला। अन
हवीना। आनकष्टंगारसावार
यण। अनहवाझा दिकननणअ
नइजीवसयान लेवावतले
स विजंअना ऊलप्रति
रू लाउप साधुस
रूपसा धुसा। हात्मा ब
रिमरूं। प्रांणह्य उइउणिनी
यमनेविराधय॥ ३ अप्पहिय।
आत्महितं तपसंयमआचरनउ
हंतउ। अन मादना। करतउरू
तउ। खदगति। पामिउ। जिमातर
घकाशिक्षा। सिंहानदीथउ। अनइ
मृगालइ। अनु मादना। कीथी

धम्ममएहि०। धर्ममयनिरवद्यवचन। अतिहिंसुंदरा। निरदोषकारणशिष्यनउंमन। आल्हाद
ऊपजातउंगुरुवायणादिइं। पुणिवलिवचनकिमाछइं। कारणवीहरूशिष्यतुंजाणिवउं॥ गुण
अइस्रुंदरेहिं कारणगुणोवणीएहिं पह्लायंतो यमणं सीसं चोएइ आय
रिउ ४ जीअंकाऊणपणं उरमित्तिदत्तस्स कालिअज्जेण अवियसरीरंचत्तं
नयनणिअमहम्मसंजुत्तं ५ कूउ पागउमकदाता उदहियांबादिला
तसुवहणइ उदहनगवउविसा ला उरमरणमादाअदाआसि
कारुन्नकन्नसिंगारनावनयजी वियंतकराणहिं साहुअविया
मरंती नयनयंतिथम्मविराहंति ६ अप्पहिअमायरंता अणुमोयंता
यसुगाथंलहइ रहकारदाणअणु मोयणामिगा उदयबलदेवा ७
उतंकयंउरापूराणए अइउकरंचिरंकालं उश्तंदयावराइह करंतितास
फलयंउतं कारसनीयावारसे सुइयरंचिरंकालं उश्तंदयावराइह क
अनइबलदेविऊपितंपकीअत्रिह्मिमरीदेवलोकिपाहता॥ पजांतंकयंप। जंतेणीपनपइ
तिउक्करचिरकाललगी। मरा। आगइ॥ पराणि। पुनि। कीधुउइ तेपदयारप्रकउजिनआमनि
करइ तेसफलहोइ। मा। क्षिफलादानादायतः॥ एकारण। सानादिककामकिरी॥ नियतवा
मीपकरस्थानकिजइ रदीय ॥ अरुचितउयमकरीयज्ञकरिवउ। जिमउद्यमकरतउ तसंगरववरि

तदहिशिष्यनइकाजिज्ञाना
दिकेजामिती। णिकरणिउपनी
तबोल्युंवचनछइ। मावइजिव
वनजिउकुिपुजावइ॥ कूउ
उंगमतउइ। नहोलइ। उस्पतंत
वजाणिवउं॥ ४ जीअकाण
रमणीनगरी दत्तराजा
आगलि श्रीका
लिकाचार्य वरिसयर
अाप्राणछांडि उं। जीवतव्य
ताणकीधुउं। अधर्मसंयुक्त।
असत्यनबालिउ॥ ५ कूउय
०। स्फुटप्रकटयथा स्थित॥
आगमाक्षा। आणाकहितउथ
कउ। बाधिलानहणइ। जिम
भगवंतविसालश्री महावीर
मरीचिता। नवप्रकउजरामर

ऊइ। जिमवा रित्त रिधिइं। इं अद्यो तरा। ग्रहसिउ॥ इसउ। वा० सुव तीजनस्त्रीजन तणा उस ग्रा तनणी ए अकालि नपा श्वइं आ विवउं॥ ॥ वीसंतण। विस्वास नदी०। सने दारति चितक रकामकथाप बंधसयण। स्त्रीजनरूप रिसवाग। अनइ। घरनउसा रआलोच॥ उनिरइंतप। शीलवता दि कापडइ॥१४ जाइस०॥ ज्याति षप्रिसिद्धनिमित्तदोरा आस्त्रा॥ दिक। अक्षरमाई प्रमुख पामा किवली प्रमुख जाइय॥ कांके उकस्वपना दिकजाई निरूद्द इ॥ एवात इमऊसी॥ सूत्रकमी अ॥

र्यादवतांमा निध्य वक्रत्या॥१०गंतनीया वासी०। निदकार०ण नियतवास॥ एकस्थान किवसइ। घरस्था वास। ग्ररण नवनइ विषइ जइ मदोसा मम वकरिस्य इतउ। कलिलणी०

उजमिणजइयव्वं जइतं संगमाघरा सपाडि दिरातया आसि १० गंतनी अ
वासी घरसरणाईसु जइ समत्तं पिकहंत पडिहंति कलिकलुस रासदाम
णा आवा० ११ अविकत्तिऊणजीवे कत्तो घरसरणगुत्तिसंठप्पं अवि
कत्तिया य तं तह पडिया असंज याण पहे १२ थोवा वि गिहिपसं
गोजइणो सुद्धस्स पंकमावहइ जह सा वारत्तरिसी हसि
उ पज्जोयनरवइणा १३ सज्झावो वीसंभो नेहो रइ वइयरो जुवइ जण
सयणघरसंपसारो तवसील वयाइं फेडिज्जा १४ जोइसनिमित्त
अक्खर कोऊय आएस भूइ कम्मेहिं करणाणुमोयणाहि य साहुस्स तव
क्खओ होइ १५ जह सरकीरइ संगो तह तह पसराइ खाणखाणाइ थोवा

रिमत्ती य रा घरा घडिनउ आपि वउं। तला वोलनइ। करवइ। कराविवइ अनामा दिवइ करी मदा मा रातपनउ क्षय होइ॥१५ जइ जद०। जिम इ ज्यानि क्षनिमित्ता दिकनउ। प्रसंगा करइ न

क्लदक भुघरणी इण०रो घरणी इ॥ क्रायइल्पा दिदोष न उ। आपा तमसुदाय तदमादि किमनपडइ। अपितपडइ डि॥११अविकत्तिऊ। इकदिक डा वअविकत्तीआणा ब्रेयापा घइक न्ना० घरउ। शरण नवया डिक टडीतदन। उपंचाय संमा रिवउ॥ काला किमज इ घड जीवविराधना विना न जावइ। समारिवउ॥ करतउ संजयदीमा शिगिण ज्या। संयम धकालल्पा॥१२ थोवा वि०। गृह प्रसंगपरिचय थोडउ ई जय णा०॥ सुद्ध निर्मलता य निकइ पंक। १० मलिन्य दउ

निश्चल चित्त जइ। तसीता दिक नइ मद्दिवइ करी तपसंमा वरइ। जहहिंहि। नजइ। तविराध इ॥१९ धर्म्ममिणं। धर्मनुं स्वरूपजाण ताधका। जयइ स्वरूप तज इ। किस्युतस्मा धवः। महात्मा नु हिदयणाउक छिवइ किसुं। इ दकमलाक न्याना दर गातणउ। अनंत रसागरचा। इकुमग इत्यमाजा णि वी॥१९ देव हिंका मदेवकाम देवआवक सदस्त धकउ। मत्तगा जइत्त जंगमरा दस्मी। नाघोस। अद दासा तादहकरी। आ गा ग्य धादाव चला वी नसकिउ॥२१ लागायउ। कतला इजीवआ

इति मरहिदाडी घसर वाघइ न इण पढ्ढउ। गुरु महात्मा० वारी त उहि तिसांना घनलहइ॥१६ जो नयइण। जतन रयणा पिंड विशुद्धा दिक सुडइ। तमूलगुण महाव्रत। अतिचरण घाडाकालम

विहाइ बहुत्तं नय लहइ धिइं निरुंभंता १६ जा वयइ उत्तरगुणे मूलगुणे वि
अविरणे सो वयइ जह जह कुणइ पमायं पिल्लिज्जइ तह कसाएहिं १७ जो नि
च्छएण गिह्नइ देहच्चाए वि नय धिइं मुयइ सो साहइ सकज्जं जह चंदवडिं
सओ राया १८ सीउण्हखुप्पिवासं दुस्सिज्जपरीसहं किलेसं च जो सहइ त
स्स धम्मो जो धिइमं सो तवं चरइ ॥१९ धम्ममिणं जाणंता गिहि
णो वि दढव्वया किमुय साहू कमलामेलाहरणे सागरचंदेण इ
त्थुवमा २० देवेहिं कामदेवो गिही वि न वि चालिओ तव गुणेहिं मत्तगयंद
भुयंगम रक्खस घोरट्टहासेहिं २१ भोगे अभुंजमाणा वि केइ मोहा प
डंति अहरगइं कुविओ आहारत्थी जत्ताइ जणस्स दमगुव्व २२ भवसयस

विवकी या मा दइ अजान पणा लगी अधोगतिइं। पडइं तरगगति जाइं। लाग अणलो गव ताध का जाइ। जिम इमकएक रा। जयइ नगरितणा य स्त्रिकजन कडाएणी गिरि आलोकउ अया रि। ऊपिबात इस अवक्रुत आहार धकउ। नरकि पडिउ॥२२ भवसय०। भवसयसहस्सला

दिद्वांइइ। जिमरउमादपाइ सिथिल कवइं तिमरुकषायप्र रियइ॥ गुणा धिकवृत्तकइ॥१७॥ जोनि छइ ग॥ ऊनि चयकरी अ पगु धर्मा ज्ञिकी महद्देखा इलिइं। ददन इत्या मिधि त्रिसंता घन सूकइ। इंदय पए उन्ने टइ। ते आ पणाउक वडमाद्दा। दिकस्य। प्रइजि मचंद्रावतं। सकराजा साधिउं। सीउण्ह०। उपसीण॥ सीतता दिव्यक्षत पज्ञेप पिपा साकिमि। उमाया सी ची उची द मिका इंस्थवइ। परीसद्द क्लेश। अनु पशायहि सद्दइ। तकिइं धर्म जिइ। पदन णी। क्रोधी। जइ तिमंत

करइ।जं दोप एवेवइ रागद्वेष
।मा कलामूकिया अनरघक
रइ॥२६ इहलोकरागद्वेषइ
हलोकि इआयासं० मननउले
दो अनइ। अजस। अकीर्ति
नइ। गुण चारित्रादिकनउ। वि
णासकरइं। प सवं० अनइप
रलोकि न रगतिर्यं
चगतिइं। घातीस
यरना। अन इमननाउ
रकपरागद्वेष प्रसवइं। नीप
जावइ॥२७ धिधी०। अहोइति
... खेदे। धिक्२ पाश्रत्वा
दिकनइ। अकार्यमाटई। कु
इ। जं अति। कटकरसफलरा
गाद्वेषलगीजीवइसवेजाणत

घातदिउर्लभ।जन्मजरामरणातद्रूपीउसागरसमुद्रउतद्रथकांकतारणहार।।माक्रतडि।
।घाद्रवाउणहार।एतद्वत्रश्रीजिनवचनगुणउआगरधर्मतिहनइविषइरिवणएकरापमाइ

हस्सउलहे। जाइजरामरणसागरुत्तारा। जिणवयणंमि गुणागर खणमवि
माकाहि सिपमायं ॥२३॥ जेनलहइसम्मत्तं लद्धूणविजेनएइसंवेगं विसयसु
हेसुयरज्जइ सोदोसोरागदोसाणं ॥२४॥ ताबहुगुणनासाणं सम्मत्तच
रित्तगुणविणासाणं नजवसिमागं तवं रागदोसाणपावाणं ॥२५॥ नवि
तंकुणइअमित्तो सुट्ठुविसुविराहिओसमत्थोवि। जंदोविअ
णिग्गहिया करंतिरागोयदोसोय ॥२६॥ इहलोएआयासं अयसं
चकरंतिगुणविणासं च पसवंतिय परलोए सारीरमणोगएदुक्खे ॥२७॥ धि
द्धीअहोअकज्जं जंजाणंताविरागदोसेहिं फलमउलंकडुयरसं तंचेवनिसे
वएजीवा ॥२८॥ कोदुक्खंपाविज्जा कस्सविसुक्खेहिं विम्हिओहुज्जा। कोवनल

उघकरं।तंचेव।तद्धिजिउसेवशित्तिसेवइ॥२८॥कोडुक्खंण।जरागद्वेषनहोयततउक्र
णउःरकसंसारमाहिपामतकोईदुःखीनजयत।सुयादषीनइकुणनइविस्मयहोयत्र।

करइ॥२४जंनलहउजंजीवसम्यक्तनलहइसंवेगिनजाय।विषयसुखिरावइ।तरागद्वेषनउदोषजाणिवउ।तउरागद्वेषपक्षिलउ।नियक्षिवा॥४२।तावजण।तहका रणलणीबजघणागुणउ हावकामासइ।जस म्यक्तचारित्रनागुण। विणासइनीगमइ।एराग द्वेष।नजणतउएरागद्वेषनइवसिनआविवउं।एकपउताईजवा रिवा।पापरूपजाणिवा॥२५नवितंकु०॥अमित्रवय ...री।सुठविं०गाढउ।विरा ११ धिउइद्विविउह्नतसमर्थहतउ।तंअनर्थन

नलवनरहइदवदवस्म॥
कतावलउरअझलिउरूंतउ
।कुणामात्रमाहिबालइ।इम
कषायनइप्रणामिउन्नतउ
जीवतपसंयमसरूबालइ
॥३१परिणामपमननापा
रिणामतीव्रमे दाद्विकन
इविज्ञाधिक तपःसं
यमनउ॥ कय
अधिकउजइ ।अघःउ
ञ्उजइपिणित धापिविव
हारमात्रिविवलावहनामध्य
मपरिणामआसिरीजनइ।
॥३३फरुसण करकशवचनि
इकरीदिवसनउतपनीगम
इ।अक्षिप।अधिक्रूपकरत

अनइकुणमाकनलहंतसकलहंत॥३०माणीगुरूण।जशिष्यमानीअहंकारी।गुरुप्रति।
प्रत्यनीक।अणवपाआपणइ।ऊस्खलावि।करीअनेकअनर्थकिपजावइ।अमगणअमा...

ललिज्जसुरक्कं। रागद्दोसाजइनजुत्ता॥२९॥ माणीगुरूयडिणीउ अणत्थरसि
उअमग्गचारीय। मोहंकिलसजालं सोखाइजहेवगोसालो॥३०॥ कल
हणकोहणसीला भंडणसीला विवायसीलाय। जीवानिच्चुज्जलिउ
निरत्थयंसंजमंचरइ॥३१॥ जहवण दवावणंदवदवस्स जलिउखणे
णनिद्दहइ एवंकसायपरिण उजीवोतवसंजमंदहइ॥३२॥ प
रिणामवसेणउणो अहिउत्तो णयरउवजहारउ तहवरकारमि
तेण जत्तइइसंजहाफलं॥३३॥ फरुसवयणेणदिणतवं अहक्खिवंतोयह
णइमासतवं वरिसतवंसवमाणो हणइहणंतोयसामन्नं॥३४॥ अहजीवि
यंनिकिंतइ हंतूणयसंजमंमलंचिणइ जीवापमायबहुलो परिभमइजा॥

उअरहीनेजातिकइस्या।दिकावालततउमासउंतपनीगमइ।शापदिइतवरसनउतप
नीगमइ।हणतउ।घाउदिइतउआमन्यचारित्रनीगमइ॥३४अहजीवि०।अथवाप्राणियउह्ल
नउजीविनिकिंतइ।परलोकइनिहालमारइ।तउसंयमचारित्रहणीनइ।पापमलचिणइजी

स्तितिवालइ।।माहेण।।जएहवउहोवइततप।।लाचक्रियादिक।कउकष्टनउसमूहमूकिआइजिकरइ।निफलनणी।मासपाउजिमात।मासालाउतपनिष्फलरूउ।एणकलहणजजी वकलहणराडिकरइ॥ काहण।आत्माक्रि इापरकइंवलीव॥ लीकोधरूपजावइ।नंड णउखुक्ला।राढिकेकरीउद्देकरइ।विवादकरइ।जीवानिवनित्याउजलितासदा।क्रोधधम।धम्मतउसंयमनिरर्थककरइ॥३१जहवणजिमवननउदवा

लागइ॥२०पडारणाण्ञ्जीव
स्थानकणक्षिपाङ्गरिपाषाणि
आक्षणिरंङ्गनउ।शीसलगइ।
पङ्गरंपपाषाणइडिउमिवारव
वावांवइ।अनइस्टगारिमिद्र
सरवाणआव्यउ।दषावाणा
मीत्रत्यत्रिजिजा इवांणक्ष
इक्कोईनकद्द। इजीण
शवाणला विउ॥
तिक्षप्रति । यइ।तिम
अज्ञानमत्रुष्यप। रिइद्वष्मउ
घकउ।परजइविरुउवांवइ॥
अनइशिवकोत्रमीक्ष्मीपरि
इतक्षनइक्कोईनकद्दइ।आप
णाकर्मातिक्षिजादादवानउ।का
रणाजाइउच्छिमकरजाइणत
द्वउबिं॰प्रर्विलइलविलिमउ
णपनकोधीउ।जीणिकरीसम

णइकरीजीवसमाद्दवजलधकइसंसारमाहि।परिलमइ॥३५उआक्रोसण्आक्रोशनउ।
यनउदवउता।जिवउ।आंगुलीतुमदकरी।ताडिवउ।दारिलकुटादिका।करीऋटिवउ।
।अवमाणण्अपमान।परानवहीलवउ।हीनजात्यादिक।प्रकाशनपतला।बालदृढअहार
णसंसार।३५ आक्कोसणतछणताडणाउ अवमाणहीलणाउय मुणिणो
मुणियपरिलवा दढण्णहाशिवसहंति ॥ ३६ अहमाहउत्तिनयपडिहणंति
सत्ताविनयपडिसवंति मारिज्जंता विजइ सहंतिमाहस्ममछुव ॥ ३७
डज्जाणमुक्काकाहंडा वयणसरा उवकम्मनिम्माया साहूणातत
लगा। खंतीफलयंवहंताणं। ॥३८ पडारणहउकीवा पडा।
रंडक्रुमिवइ मिगारिउसरंपण्ण ॥सरूप्पत्तिविमग्गई॥३९ तहउद्धिं
किंनकयं नवाहपाजणममसमत्रो। वि इछिंकिंकस्सवऊप्पिसुत्ति धीरा
अणुपिद्दा ॥४० अणुराणाजइस्सवि सियायवत्तंपियाधरावइ तहविया।
खंधक्कुमारा नवंधुपासहिपडिबाद्दा ॥ ४१ गुरुगुरुतराअअइगुरु पिअमा
घउरूषयुद्दक्कइनवादइ।बांधइपाडइनद्दा।एकमनिउ।दोषइएि॰।उक्षिवइकिसउनिःकारण
ऋण।द्दीऋपरिक्रुपउ।इसं।वीतवताधीरउरूषकायरनधाइ।पीडउतीइविद्दलनधाइ॥४०अणु
रापणजइ॰।स्कंदकुमारमहात्माजइंदीऋलीधीप्रविइंयतिधकोनइपिताअनशगिकरी।सिताञपत्र।ब
त्राधरावतउं॰ताईनमहात्मा।बंधुपासिमजननइमातद्दकरीनइ।बांधणउंनहो॥४१गुरुरतात्संसारमाहिपीयमायवा
नउमनेहगुरु॰गाढउ॥तिहइपाहिइं॥

वतसहइ।क्रिंविशष्टासुन
यःजाणिउ।जादपरालाक
नउमायविइ॥३६अहमाद
॰अधमाला।कृथिष्टसुष्टादि
।ककरीआहणियारूंतामा
ह्लात्मावलतउघाइ।नसक
इ।सत्रविणशा पिदीधइघ
कइवलता। शापनदि
इ।कद्दा। विइ।
माशिणमारी ताइघका
यतिमाहातमा सहइ।सद
अमलकृषितणीपरि॥३७ड
जाणमु॰वचनरूपशरवाण॥
उजनमुखरूपकोदंउधनष
थिकानीकल्याविहूटाकंति
कमारूपफल ॥१२॥ कारवउवे
।वहताधकोसा धुरहइन

अवस्यासारूनउस्वहउगुरुगाहउ।तिहइपं।दिइप्रीयजणलायीदिकअलीपनउस्वहाअतिगुरु
गाढउंवांमतोदाहिलउ।इसउंस्वदवितवतउ।रूतउ।उविलगद्दनअनंतसंसारवाढउपणातउजम
यअववपियजणसणाहा।विंतिक्रमाणुगुविला वत्ताअइधम्मतिमिणहिं ॥४२॥
अमुणियपरमत्थाणं बंधुजणसिणेहवइयराहोइ अवमयसंसारमहाव
।निछयाणसमंक्षियं ॥ ४३ मायापिया यलाया नज्जाउत्तासुक्षियमियगा
य इहचेववजविहाइं करंतिलयवे मणस्साई ॥४४॥ मायानियगमइ
विगप्पियंमि आवअहरमाणंमि उत्तस्सकुणइवसणं उलणी
जहवंलदत्तस्स ॥ ४५ सव्वंगोवंगविग त्तणाउ जगडणविहेडणाउय
कासीरज्जतिमिउ उत्ताणपियाकणयके क ॥ ४६ विसयसुहरागवसउ घोरो
लायाविलायरंक्षणइ आहाविउवहउ जहवाजवलिस्मतरद्दवई ॥४७ नज्जावि
इंदियवगाशदोम नडियाकारइपइपावं जहामापणसिराया सरीकताइत्तहा।
रदवई।सरातश्वरचक्रवर्त्तिविधिवानइधाइउ॥४७नज्जावि०।लायीकलत्रइंद्रियविकाशदाघन
त्यितविगाईघकी।पतिपापपतिहत्याकरइ।जिमातशदसीराजासूर्यकांतीईशणीइवधिउं॥४८॥

ननाडघकरइ।पहलणीतदनउ
स्वहनकरिवउ॥४४मायानिग
निजक।आपणीमतिकल्पितवि
कल्पित।अर्थतिणिअपहजतश।
माताउत्तरहइ।व्यसनकष्टकर
इ॥उंलनीजिम ब्रह्मदत्तरहइं
कीधउं॥४५ सवंगाग।
कनक। कितुरा
इं।बटारह इं।सर्वत्र
गाणांगनीबि कत्तनाछेदना
जगडणप॥कदर्थना॥विहेडण
पविवधजातिनापीडाराजनइ
व्रिषितिधकइकीधी॥४६विसय
प।विषयसुरवनइरागिवसिग
उंधकउं।घोरारोउघकउलाईरक्ष
इंदाणइ।जिमबारूवलिनइं।ल

हात्सात्रतिसिंधमनिइंचिषइत्रि
सियालाद्दबांन्ियउस्वहिइध
मनिक्षालइ॥४२अमुणिण।जाय
मुनितनथीजाणिउपरमार्थबं
धवजनास्नेहाव्यतिकरप्रतिवं
धजइ॥अव०। विरुउसंसार
नउस्वभाव। स्वरूपन
वनिछा। सुजाण
इं।तिहनउं। सविरुउ
यस्मिमरागदे घरहित॥४३
मायाप॥माता।पिताभ्राता।लायी
उत्र।सुहीय।मित्र।निअगा य॥
बीजाइसगा॥इह०।आणइंजि
नविवजविधिअनकप्रकार
नयमरणादिकं।विमनस्यपम

णानइकडुन्नीनउ।कयकीधउं॥प
१कुलघरउ।कुटंबघरनिकु
ष्वजनसुदसुखसयणसंबं
धवर्गजनसामान्यलोक।एद
नइविषइ।निंद्यनिरंतरपुनि
वृषन।सलाम दास।अणि
स्सा॥निश्रा विणाअ
लंबविस णवि
दरइ।जिम। श्रीआर्य
महागिरिसगवं नविचरी।
य॥पयरूवणारूपिइंकरीज
चपाजीवनिकरीकरीकन्याका
रीसुखिकरी॥घरनीश्रीलक्ष्मी
तदकरी।सुविदितरिषिनउ
श्रतिणाजलोसिनजाइंसिदशि॥

सासयण॥त्रासतासोरव्यसणी।सासनइविषइतिरसीभगवंतरूयिकसमयकलगीअव
श्रणसुखिइंजाइं।इसिउंघकउपियउत्र।पुत्रजदनइंवलनवइं।निजआपणाअंगरूपनइंजा।क

वहीउ ४८ सासयसुरकतरस्सी। नियअंगमसुसावणपियपुत्ता। जहासा
समणियराया। काणीरनारयंनीउ। ४९ पुत्तासकरूउरिया सुक्षिणाविधिम
वयंतिकयकज्जा। जहवंदयुत्तयुरूणा ।पद्यत्तवाइंगराया ५० नियया॥
विनियगकाज्ज। विसंवयंतमिजंति खरफरसा। जहरामसुत्तमक
उ वंसरवन्नसमआसिरवउ ५१ अ लघरनियगसुदसुय समै
याणगजाणयनिच्चसुणिवसहा।वि हरतिअणिस्सा॥ जहअज्जम
हागिरीनयवं।५२ रूवणजुव्वणणय। कन्नाविसुदविघरसिरीपअनय
खुइंतिसुविहीया। निदरिसणंजंबुनासुत्ति।५३ उत्तमकुलप्पसूया। रायकुल
वडिंसगाविमुणिवसहा। बहुजणजइसंघट्टं।मेहकुमारुवविसहंति।५४
श्रीजंबूनइदष्टांतिजाणिवउं॥५३उत्तमकुउत्तमकुलिरूपना।रायणराजकुल।मा।टासयनाकुलदूमु
कटसमान।एदवाधिकासुनिदृषसबहुजणानाप्रकारादमनाकपना।जतिमाहात्मानउसंघद्दम
घकुमारसुनिनीपरिसहइ।गच्छवासीरहइंइसकहइ।५४

णिकराइतश्रेणिकराजकाय
लीधउं॥धएतुरूमणाभुव्वक
लालियस्वकार्यआपणाकाज
नइविषइकुतावला।सुणिण।
मित्रनइविसंवदइ।विपरीत
नीपजइजिम वंदयुमियुरि
वाणाक्य इपर्वतिक
राजाघ रइविण
सिउ॥५०॥ नियण॥नि
जकार्यविसं वदतइ।विघ
टतइखरपोजकर्मकरइ।वेच
निकरीकूरसवचनिकर्कश
श्राबालइ।जि मरामअनइ
सुलमाप। १३ रस्यरइसम
गच्छत।वंस। खत्रण।बाल

य
द।तअसतीस्त्रीनउसदेवलयेज
इ।तद्भतुंउंचासिवधनअपदरइ
काउअकार्यकरणदारकिवारइ
।जीवघाइ।लकुअकार्यपापक
रीनसकइ।लयलजादिककरी
नइं।इणिकारणिएकाकीनदो
वउं॥४८।उच्चार णउच्चारवडीनी
ति।पुसवण। लघुनीतव
त।वमन ।पित्त५
र्श।आदिला गइ।वायवि
काशिविसूचिका दिक।एतलेक
रीमोदितुं॥चिकलअकुलउ।रूउ
धिकउ।एकलउमाहात्मा।सहवण
मडव्यलोजनपाणीसहितस्तोज
नहाथिधकइजुतस्रकइलो
भइनउआत्मसंयमविराधनाघा
इअनइगासिदाधिय।कउवारा।
दिककरइ॥उत्तदादप्रवचनरू

अवाराण॥गच्छमहात्मानासमुदायमाविपरस्परिइं।संबाध।संघद्दनसं।का।बजइ।अनइसुरकंउद्ध०।सुख
कारिनदी।सरीरण।व्यथादिककरीपीडाजइ।सारण।उरूकदइ।आकाजनेकीधउं।वारण।प्रम
दकरतावारइ।वीसरियाकार्यसणी।वायणाजइ॥५५इक्कस्सण।एकाकीरहइं।किहांधर्मविइ।नथीकाइ

अव्वसमयरसंबाजे सुरकंउद्वंसरीरपीडाय। सारणवारणचायण। गुरूज
णआयत्तयायगाण ५५ इक्कस्सकउधम्मो सच्छंदगईमईपयारस्स किं
वाकरइइक्का परिहरउकहमकज्जंवा ५६ कत्तोसुत्तत्थागम पडि
च्छणावायणाविणइस्स विण उवयावच्चं आराहणायावसरणं
त्त ५७ पिल्लिज्झेसणमिक्का प इन्नपमयजणाउनिच्चनये का
उंसणाविअकज्ज नवरइक्काकणा। बज्झमास ५८ उच्चारपासवणवं
तपित्त मुच्छाइमोहिउइक्का सद्दवभा णविहाणो निक्खिवइकूणइउड्डाहं
५९ एगदिवसेणबजया सुहायअसुहायजीवपरिणामा एगो असुहपरिण
उ चइज्जआलंबणंलद्धुं ६० सव्वजिणापडिकुट्ठं अणवत्थाघेरकप्पभेउय
एलाघवरूपदोष॥एगएगाहिएकदिवसमादिवसमांइसुहतलअशुभपरिणा।एएमयजीवना
परिणामकइ।जइएकाकीजइतउ।जिवारइ।अशुभपरिणामरूपनउतिवारइंचइइछ।जिमउतिमउ
।आलंबणलईनइसंयमसमारइ।वीजउवारणादारनथीतिणी॥६०सर्व।एकाकीपणउंसविजिंनतीर्थं
करनिषेधिउं।अणउ।अनवस्थातइनउआलंबनलेईएकलउथाइ।उस्थविरकल्पनउ।लदजइ।इ।काउ

।जदनणीस्वछंदमतिबुद्धिनउपरि
वारइइजदनइ।अथवाएकलउ
किसंउं।करुतव्यकरइ।अनइअ
कार्य।किमपरिहरइ॥बीजानीला
जघणीजइ॥५६काकोसुत्रउ॥एका
कीहइंसूत्रार्थआगमतणउअल
हिवउकिहं इ।पडिणाएकल
उसं।दक्षिप डिइंकहिन
इथूवइ। अथवा
तजइंप्रमा दिपडिं।चे
यणा।ऊणादि इं॥एकलउवि
नयाविया।वच्छकुणहिइकरइ
।एकला।जइंमरणांति आराध
ना।जणकरावइ॥५७पिलघे
॰।एकलउएषणासमतिभेरइ
उलंघइ।असूजतउविदरइ।
निर्त्तयिधिकउ।पइन्न।अनइ
।एकला।जइ।प्रकीलएकलीज

के
खादिकरी।प्रणामनमस्करिव
ने संस्कारवत्तनिगुणालीडइंवि
नयमादक्वीयड।तहकार्यत
त्यरयकडं॥जीवबांधियाअष्ट
तकर्मदीलाकरइ।इहांदवार
नित्राउल्लतणी परिजिमकष्ट
ग्प्रमदसम। हालाइंवां
दाणादइं। तां।आप
णाकर्मजिम्रा करीधा॥६५
अलिगणमाधु कइंअलिणसा
ह्याजाईवंदनस्तुतिकरणानमस्क
राणदणामवतिष्ठव्वनदेहआरो
ग्पादब्वा।एन्हप्रकारेकरीचिरि
संचिताकर्मक्षिणमाक्षिपाडाघा
डा॥६६॥कइमणकतला दुक्षिप्प

एकलअगादउ।अप्रमत्तजइ।तऊ:तपसंयमदणाइघोडाकालमांहि॥६१॥वत्रयाजीमिक्रिमारीक
न्या॥एउणजिदनुत्तरत्तारविदमिगिउं।बालविधवा।पापंडिवणमुजाधरतीदत्रिनिनीअज्ञातीनव

इक्कायसुयाउत्ताविं इणइतवंसंजमंअयरा ६१ वेसंजुत्तकुमारिं पउत्तवइयंवबालविहवंच पासंडरोहमसइं नवतरुणीथेरभज्जंच ६२ सविडंकुब्भडरूवा दिट्ठामोहइजामणंइत्थी आयहियंचिंतंता दूरयरेणंपरिहरंति ६३ सम्मदिट्ठीविकयागमोवि अइविसयरागसुहवसओ नवसंकडंमिपविसइ इत्थंतुहसव्वइनायं ६४ सुतवस्सियाणएसो पणामसकारविणयकज्जपरो बद्धंपिकम्ममसुहं सिढिलइदसारनयावा ६५ अभिगमणवंदणनमंसणेणपडिपुच्छणेणसाहूणं चिरसंचियंपिकम्मं खणेणविरलत्तणमुवेइ ६६ केइसुसीलासुहमाइसज्जणा गुरुजणस्सविसुसीसा विउलंजणंतिसद्धं

सुसीला।धर्मवंतसज्जनसेतगुरुजहवविउलसद्धीधर्मविमनाजणायंतिण॥जपजावरा।जिमचंडरू
द्रसुरितणाउशिष्य॥६७॥ ॥ ॥

याइत्ता।स्त्रीडाकरनीनायी॥६
रमविइंण।सुमलानइकदुजोरव
लइ।उदुष्टरूपदीनीयकीजो।
स्त्रीमनमोहइ।धमनथिकउत्तक
वश।आयण।आत्महितवांतवत
॥धकामदात्मारइंदूरथकीपरि
हिरइ॥६३॥ सम्मद्दिठ्ठीस
म्यग्दृष्टीय करुआन
ममसीता॥ गमजा
णिउंजग॥ जीणाइंअ
ग्रामणइहइसइ। अतिविषयराग
।सुषवसिथकउ।संसारनइसं
कटिपइसइ।इहवउ।ताविद्याइ
हाउ।रूडसत्य किविद्याधर
पिटालवउ। नाउदाह
राणा॥६४॥ १४ सुतवण
सुतपस्वीरु इरहजावर

संसारपसंसारनमाहिसुकर
जीवासंसारनीवंवनावद
नागिणइनदी।अनइकत्त
ला।एकजीवसम्यगततदृष्टीन
इपतिवीधुणमइ।उफ्फल
राणीनीपरिडं।७०॥जा अविण
।जिसाघुपवइ अविकल।
संघरणतप। संयमक
रइ।अंत। कालि
इकरइ।अ। नयकाम
तआचार्यनीप रितेनिय
म।आणाउपरिमाकरू
प्रअविराणघोडइकालिमा
षइ।७३।उसुरिवणसुखिवप
कतलागतवाउड।एवातक
डीजाणिवी।वीकाणाकर्मीत
हकरीलिराधाप्यपारित्रतवा।

अंगारण।अंगारईउतजीवबुद्धिइंतवधिइंतउजीवनवधबइं।तअंगारवधका।कुगुरू।सुसीसण्रूर्णशिष्यप
रिवरिउ।सुमाणाव।संसामादिदीवउप्यतिमहात्मा।एदीवउ॥कालोगयण।कालस अरहाथीयानउत्तम

हंजइमीसावंडरुद्दस्स ६७ अंगारजीवबहगो कोईकुगुरूसुसीसपरिवारो सुमिणेजइहिदिट्ठो कोलोगयकलहपरिक्खित्तो ६८ सोउग्गभवसमुद्दं सयंवरमुवागएहिंराएहिं करहोवक्खरभरिओ दिट्ठो पोराणसीसेहिं ६९ संसारवंचणानविगणंति संसारसूअराजीवा सुमिणगएणविकेई बुझंतीपुप्फचूलाव्व ७० जो अविकलंतवसंजमं साहूकरिज्जपच्छाविअनियत्थो सुअवासोनियगमई मच्छिराणसा

इविहए ७१ सुहिवित्तनवयइलाएव ख्य इजइत्ताइकिन्नतिअलियमिणं विक्कण्णो कम्मालित्तो मईमानइमोपरिच्चयइ ७२ जइवयइदक्कवट्टी पविव्वरंतक्खि यंसुहज्झाणेण नवयइसदाअइदाना उडुहीखणरंदमाणो ७३ दोहावीलीया

सुरिवउनइ:रिवण।ला।गधुरवनबाक्रइ॥७२जइदक्कवयण।जिमचक्रवर्तितिपविवत।एवप्रभुपरिग्रहराज्य
छिरूपसुक्तछिणामात्रमादिम्रकइ।नकरइ।तिमतदमकनिकाचरा।अधन्यअसागपवंतरवापरउ।तीयन
उ।तरुकमीना।विवरणमइनबांडइ॥उरदाहापिण।विलातीपुत्र।महात्मातणउदेहपिपीलिकाए॥ ॥
कीनीपवानलणीनीपरिकीधउ।पणितिणिमहात्मातपुतहमीकीडीऊपरिइंलगारहमननउधापपनउदी

कलतसुदाउ॥कोविएयरि
वरिउ।सुणनमादिदीवउ।
॥६८॥सोउगग।तअंगारम
र्दकआचार्यनजीवडय
नवसमुद्रिमतवथिकउ
किणिइनवि उटरूपथ
अनइजहि भरत॥
तिराजा। ऊम
रूणआ।ते। गळउरि
नगरिस्वयंवर। राजांडपवि
ड्याहूंता।अनइतकरइड
आवरव।लारिलशिउदीवउ
।जातिस्मरणिकरीनवांत
रमउगरुउ लखिउ।करस
उसारथिकउ।बोडवीराउक
मारदीक्षालीधी॥६४संसार

उवदय।सयगुण३।सहस्रग
लक्षगुण३।।कोडिगुण३।।बहु
तर।अडी अधिकरउकर्मन
उविपाकलागवा।वियइ।एक
वारनाकीधुंकर्मइमलागइ।।
७८।कइखकरं ।।कतलाएक
अजाणइं ।धर्मनइ।
अधिक। रित्रिअ
सवनमाहि आश्चर्यत्
तप।आलंबण लई।।जनि
यमतपसंयमिकरीअणहि।
पतोअ।।अभ्यासविइंधक
इंलगवतीमरुदेवीसीधी।तिम
जाणइंअक्षरइंयुक्तिलोसिंइ
।।७९।किंपिण।कांइइषला।दिक
वस्तुदेषी।नइंकदंपिण।जाणइं

रिउ।।७७।।पाणवध।।जमाहात्मोघुंइणनइत्यागिइं।नीपजतइ।कीडीकपरिपापदेषिविरूवउकरिवउ
।नवांबइ।ते।जातीमहात्मा।पापरहितहुंता।अनेराकइंकिमविरूवउकरिमिइ।सर्वथानकरइ।।७८।।जिण
पक्षे।।जिनपक्ष जिनउ।।सनतउमार्गतदना।जो।अजाण।पाणहरा०।महात्मानाप्राणलिइंषडगादि

ढिं विलाइकुत्रसवालणिवकन्ने तणउविमणपऊसो नवालीउतणतणु
वरि ७८ पाणवपविपावं णिवालियापविजनइबेति तक्कहइइअपावा
पावाइंकरंतिअन्नस्स ७५ जिणप हअपंडियाणं पाणहराणं पिपहरमा
णाणं नकरंतिअपावाइंपाव स्सफलंवियाणंता ७६ वहमारणअ
नरकाणदाण परधणवि लावणाईणं सव्वजहन्नाउदउ
दसगुणिउएक्कसिकयाणं ७७ तिव्वयरउपऊसे सयगुणिउसय
सहस्साकोडिगुणा कोडाकोडि गुणाना हुज्जविवागाबहुतरावा ७
कइबकरंतिआलंबणंइमं तिजणाणस्सआवरं उद्दनियमसवविर्यगी
मरुदेवीभगवईसिद्धा ७९ किंपिकहिंपिकयाइ एगालद्वीहिकहिवित
ए(कि)किकिकालि।एगाए।कोएककरकुंडप्रमुखकांइकर्मनिष्कायोपशमिकरी।कहिं।जीसरिक
लादिकदेषीविमासता।।तत्कालबुधपणउलागउजाणमाहि।आर्यदितातरूनक्षत्रालंबणलिइंनइत
पसंयमनइविषइंषपनकरइ।।८०।।

कइ।दीहरदइतांघकंइ।तस्म
पराधईऊपरिमहात्मापापड
दनकरइ।महात्मापापनउ।
फलडयोतिरूपजाणइं।।७६
वहमारण।।७।।बंधदंड।दिसि
ताडना।मारणं०।प्राणनीग।
भिवउ।अस्य ख्यान।आल
स्वडं।पर धनउ।प
रधन।। अपद
रइषकर्म। एक्कसि०
।एकवारना।। कीधा।जघ
नितउदसवार।उदयआवइ
।लागवइ।७७।तिव्रयरपउ
जइती उदअधिकअधिकेर
उपापकर्म १५ करतांप्र
ष।जइ।। तउकर्मनि

नियमरूपअंकुस।रहितधक
उनदमाइ।।८३।।वरा।मइ।वरा।अ
ष्टउंमइ।आत्मासंयमतपिदमि
उ।पणिजपर।अनेरा।बंधनिवं
धिकरीदमंतावशीकृतातन
लउनही।।८४।।अप्पा०।आत्माइ।
जिदमिवउ।।ज निश्चइआत्मा
डर्दमकरिवइ दमाइ।आ
त्माकइंजे दमइते
।अस्मिंलोए।। इणिइंलो
किपरिवयपपर। लोकिसुखि
यइ।।८५।।निद्रादासमण।नित्यं
मादोषरागद्वेषादिकेकरीप
जीवसहितवइ।अनइनिरं
तरअविरतअशुभपरिणाम
ह्वंतवइनवरं।पआत्मारहइ
।प्रमादीजइ।माकलउमकी।

निदिए।जिमअधन्यअलागी।इण।मिऊ।मिथ्यांनरत्नजुवर्णस्वरिउवांवतांधकंला।पिण।लेवा।त्रबलउ।
यमहुइनउ।रवणिवउतिहांनिद्यामिषकइनलेवा।इहमाउ।इहलोकितहकइनिधानचडइ।तिम
प्रत्यक।।ऋषलक्ष्मीवांबन।समानामोरू त।तपसंयमनउअकरिवइ।माहरू।पिउनिधानतीगमइ

लहिं पतयबुइलाला दवंतिआवरयस्सया ८० निहिसंपत्तमहन्ना प
त्थिंताजहजणोनिरूत्थाण्णो अहमासइतहपत्थिउ बुद्धलहिंपडिहंता
८१ सोऊणगइंसुकुमालिया इ तहससगसमगलइणीय तावत
वीससियव्वं सियइीधम्मिउ। जाव ८२ खरकरहउरयवसहा मत्त
गइंदाविनामदम्मंति।इक्के नवरिनदम्मइ निरंकुसोअप्पा।
णाअप्पा ८३ वरमेअप्पादंतो संजमेणतवेणय माहंपरेहिंदमि
उ बंधणेहिंवहेहिय ८४ अप्पाचेव दमेअव्वो अप्पाहुखलुदुद्दमो अप्प
दंतासुहीहोइ अस्मिंलोएपरत्थय ८५ निवादासमसडगउ जीवाअविर
हियमसुइपरिणामा नवरंदिन्नेपमाए ताहइपमाथमइरसु ८६ अचि

उइतन्ने।मा।डिइइलोकेविरुधअकार्यप्रमादिप्रडिउसतावइतिमाकरइ।।८६।।अविरयपवंदनिक
रीअर्चिता।वंदितगुणकरीस्तविता।थवा।दिकप्रडिउ।अभिरुपातिकरीसत्कारिउ।मस्तकिकरीप्रण

एहनणी।शतकबुधनउआलं
बणलेवउ।।८१।।सोऊणगइ।सु
कमालिकामहासतीससगल
सगाबिहूंमहात्मानीबहिनिते
हनीतिमीग…
गादिकन…सा…नकरिवउ
।सथवी…।धर्मिणी
नणीयइय तिहांतांकि
त्वनधव लाधी
डसयथन।। जूयां…
इ।तांलगइ।रा।…दिकथव…
उबीहवउ।।८२।।खरकरभ…
ररासिनकरइ…
डा।वसहउषनमत्रगाडउहा
थीपसघलाइदमी…सिकर
तां।माहिला।…डिणपक
आतमानिरंकुस।।तपसंयम

पविषयसुखजागतोलागवि।
उहूंतउं। अइयंप। अतिक्रमि।
याहउइहीनवीतउंघकउ। सु
पनायमभिवसुणानासुख॥
मारीषउंघाइं। रहइक्काइंनहीं
। पहलाणीविषइसुषनइविष
इआस्थानकरि वी॥८४ उराम
निह० मथुरा। नगरीमंयु
आचार्यति मिथ्यान
तणउसंजार। त। जिक्षा
नइंइंद्रियथाहि। नगरनइखा
लियक्षरूउ। तजीनकाढीनइ
सुविहितजनकइं। प्रतिबोधइ
उरमयूधनाहाइवउं विसूर०। अ
नइहियमाहिघणउखेदधरइ।
॥८८ निगांतुण तइयंत आचार्यवा
नवइ। जंमए०। घरथिकउनीक
लीदीक्षालइनइ जिनाख्यातध

मिउ। स्वरिपदस्थपताहिककरीमच्छउकोधउ। अनइजीवतउअशितिमकरइ। जिम। आपणप
उंगाणं०। मज्जवस्थानक। धरूउ पाडइ॥८३ सील व० सीलमूलयणउज्ज्वरयणपालिवारूपव्रत। आ॥

अवंदियहईअ मक्कारिअप्पणमिउमहाघविउ तंतहकारइजीवो पाडेइ
महदुक्खाणमाणं ॥८३॥ सीलव्वयाइं जो बहुफलाइं हंतूण सुक्खमहिलसइ।
धिइदुब्बलो तवस्सी कोडीए कागिणिं किणइ ॥८४॥ जीवाउ जहमणसि
यं हियइच्छियपत्थिएहिं सुक्खेहिं तोसेऊण न तीरइ जावज्जीवेण
सव्वेण ॥८५॥ सुमिणंतराणुभूयं सुक्खं समइच्छियं जहा नत्थि। ए
वमिमं पि अईयं सुक्खं सुमिणोवमं होइ ॥८६॥ पुरनिद्धमणे जक्खो म
हुरामंगू तहेव सुअनिहसो बोहेइ सुविहियजणं विसूरइ बहुं च हि
यएण ॥८७॥ निग्गंतूण घराउ न कओ धम्मो मए जिणक्खाओ इड्ढिरससायगरु
अत्तणेण नय चेइओ अप्पा ॥८८॥ उसन्नविहारेणं हा जह झीणंमि आउए सव्वे

मनिकोधउं। इद्धि० ऋद्धिशिष्याधआहारसाय० सुकमालशिय्यादिकतणउसुखकाततकरीगरुआ।
मणउं। तत्रूपरिआदरतिणिकरीनयवे०। आपणउ। आत्मानचेतीउ॥८९ उसन्नविउसनविहारचारि
त्रनइसिथिलपणइंतीणइंकरीहाउहप। आहाउंजिमरहितथकइ। आऊघउषयगाउ। किंकाअधन्यअत्ता।

हिंसादिकपापमाहेउत्तणी
तथकीमासुखयघणाफल
प्रासिइ। एहवासीलव्रतहणी
नइजेमूर्षविषइसुखवांछइसु
खवांछइ। तिवापउउ कोडिव
उइकागणीविसाहइ॥८८ जी
वाउ। जीवय धाविंतितएजी
वजिममति वीतवइते
हवाही। थाऊइ।
गमताजिक लज्ञादिक
नासुखतादा। करीमथलइ
जमारइंसाताषवीनमकीज।
शाइस्यउजीवअहंमउ॥८५॥
सुमिण० जिमसुणामाहि। अ
उनथिउलागवीउं। सुखं०। ति
मअतक्रमि १६ उजामिया
इविइंनही एवममंप॥

गिउद्विवजंसिउकरउधम्मामएजिणक्खाउ इड्ढिरससायगरूअत्तणेण। नयचेइओअप्पा॥८९उ
सन्नविहारेण। हाउहजीणंमिआऊएसव्वे। किंकाहामिअहन्नो। संपइसोआमिअप्पाणं॥९० हाजी
॥ उसनविहा रचारित्रनइभिथलपणउंतीणइ करीहाउह०। आ संप० सांप्रतआपणपउं। सोचवइ॥

किंकाहामिअहन्नो संपइसोआमिअप्पाणं ॥८९॥ हाजीवपाव भमिहिसि
जाईजोणीसयाइं बहुयाइं भवसयसहस्सदुलहं पि जिणमयं एरिसं
लद्धुं ॥९०॥ पावो पमायवसओ जीवो संसारकज्जमुज्जुत्तो दुक्खेहिं न नि
व्विन्नो सुक्खेहिं न चेव परितुट्ठो ॥९१॥ परितप्पिएण तणुओ सा
हारो दुग्घणो न उत्थमइ सेणि यराया तं तह परितप्पंतो ग
ओ नरयं ॥९२॥ जीवेण जाणि उ विसज्जियाणि जाईसएसु देहाइं थे
वेहिं तओ सयलं पि तिहुयणं हुज्ज पडिहत्थं ॥९३॥ नहदंतमंसकेसट्ठिएसु जी
वेण विप्पमुक्केसु तेसु वि हविज्ज कइलासमेरुगिरिसन्निभा कूडा ॥९४॥
हिमवंतमलयमंदर दीवोदहिधरणिसरिसरासीओ अहिअयरो आहारो

कियातएकठांमलिइकीजइतउकेलासमेरूपर्वतसंनिभसरीखा। कूडाढगाइं॥९५ हि
मवंत० हिमवंतमलयाचलमंदरमेरू। द्वीपसघला। समुद्रसघला। धरणि। एहीसरीषीराशिढिग
लीकीजइं। एतलापाहिं। अधिकउ। आहार। भुक्तिपणाउपिइं। मकइ। इंतइजीविआहारिउजइ।

एहहाजीवपआहारजीव
पापी। जाएकेंद्रियादिक।
नीजातियोनिशटोउद्दीषा।
सुखवतीहनामइबहुघणा।
नवशतनवसहस्रलाषनी
होइंडर्लभश्रीजिनशासनइ
सउंलाधउंअ नइहतनथी
आगधतउ। नउनम।
मि॥९०॥ पावो०
पापीजीव। प्रमादन
इवसिथकउसं सारनाका
र्यनइविषइउद्यमपराकतले
जारूषकउनहीअनइ सुखक।
तालसुखारवपरितुष्टसरउनरू
उ॥९१ परित० परितपीनइनि
दाइहारूपपश्चात्तापिइंकरी
पाडिलउंजिकमखियजाइ। ज

इघणुंप। जइतपसंयमनइ॥
विरवइगाढउउद्यमनकरइ।
। श्रेणिकराजा। तंतहपश्चा
त्तापधरतउनरगिगयउ॥९२
६ जीवेणएइणिजीवउ। तिने
मए। उपलक्षणनउबलीरा॥
अनंतवारएक। एकजातिइं।
अवतरिवइक्ष रीजतलादे
हविसर्जी। यामइ
। तक्षादरू नउपि
डिलअनंतमा लागने
दक्षेसकलअ॥ पिसघल
अइ। त्रिभुवनपडिहत्थंपरि
पूर्णभराईजइ॥९३ नहदं
तण। नखदांत। मांसाकेश।
अस्थिजीविहं। अनंता। तेस
दक्षिकरीपाछिलेलाबाजमू

रुइ सर्वरूपं। तमरूधमि
नत्फलइ सज्ञातत्इहृत
आदि ... सूत्र०।गाद्यविष
यं करीषूद्रा।मादिता।इद
यरूं। तत्पापावणापाकिंतो
वाइति नइविष इसमज्ञ
ज्ञाणिजइ०॥ ज्ञाणीय
रवीनवीय इवित
माहिजे विषा। इहगा।
जन्मजरामरण संभव।
सपामियापितिविषयघ
उपजीवविरज्जइदो।अहो
आश्चर्य कथटनीगांठिगाढी।
सुबध॥४जाणईय०मऊको
इस्पंत। जाणइ। हइ।डिनिश्च
इमरीसिइ। अमरंतोइ। जीव

॥एवं जं तेण जलं पीयं। जइ०। जइ जीवइ इज्हाले नइ तापता चाडजगडि० पीडिइंतृषद्धपानीपीधं। सावसु०तत्तलजपाणी मविछि। अगडकूआ तलाव अनइसमुद्देष्ठइन्नही॥१०॥ पीयंथणी० अ

बुद्धिणादाहिंजइ । एवं जं तेण जलं पीयं घम्मायवजगडिएणं तं पि इ
दं सावसुवि अगडतलाय नइसमुद्देसु न वि छिज्जा ॥१०॥ पीयं थणअच्छीरं
सागरसलिलाउ बहुयअरं संसा रंमि अणंत माऊणं अन्नमन्नाणं
पत्ताय कामभोगा कालमणंतं इह सउवभोगा अपुव्वंपिव म
न्नइ तहवि अ जीवो मणे सुक्खं ॥१२॥ जाणइ अ जहा भोगि
ड्डिसंपया सव्वमेव धम्मफलं तहवि दढमूढहियओ पावे कम्मे जणो
रमइ ॥१३॥ जाणिज्जइ चिंतिज्जइ जम्मजरामरणसंभवं दुक्खं न य विसएसु वि
रज्जइ अहो सुबद्धो कवडगंठी ॥१४॥ जाणइ य जह मरिज्जइ अमरंतं पि हु ज
राविणासइ न य उव्विग्गो लोओ अहो रहस्सं सुनिम्मायं ॥१५॥ दुप्पयं चउप्प

तां इक्षंता। जगावइपणलीलरीइकरी। दहनइविणासइ विसंसुलकरइ। पणिपालाकजलग
उनही। अहो इति आश्चर्य सुनिर्मितरहस्य जालंदरहस्य॥१५॥ दुपयं चउ०। द्विपदं वत। पदबहुपद

नंतइसंसारि। जअनंतरी इमा
तानां स्तनक्षीर पीधां अइंत
। स्तन्य। सागर० समुद्रना पाणी
थी अतर अधिकजइ॥११॥ पत्ता
य। ण इह संसारि अनंतइ का
लिकामभोगा पदवादिकनइस्त
वणामियाला गवियापि।
णिअनंतीवा ३। अपूर्व
०। नइवि० तमुक्षय
इजीवा। अषइ। वैताणिपा
रिकहिइनदीना इस्पर्श मान
इ। जाणतालइविषइ। सुपारजी
वइ पुतनसइ। अन्नकाठ विअ
गी॥१२॥ जाणइअ०। एलोकस्य
तु। जाणइ वइ दयइवइ। ला
गिणरूडानो [१७] गरुडिसंप
दानी प्रापि। अघबाअने

लाक्षिवियरूबणी। उस्मा
नीयरूमांसमलाइ। तेतमग०
तिअवयवमांगई। वीहइ। त
पापी। अनंगाकंदर्पी प्रति
कूलवयरी। तद्वनउकारण
। जीणिवञ॥१९॥ सवगहा०॥
सघलीअहनउ अहमाहनी
उत्पत्ति। एक १। मह
गहापका मोधि।
कामसघला। २ अमाद॥
उद्वेखलपणा। रूपकइ।१०
इनणी पमहाग्रहदा।मा।इ३।
गहलपणनउकारण। सर्व
दोषप्रवृत्तिगमनादिका। तद्द
नइपाइदीण। प्रवर्तावणहार
कामग्रहदुरात्मजीणि इसमग
लेउवसिकीधउ। वइअनित

नमरादिक। अपद० सर्पादिक समिद्ध०सधन। अधन निर्धन अण। अपराधपापइ कृतांत। मरण अणघा
करधिक उतिरंतरणतला सर्वजीवरइइ। प्राणधिक उत्कृष्टपणि। खदतपामइ॥१६॥ नय निण। तदिवस।
नजाणीयइ। जीणइ मरीस्यइ। मरि०। भूण सविकजगवइ। अवसिघके अणवांछत मरिवुं वइ। आसा०॥

यं बहुप्पयं च अपयं समिद्धमधणं वा अणवकए विकयंतो दरइ हयासो ॥
अपिच्छंतो ॥१६॥ न य नज्जइ सो दियहो मरिअव्वं चावसेण सव्वेण आसा
पासपरद्धो न करइ अ जं हियं बोज्झो ॥१७॥ संझरागजलबुब्बुओवमे जीविए य
जलबिंदुचंचले जुव्वणे य नइवेगसंनिभे पावजीव किमियं न
बुज्झसि ॥१८॥ जं जं नज्जइ असुइं लज्जिज्जइ कुच्छणीयमेयंति ॥
तं तं मग्गइ अंगं नवरि अणंगुत्थ पडिकूलो ॥१९॥ सव्वगहाणं पभवो
महागहो सव्वदोसपायट्टी कामग्गहो दुरप्पा जेणभिभूयं जगं सव्वं ॥
॥२०॥ जो सेवइ किं लहइ थामं हारेइ दुब्बलो होइ पावेइ वेमणस्सं दुक्खा
णि य अत्तदोसेण ॥२१॥ जह कच्छुल्लो कच्छुं कंडुयमाणो दुहं मुणइ सुक्खं मो

नवरानविगवइ इणि॥२०॥ जो सेवइ०। जकामासेवइ। तेकिसंलहइ। स्वयतितउनजइ। किउ थामबल
लहारइ। दुर्बलजइ। वमनस्यचित्तरइइं क्लदिगपामइ। कयत्रमाधिप्रमुखदुरवपामइ। आपणइदो
षिकरी॥२१॥ जहकच्छुल्लो०। जिमपामनउधणीनखादिकेकरीपामाखंडूयलतउ। कंतउदुखसुखकरी।

नयानवासंसारमानाम्
रूपियापामातादबाधि
रूलेतउ। जअनाइनइछि।
कारोउरमविष्टोता। तेनक
रइ॥०। बाझा०। बद्धाकृतन
इबोधउ। मरणदूकड़उंव।
इ॥१७॥ संझराग०। संध्याराग।
अनइ। जल। बुद्बुद। पाणीन
उपापटा। उतद्वम
नीपरि। जीवत
व्यावलउ इयोवन।
अनइ। वय दउधना।
दिक। नदीनावेगसरीषउ।
वइ। तउ। पापीजीवइमउंदे
षतउघिरुउ काइनबुझइ।
उजजेनउजाणुगेमाछिइ
अवयवबालकइइ स्पर्शजा
णइ अशुचि। जीणइकरी॥

पखंडाफरा अणंताकरि सि
इ। तकुवण। अकयपुन्ना जि
हिंपा हिलहइ विउणि नथी हो
धी। अनइवली जेधर्म सांभल
ता नथी। अथवा जे सांभली
नइ धर्म। दकरइ नइ॥१५ अ
णुसिट्ठा य बहु विधि आन
कपकार॥ ।अणुसु
हउपदेस ।याज
ता। सिद्धांत ।पाडावक
पमिथ्यात्वी। आ नरअधम
नीच। बद्धनि। बांधि उनिका
चित अतिमा ट उजा नावर
णीया दिककर्म। इजाद॥
एहवा जेजीव ते करनीवार
इ। मिन्द कलना दिक नी पर
णाइं धर्म सांभलइ। उणाक

माणइ। माहाण। तिमए मनुष्य। माहइ करी। आतुर विह्वल। जेतउ कामा मनइ वइ इक्ख ते दुःख करी मान
इ॥१२॥ विसइ०। शब्दादिक विषय इजि तक्काल मारणहार। हलाहल विषकहीइ। विसय ए तनि
हवा। घणउ उत्कट। तीव्र आगी विषम रिकं तपी तां। लाग बतां सिवइ जेहवि सयए। जिमा तविइ विष
हाउ रामणुस्सा। तह कामा हुंति दुक्खविंति॥१२॥ विसयविसं हालहलं। विसय
विसं उक्कडं पियंताणं। विसयविसाइन्नं पिव। विसयविसविसूइया होइ॥१३॥
एवं तु पंचहिं आसवेहिं। रयमाइणित्तु अणुसमयं। चउगइदुहपेरंत॥
अणुपरियट्टंति संसारे॥१४॥ सव्वगईपक्खंदे। काहिंति अणंतए अक
यपुन्ना। जे य न सुणंति धम्मं। सोऊण य जे पमायंति॥१५॥ अणु
सिट्ठा य बहुविहं। मिच्छदिट्ठीया जे नरा अहमा। बद्धनिकाइयकम्मा
सुणंति धम्मं न य करिंति॥१६॥ पंचेव उज्झिऊणं। पंचेव य रक्खिऊण भावे
ण। कम्मरयविप्पमुक्का। सिद्धिगइमणुत्तरं पत्ता॥१७॥ नाणे दंसणचरणे। त
व संजमसमिइगुत्तिपच्छित्ते। दमउस्सग्गववाए। दव्वाइअभिग्गहे चेव॥१८॥ सद्द
रयनही॥१६ पंचेव०। पांच आश्रव हिंसादिक छांडीनइ पंचेव पांचे महाव्रत राषीनाव इं पालीनइ ज्ञानि
वंत जीव कर्मरूप रज विमुक्त थका अनुत्तर सिद्धि गतिपाम्या॥१७ नाणे० ज्ञान दर्शन चारित्र तप
ला। दसंयम सत्तर विधि जीव रक्षा। पंचसमिति त्रिणिगुप्ति उद्यम करइं दिस विधि प्रायश्चित्तनइ विषइ। दमए। पांच

छ्उजीणघाइ। अजरयतुजे
तनमारइ। विसय०। तिम
जीव विषइनइ विषइ घणी
आशा जिकरइ ते तिविष
नी विसूचिका जीव विधाइ
तीणइंकरी अनेतमनारमा
छि अनेती वार। मरणादि
कदुःखपा मइ। एवा
वा॥१३॥ धुंउ
एजीवपांव इंद्री अ
वादिमा दिके। पांचे अणु
व्रतकरी। रयण उपपापअणु
समय छिणि छिणि उपाजी
नइ। चउगइ नरगादिक च्या
रिगति नाइ छेह पर्यंत सर्व
उगति इस संसारि अणुपरि
भ्रमण करइ
१८ ॥धसव्वग
ई० सर्व० ।ि ।जगतिनो

तालापजइ। अस्तु दिमानतणी॥
अथवा न लीजइ तउ आनवि अन्न
विना शरीरनउ उच्छेद
जइ नीचाइ। पासत्थउ। अथवा पास
त्थादिक समा ि िएक इंवस तिइ
वस्त्रि उ। तद्विक्वउ तालोपा। लाव
तिससंगा भणी पासत्था दिक
नउ असंग आण सिलवडं नीरू
अ॥२२ आल ।वासंवासो
णपासघा सिउवा
लिवउ। संवासे ।एकठउपा
अयरहिवउं। वीसं । लाणतनउ
वीसास सथवाण। तकउ परिचउ
वरवा दिकादवाल बानउ अथवा
उएतला बोलडीनाचारपासत्था
दिक सिउ सर्वतीर्थकरादि निषेध्या
॥२३ अन्नोन्न पास्था तउ अन्यो
न्य परस्परइं आनंक विकथादि

इहीद सिवानइ विषइ। उआर्ग अथवा दनइ विषइ। दिव्वाइं०। दिव्यादिक अतिचार। अभुकउं वस्त्र शिणकादिक लेवा।
छइ च्यमुकइ पाडइ लवउं। काला अमुकइ प्रहरि लेवउं। लावा तोनी। दस्ती दिइ तउ लिउं॥१८ सहहणा० एत
ला बोल श्री सर्वज्ञना बोलिया सद्दहइ। कह्या किकरी आदरइ। निंदा। तिसदा एषणानइ विषइ उद्यम उदहद
णायरणाए। निच्चं उज्जुत्त एसणाइ ठिओ। तस्स तवायरणं। पव्वज्जाए य
जम्मं तु॥१९॥ जे घरसरणपसत्ता। छक्कायरिऊ सकिंचणा अजया। नवरं मु
त्तूण घरं। घरसंकमणं कयं तेहिं॥२०॥ उस्सुत्तमायरंता। बंधइ कम्मं सु
चिक्कणं जीवो। संसारं च पवड्ढइ। मायामोसं च कुव्वइ य॥२१॥ जइ
गिण्हइ वयलोवो। अहव न गिण्हइ सरीरवुच्छेओ। पासत्थसंक
मो विय। वयलोवो तो वरमसंगो॥२२॥ आलावो संवासो। वीसंभो
संथवो पसंगो य। हीणायारेहिं समं। सव्वजिणिंदेहिं पडिकुट्ठो॥२३॥ अ
न्नोन्नजंपिएहिं। हसिउद्धसिएहिं खिप्पमाणो य। पासत्थमज्झयारे। बला जं
इ वाउली होइ॥२४॥ लोए वि कुसंसग्गि। पियं जणं दुन्नियत्थमइवसणं। निं
कने बालावह सिणठ अनेक हास्य निकर्षादि मांवकरी। खिप्पमाण मात माधर्मध्यान थकी चूकवीत उ
पास्था मांहि बसतउ बलात्कारि इवाउल उथाइ॥२४ लोए वि लोकइ मा दिक संसर्गि माण सनउ संम
र्ग विषय इलनजइ। अस०। दुन्निय० दुष्ट दुरमउ वेषपहिरइ। वसणं० इत्यादिक नाविमण पावइ। एहवा कइं। लो

जइं। तस एउ तइनइ। सव्वखादी
काल सउलव उं संयम सम्यग्दर्शन त
रणस्वारज इइणि सुन सिनइ ज
सम जाणिवी॥१९ जे घरउ जेदीक्ष
ालेई सघर छेडी। घरण समाधि
उ। आरंभ करइ। छकाय ना
वयरी सकिंचन० सुभसी दिकन उ
परिग्रहराषइ॥ अनइ अय
यापमन वत नकायमा
कलाजव इतह
नउपाहिलउ घरसंक्रम
जावपतइ सिसि। नवउ उरआ
दिपि॥२० उस्सुत्त० उत्सूत्र आसिद्धं
त बिरुध आचार्य तजीव कर्मव
ऊतउ। चीकण उं कर्म बांधइ। अ
नइ संसार वधारइ। माया मृषाक
रइं॥२१ जइ गि०। जइ पाकस्थादि
कउं अन्नपानादिक लीजइ तउ

दुंनिगुणिजाणाइं।वांदणाहार
गुणाधिकजाणाइ।तसुविहि
तरइवांदतांधारइ॥२८सुविहि
पसुविहितरइवंदावतां।कुप
षडांनादिकामाकूमारगतउ
।आपणापउ।नसाउइ।कुवि०।
हिविधपषसाधथ्या वकूधिक।
उविषसुकान तिसाध
माहिनात आव।
कमाहिाकह पा।आप
णउंसूषनिजाणाइं। संयमीया।
पाहिकिमवंदाविपइ॥२९वं
दइण।आवकतनथण।विहीण
इसांकइंअपउावदलगइमध
कूणनिलइकालादेत्यवीतरा।
गनाविंववांदइ।धयाशमाय०
धय०।स्तवनथुइनांहूउ।तादृ।

कइजिमनिइदे।तिमज़निरूधमीशिघलकूशीलउनणास्थादिक।ज़हरइं।धीयगमताएहवानइंसाध
जननिदइं॥२५निवृंणतअकार्यनेकरणहारमित्यमदि।वसंकातउरहइ।वातकरतादषीजांणइ
माद रीवातकार इवइ।नी०गथा।महाधिकउ।कादिवाबीहइ।गामा०।बालकातहनइगामिपरा

दइनिरूधमंपिय।कूसीलजणामवसाजडाणा।२५।निवंसंकियलीजाग
मा।सवस्मरवलियराशिना।साजडणास्मअवमइ।मइविडणाडयइंडा
इं।२६।गिशिसुअडफ्फसुआणं॥ सुविहिअआदरणकारणविहिनू।व
छिघसीलविगाल।नहुअसी लहविघइइ।२७।ऊंगस्मनवरण
करणं।अशाणावंदतिकार णंपष्य।जस्विहियपरमवा।ते
वंदातनिवारंति।२८।सुविहिय वंदावंता।नासईअप्पयंतुसुपहा
ग।कुविहपदविष्यसुाका।कहा।मष्पनथाणईमुहा।२९।वंदइउनउ॥
कालंपि।वेइयाइंघयथुईपरामा।जिणवरपडिमाघरघुव।कुप्फगंधवणं
जुत्ता॥३०॥सुविणिहीयणगमई धम्मंमिअनन्नादवउअडाणा।नयकूस

परमउनकूष्टघकउ।जिनवरप्रतिमानउस्थानकतिहां।धूपफूलगंधनउअर्चन।इजिवउंतहनइंतु
कृजइ॥३०सुवणाधर्मनेइविघइनिश्चलपकमतिवहइजहनी।अनइ।वीतरागहाली।अनेरउाद
वनही।जहनइम ॥

नवाजाणपधाइकूणाणरवलि०
जीणास्थाशिवविराधिउाहावइ
तिसाधजमकइइहालाकिअ।
गमतउधाइ।स्तउणसूंआशविइ
नरकादिकडुगतिजाइं॥२६॥
गिरसुणहसुविहितकंसंसय
सागिरूपजाण नउधिकगि
शिडकुअनइ डुफ्फसुक
नउहशति वक्रिज
०।सीलविकल पास्थादिक
प्रजिया।उजु०सी। लहइविषइ
।उद्यमकरिवउ॥२७उसमाणचारि
त्रकरासिवला।जथणतहकइं
यतिमहात्माकारणपयादिक
पामीवांदइ।पिणि।जउसमनणव
रणाकरणसु विहितप
रमार्थजइं॥ १० आपणा।

दिकफलातहनइविषइ।पि
डिकंताणनिवर्त्तिउहइ।मघला
नयसद्धइ॥३५ना।हमऋ०अधू।
मकिर्मअगारहाहादिकतेह
करीनषीडीवतउ।पापा।व्यव
सायपरिहरइ।अनीकाणनिरंत
रभत्यारव्यानवि णाषोडीणवला
नस्कइसर्व णमहधनध
नादिकन उपमाण
करइ।अविण इमकरताका
ईधर्माहलगइ दोषलागइ।
तंपिसंकिता०।तहनीआलोअ
णालेईतपकरीआत्मास्वसवीन
इ।धर्मधमनिसंकमातइस्थापूइ
॥३५निरकम०।निक्रमणसुमि
जन्मसुमिदीक्षांज्ञानस्तुमिनि
वाणास्तुमिजन्मस्तुमिजिणाणां

निसवधा।नयण।कूशमय।अनुसिबोतनइविषइरावूहनहीं।कूसमयना।शास्त्रा।हवापरविरू
ध्वइ।आमिलता।विघटता।अधिवइ॥३३दहूणण॥कुलंगी।अन्यदर्शनी।वाधादिकनउ।त्रस
स्थावरजीवनउविणासवउ।दषीनइविवधववननवादेषीअोमहजिनाधर्मतउदेविद्धिणइ

मणसुइइइ।डुधावरवाहयावसु।३२।दहूणकुलिंगीणं।तसथावरन्तूयमा
दणंविवइ।धम्माउनवालिहइ।दाविदिसयंदणहिपि।३३।वंदइपडिवृव
इपकवासइ।साजाणासर्वथाम।वपटइसुणाइगुणाइअडाणस्मधम्मं
परिकहेइ।३३।दहसीलवृया। नियामा।णामहआवस्मएसुअरक
लितमजमहमंमपंचविह। बकुविहफालसुपडिकंता।३४।
नाकमकम्मजीवी।पचरका।णा।अनिरकसुछंता।सवंपरिमाणकड
अवरहडनपिसंकाता।३५।निरक मणनाणनिवाण।जम्मतमीउवंदइ।
जिणाणं।नयवसइसाजडणविरहिथंमि।दासवज़गुणावि।३६।परतिब्रिया
णपणमण।उसावणघुणाणलविरागंव।सकारसम्माणं।दाणंविणयंववहा

तीर्थंकरतणीतवोदइ।अनइ।जदेस्मवहुल्युणाविस्रधसुलिकादिकसंयुक्तवशंपणि।सा।
धुजनविरहितसाधसामग्रीरहित्ततिहांनरसइं॥३६परतिथ्रीणा।परतीर्थीमिथ्यात्वी दर्शी
नी।तीहांकूइमस्तकनामयइात।उइनावनण।सनांसमहानहनी।गुणवरवविइ।घुणणणात
हनीस्तुतिकरइ।नकिरागस्तकारवस्त्रादिककरीममाण।चालतां।कडालगांचालियइ।दानवि

संयुक्तदेवता।मघला।आवइ
ता।इनहूकविपइ॥३२वंदइ
णमनवचनकाया।करीमुह
स्महूइवांदइ।प्रतिष्ठातिसंदे
हपभिइं।पूछइ।पडवाणसु
निरदहइकमउ।वइवउसव
इामय।मव। निरंतरमेव
पटइंमान। लईगुण
इंजन। स्या।अ
नराकूधर्म कहइंश
तिचरूवइ॥३ उद्दमीण।
हटसीहेहटअणुव्रतहट।नि
यमाणामहआवउपकविषइ
।असखिलतहइ।महामामन
इपानविधवटादिक।फल।
आनराइ।वकूबीडवाइगण।

हचइ।तथ्या(पि।घ्या।इ।मा।हि।।घ
उ3ंपणि।दिइजि।।४०संवव्व०
सं।वव्वरिकंपडूसरणं।वा3।
मासउं।अवाइतिथिअवमिव
वदसि।।पूर्णिमा।अमावस्या।प
।दतिाधडिण वरघडा।तप
गुणाइाना।। दिकतीद
नईविष ऊंमवी
उ।क्किइंकरी लागइ।।४
१मा।हूणा०।मा धमाद्यात्मी
दइंविलक्कडं।प्रत्यनीका।उप
इवकरइए।जअवरणावादवे
लइंवेला।धवे।लइजिण०।।
जिनप्रवचननइ।अदितरा3
।।तसर्वस्वा।मिसर्वशा।किइंवा

नयपगपरकालइइत्या।दिपतला।वो।लवइहि।उग्रपरमंग०।पदिलउंयतो।कइं।प्राश्रुकअन्न
पानादि।किआपणइक्षा।प्रिश्नणमीनमस्करी।पारणाउकरइ।अमइएसाधुनकइ।तउदिसा।लो
ककरी।लाजनकर, इ।।इएसा।हूणाण।जा।लाजना।दिकमहात्मा।कइं।जामपजइ।ज्उंनवि०
इ।।३३।पदमंजइणादाऊण।अप्पणापणमिऊणपारइ।असइयसुविदिया
णं।भुंजइईकयदिसालाउ।।३८।साहूणकप्पणिंज।जंनविदिन्नकहिंपिकिं।
पितहं।धीराजहुत्तकारी।सुसाव यातंनभुंजंति।।३९।वसहीसयणासण
भत्तपाण।भेसज्जवत्थपत्ताई।ज इविनपज्जत्तधणा।थोवाविहुथोव
यंदइ।।४०।संवच्छरचाउम्मा सीएसु।अट्ठाहियासुयतिहीसु।
सव्वायरेणलग्गइ।जिणव रपूयातवगुणेसु।।४१।साहूणचे
इयाणय।पडिणीयंतहअवन्नवा।इंच।जिणपवयणस्सअहियं।सव्वत्था
मेणवारेइ।।४२।विरयापाणिवहाउ।विरयानिच्चंचअलियवयणाउ।विरया
चोरिक्काउ।विरयापरदारगमणाउ।।४३।विरयापरिग्गहाउ।अपरिमिया।
रिउ।।४४।विरया।पाण।प्राणिवधका।नित्य।अलीकवचन।थिका।चोरिका।थिका।प्रदारग
मनथिका।विरत।निवृत्त्या।।४३।विरिया।०।।उ।परियहअपरिमिता।अप्रमाण।स्तुवा।थिक।उविर
मिउ।इपरियहकिसि।उवइ।अणं।तण।अनंतपणा।लोभनी।इच्छा।वज०।वजघणा।दापरा

त।किंपिण०।घा।मीइ।किंपि०।।
किल्लाश।ऊणइं।अवसरि।जं।
लगइ।महात्मा।कइं।दीधउन
जइ।तिचधीरा०।धीरसत्ववंत।
श्रावक।।जऊत्त०।जिमजु।मि
घंतमा।हिश्रा वकरहइंक
रिवउंक।। हिवुं।वइ
तिमउ। जउक
रइतउस। वंघा।तिव
स्तनजिम।।३ ०।वसही०
।।वसति।उपाश्रय।सयण।श
य्या।आसण।आसन।भक्त।
पान।लिपडजा।वव्वण।वस्त्र।
कंवला। दिका।पात्र
वेवा।दिका। २० यद्यपिनप

लगास्यरि।पंथका।शिष्यइंवापि
उं।तिहनइज्ञातहिइं।तइजा।णि
व3।।४१दसदस०दिवसप्रति
इंदसजा।मा।कइं।अथअथिके।
रा।कइं।धर्म्मनिइंविषइहकव
डां।नदिषेणनी।इमी।ग्राकि०।।
तह०।तऊतेनं दिषणकडं।
संयमचारित्र नउविणा
सकर्मला। गइरू
उकिंसुमी० ।कर्मिक
री।जीवकलुषी। कर्त्तजिमघ
णीध्वलिमिश्रितनीरा।गादलउ
घा।इ०तिमकर्मकरीपडीवको।द
लउघयउवइ।किहांन्लो।दरू
उजिमकांटिइंकरीजिमिघाइ।
तिमा।जीवकर्मकरीएहवनका
धउवइ।रवउरी०।मादिकजिम।

ज्यावा।दादिकना।उपद्रवात।दकरी।संकिलष्ट।।नरग।०नरगगति।नइपंथ।एद्दलणीपद्धपरियहतनउ।
श्रा।वकपरिमाणकरइ।।४४स्वका।उऊण०।उजनि।मित्री।स्वकी।कमाण।सनरूसंमगर्यादालगइ।गद्दि
याण।गुरुवचनइं।साधुकरुपरिग्रा।ली।धीकुइ।मुक्का।परआनराने।परिवाद।कण।वारस्वकी।
नअणंतत्तण्हाउ।वहुदुक्खसंकुलाउ।नरयगइगमणपंथाउ।।४४।सुक्काउऊणमि
त्ती।अहियागुरुवयणमाऊपडिवन्नी।मुक्कापरपरिवाउ।गिहिइजिणदेसि
धम्मा।।४५।तवनियमसीलकलिया।सुसावगाजेहवंतिइहसुगुणा।।तेसिं
नजायइदाइ।निव्वाणविमाणसुह।रकाइ।।४६।सोइच्छकयाइगुरु।तंपि।
सुसीसासुतिऊणमज्जाहिं।।मग्गाववंतिवणरवि।कइदासल
गपंथमानाये।।४७।दसदसदिव सदिवसधम्माबादइअहवअ।
हिअयरा।इयनंदिसेणसत्ती।तह वियासमंजमविवत्ती।।४८।कलुसीक
उयकिट्टीकउय।खउरीकउयमलिणिउ।कम्मेहिएसजीवो।नाऊणवि
मुज्झइजिण।।४९।कम्महिंवद्धमाराधामहि।उउनंदणाविपडिवुद्धा।सु
खवउरकऊइ।तिमजीवकर्मिकरी।खारऊविणाठउआनरइस्वला।विषयउवइ।मालिणीउ०।जिमलिक
रीवस्त्रमयलउ।कीधउंकइ।तिमजीवकर्मिकरीमइलउकीधउवइ।किमजाणी।जइजेदइणी।ना।ऊणप
धर्मनिउंतत्ववीणीनइस्त्रअइवइ।धर्मनिइंविषइ।उद्यमनथीकरतउ।।४९।कम्म।हि०।वद्धमा।रा।०।मिकर्मिक
रीयइ।नदनरुला।प्रतिवुद्धा।नीपकइ।भवजपि।घण्इंवि०।खद्धरतउघकं।आलमदितक्रिया।अनुष्ठान

जिनदेशितधर्म्मश्रद्धा।तसंयदिउ
इ।।सुश्रावकइ।।४५तवनिय
म०।।तपनियमसील।कलित।जे
सुश्रावकइहवइं।जिनआसनि।स
गुण।पगुणा।सुश्रावकजेइंतीदव
श्रावककरइइं।जिनिकसिसुक्किवि
मान।अत्तनबांत दमासिख्य
नदीकदेन।। जीयड
कया।वि।। कती
वारइसुरुका मतइवमि
वादिवमीदाडी वीजेतनइवि
पइदीलउप्रमादीथो।तिपितउ
रुकइ।सुशिष्यनिक्रिया०।निवुण
डा।दा।अनत्मजुगदिणमधुरेस्व
आलो।कत्तीकी।अथवावचन।
कारीमाग०उगारचिवली।वार
जमागिथापइ।उदासन०।जिमाज

करीनमलकीधु । मरीनरगिकुपनउ ॥५०॥ वाससहस्सं० । यतिमहात्मा ॥ कोएक वर्षसहस्रे घणउ संयम चारि
त्रपालीनइ । अंतिबेहडइ । मरणनी वेला । किलष्टभाव । अशुभपरिणाम हूंतउ । नसूझइ । कर्मक्षय
नकरइ । मरीदुर्गतिगउ ॥ इ । कंडरीकमहात्मानी परि ॥५१॥ अप्पेण० । केतला सागरवंत । अल्पकालि

वज्जं पि विसहरं ता न तरइ अप्परक्कमं काउं ॥५०॥ वाससहस्सं पि जई काऊण
य संजमं सुविउलं पि । अंते किलिट्ठभावो न विसुज्झइ कंडरीउ व्व ॥५१॥ अप्पे
ण वि कालेणं केइ जहागहीय सीलसामन्ना साहंति निअं कज्जं पुंड
रीयमहारिसि व्व जहा ॥५२॥ काऊण संकिलिट्ठं सामन्नं दुल्लहं विसो
हिपयं सुज्झिज्जा एगयरो करिज्ज जइ उज्जमं पच्छा ॥५३॥ उज्झिज्ज
अंतरच्चिय खंडियसबलादउ व्व । जहु खणं उसन्नो सुहलोलो न त
रिज्ज व पच्छ उज्जमिउं ॥५४॥ अविनाम चक्कवट्टी चइज्ज सव्वं पि चक्कवट्टिसु
हं । न य उसन्नविहारी दुहिउ सन्नयं चयइ ॥५५॥ नरयावाससिराया ब
हुं भणइ देहलालणासुहिउ पडिउसन्नयं चयइ ॥५६॥ नरयावाससिराया ब

लोण ॥ नरकिंगिउ । शशीराजा बहु । आनक प्रकार सिरस्व लहलाई देवता प्रति इंघणउ कहइ ।
देहनु आतंक देहनी संपालना सुरकीय उपकइ । नरकनाइ समदिपडिउ । तउमा हरउंदहा । जसे

अथवा । कोएक । व्रतना खंडि
वा थिकउं । खंडितचारित्र कर
इं । अथवा । तोजहां सबलतात
रीसबलचारित्र करइं । अथ
वा उसन्न थि घलसुख
लंपट थकउ । न हरउ यम
करीनसकइ ॥५४॥
अविना मण
चक्रवर्त्तिन रतनउ
रकसगलाछ । कुवत्तिसु
खउत्पड । नविव
कथकउ । कोवारइं बाह
रुइ । पणि । कुसन्नविहारी डु
रिकय उसकउ । शिथिलपणु
नबांहइ । सहामा दूषणा थकी
सुखनबांहइ ॥५५ नरय

। जहा० । जिम सिंउंचारित्र ली धउ त्रुह
तिमज जिम लीधउ चारित्र पालीनइ
। साहंति आपणउ काज साधइ ।
पुंडरीकमहाऋषीश्वरीनी परि ॥
५२ काऊण । सामन्न श्रमणप
णउ चारित्र । पहिलउ विरुरु
पिपरिणामिइ मइलउ करीन
इ । पछइ । उ । लहगा वि
शुद्धपद । डुर्लभ
निर्मलिया । रित्र नउक
रिवउ दोहिल उं । इस सहूतइ
। सुझिजाण । कोएक । सागरवंत
हलकर्मी । जीव पछइ उद्यम कर
तउ सूझइ ॥५३॥ उज्झि
ज्जि उण । कोएक बहुलकर्मी जी
व चारित्रकर ईअंतरालि
विचालइ । जि छांडइ ॥

21

मालिउं जंतउंता जाई नइ पीडि का दृष्टि जिम हुं पडउ रक्षकी बहुउं वलतउ सुरपलकहइ ॥५६॥ को
तेणउ ॥ तीणइं देहइं जीवरहित सकडं सांप्रत पीडिइं सकइ ऊणा गुण जइ । सिउं लाभ जउ ॥ कांइनि

हुं भणइ देहलालणासुहिउ । पडिउम्हि भए भाउय । तामे जाएह तं देहं ।
॥५६॥ को तेण जीवरहिएण संपइ जाइएण हुज्ज गुणो । जइसि पुरा जायं
तो । ता नरए नेव निवडंतो ॥५७॥ जा वाउसावसेसं जाव य थोवो वि अत्थि
ववसाउ । ताव करिज्ज अप्पहिअं ॥ मा ससिराया व सोइहसि ॥५८॥ घि
त्तूण वि सामन्नं संजमजोगेसु होइ जो सिढिलो । पडइ जई
वयणिज्जो सोअइ य गउ कुदेवत्तं ॥५९॥ सुच्चा ते जियलोए जिणवय
णं जे नरा न याणंति । सुच्चाण वि ते सुच्चा जे नाऊणं न वि करिंति ॥६०॥ दावे
ऊण धणनिहिं तेसिं उप्पाडियाणि अच्छीणि । नाऊण वि जिणवयणं जे
इह विहलंति धम्मधणं ॥६१॥ ठाणं उच्चुच्चयरं मज्झं हीणं व हीणतरगं वा । जे

मीधाणइ विफलइं निफल करइ । जिनवचन नाराधइ ॥ ६१ ठाणं० ॥ ऊंच ऊंचका वरउं मध्य ही
नहीनतर । पांचस्थानक बइ । जिणि जीवि जिम इं स्थानकि जावउं वइ । तदजी वतारिसी नि ।
सी विधाकइ । ऊंचउं स्थानक देवलोका । तत्र कीजउ माका ॥ २मध्य ॥ मानुष्य । ३हीण तिर्यंच ॥ ४ तद्वधकी ही

गक्रिया कलापनइ विषइ सि
थलकुइ ॥ नयनीइ हलोकिव
चनीयना पइइ निंद्यथाइ । पर
लोकि कुदेवपणउ पामिउ
थिकउ सोचइ ॥५९ सुच्चाण ।
तजीवलोक माहि शोच्य
जिजिनव चनतजा
णइ । अ नइत
ज्ञाचपाम हिशोच्य
जि जिनवच नन जाणीन
इ करइं ॥६० दावेऊण धनरत्ना
दिकसरिउं निधांन देषाडीन
इ तद्वद्धाकनी आंषिऊपाडी
उ का ढीनाण । जिअजिनस
वज्ञा । तदनउ धर्मजाणीनइ । ध

ऊवइ । जइसि ण । इउ पहिलउ
। जीवतां हूंतां । जसयरनउ चा
रित्रकष्टसहिवरावंत । तो नर
ण ॥ तउ नरकि नपडंत ॥५७ जा
वाउण । जां लगी आऊषउं मेंजा
वतव्यसावशे षउ हूवतउ
इ । घणउं छइ । जां लगइ ।
व्यापारु । सर्यन
उ विवसा ॥ यउद्यम
बइ । घणउं छइ । जां लगइ आ
पणउं सयरनउ । तां आत्मसहि
तसंयम करिवउं । मासण । श
शी राजा नी परि पछइ सो
चइ ॥५८ घित्तूण विण । श्रामण्य
चारित्र लेईनइ । पछइ संयम । जा

षिदीधी।इमज्ञानदायकनीस
क्तिकरिवी।।६पसीदामाणणो।
सीघामणिवइसारीसोपाक
चंडालरहइ।तहकहइ।अभि
णिकनरचनारंजराजा।विद्याम
गइंपयउ।बहाथ।जामीविन
यपूर्वक।।इय ०इसापरिमा
हात्मापसि। हंतनादे।
णाहारस लुहइ।
इंति विनय करिवउ।।
६६विजाण०।क स्पिपकहीइ
नापितातहनीदीधीविद्याकरी
।दगस्तअ।रा।त्रिकालस्नानन
उकरणाहारत्रिदंडीतेथीइजं
उद्दतउ।सुसे०।कुडउ।बाल
तवयुकनतउलषवतकरतउ

नतरनरक।पपपांअगतिमाहिइ।।जीव।जिसीगतिजाइ।तहनइतिसीमतिजइ।।६२जस्सगुण।जेहिंपा
रहइगुरु।।अपरिपरास।अनइसाधुनइविषइ।।अनादरकरइ।अनइ।क्षमाउत।।घाडीरीसघणी।।ध
म्म०धर्मनिपक्रिया।तहनइविषइअनिलाषतहनइधर्मकरिवानइंबानहीं।।अहिलास।।तहनइउ

णउ द्दिगंतव्वं विद्धा विमता गिमी दोइ ६२ जस्स गुरुंमि परिभवो साहू
सु अणायरो खमा उद्दा धम्मं अ अणहिलासो अहिलासो उग्गइ एतं
।६३ सारीरमाणुसाणं दुक्खसहस्साण वसणपरिभीया नाणंकुसे
ण मुणिणो रागगइंदं निरुंभंति ।६४ सुग्गइमग्गपईवं नाणं हिं
तस्स जुत्तं किमादयं जह तेउ लिंदणं दिन्नं सिवगस्स निय
गव्वं ।६५ सीहासणा निसन्नं सो वागं सेणिउनरवरिंदो विज्जं मग्ग
इ पयउ इय साहू जणस्स सुयविण उ ।६६ विज्जाए कासवसंतियाए दग
सूयरो सिरिं पत्तो पडिउ मुसं वयंतो सुयनिह्नवणा इअ अपत्थो ।६७ स
यलंमि वि जिवलोए तेण इहं घोसिउ अमाघाउ एक्कं पि जो दुहत्तं सत्तं

।पडिउ।मरणपामिउ।दुर्गतिपडिउ।।इमसुइ०सिद्धांतनादेणहारगुरुनइं नउलवतउ।अपथ्य०
।अपथ्यविरुद्ध।आवतइहलविसिद्धांतउलवतकरइ।।६७सयलं०सरवलोकनइविषइजीवलोकिअमारि
नउपडहडषोसावीउ।आहजीवामस।तेणडुक्कंपिजीवदुःखनइंसंसारनादुःखमाहिपडिया।एकइ

यतिनउ।अभिलाषज्ञानिवउ।।
६४समा०।रा०।सयरना।अनइम
नना।दुःखनांसहस्रतहनीव्य
सन।आ०दपीडा।तहथिकउ।बी
हतीजंता।नाणं०।ज्ञानरूपिइं
आंकुशकरी। मोक्षगतिजा।
णहाराउ। महात्माते
रागरू।
पगाजइहं थियाइं
प्रसरवानदिइं ।।६४सुगइ०।
।सुदगतिमार्गमोक्षमार्गनाप्रका
शवानइविषइदीवासरीपतेना
णं।हि०।ज्ञानाउदियइ।अहेडकि
सिउं।जीवितव्यइ।दवाणुगतउ
।जहउलिइ २२ लीलिइंशि
वकइश्वरर इंतणिआ

निव्वाण०।निरत्तीचारचारित्र।।
विषइ।आयुक्तसहितजइ।।पर
त्रिजंनइयोगिनिश्चइ।।ईवता।
अर्थ।।मोक्षसाधइ।।६९जहं
जिमसूलगाइतां।णइ।पांतरइ
धकइ।पलइ।इ। उवाण।उव
त्तव।हिस्सर। क्वादिक
विकया। वम्मिना
जइ।तिणिक रीवीस।
अविरूईधाइ।। इयप०इमस
म्यक्तनिर्मलजइ।पणिप्रमादि
करीमइलुंकरइ।।७०नरए०।
नरकिअथवा।सर्गिजीवप
कसागरोपमआऊपउंबांध
इ।सागरोपमिदसकोडाको
डिपल्योपमजइ।तिदिवसप।

जीवइइंइकवइ।जिणवरनिघाएइ।।६८सम्मत्त०।सम्यक्तनी।दायकइ।बजघाणसावउपकारीनाम
दयनी।कोडि।अनंतगुणइमलीतउकरी।उसरीमणघईनसकीयइ।।६९सम्मत्त०।समाकितलाधइ।अ
धिकइ।नरगतिर्यचगतिशरपिहितदोक्षा०।दिव्यादवसंबंधियां।अनइमनुष्यसंबंधियाअनइमोक्ष

।बाहइ जिणवयणा ।६८ सम्मत्तदायगाणं दुप्पडियारं भवेसु बहुएसु ।
सव्वगुणमिलियाहि वि उवयारसहस्सकोडीहिं ।६९ सम्मत्तंमि उलद्धे ठइ
याइं नरयतिरियदाराइं दिव्वाणि माणुसाणि य सुरकसुहाइं सहीणा
इं ।७० कुसमयसुईण महणं सम्मत्तं जस्स सुट्ठियं हियए तस्स ज
गुज्जोयकरं नाणं चरणं च भव महणं ।७१ सुपरिच्छियसम्म
त्ता नाणेणालोइयत्थसब्भावा ।निव्वणचरणाउत्ता इच्छियमत्थं
पसाहंति ।७२ जह मूलताणए पंडुरंमि दुव्वन्नरागवन्नेहिं बीभच्छा पडिसो
हा इय सम्मत्तं पमायहिं ।७३ नरएसु सुरवरेसु य जो बंधइ सागरोवमं
इक्कं पलिउवमाण बंधइ कोडिसहस्साणि दिवसेणं ।७४ पलिउवमसं

तिई।कोडिसहस्रपल्योपमबांधइ।।७५पलिउवमा०।जो।कोजीवएकपल्योपमनउअसंख्यातम
उभागसुरजा।उएकरतउदवलोकजाणउ।आउडकउ।।तहरइजगमाहिउद्योतनउंकरणहा
रलोकालोकप्रकाशकर।।नाणं।।केवलज्ञान।अनइ।जथाख्यातचारित्रानवमथनसंसारतार

नोसुरवस्वाधीनस्वायत्तरूय
।।७०कुसुम०।मिथ्याशास्त्रन
उं।सुइणसंसलिखउनीपाइ
करीजेऊला।वकएनउजइ।।
आकानितहनइमथनसम्य
क।जहनइंह दयसुस्थित।
रूडं।तहा बइजगमा
हिउद्यो।। तनउं
करणहारलो कालोक
प्रकाशाकरान। णं०।।केवल
।ज्ञान।अनइ।जथाख्यात।चारि
त्रा।भवमथनसंसारतारकरू
उडिण।।७१सुपरि०।।जसुपरी
क्षित।।६सम्यक्तनाधणीजइ
।अनइणा।णाण०।ज्ञानइकरीजी
वादिनवपदार्थसम्यक्तजाणइ

क्रि।देवताजइ।।जिमोरखा७ड
।तेनण।।तस्युरवगा२३बोल।
गाद्वारइ।उक्तदबोलीनसकइ
।जेव।वरसनासइबोलइ।जी
लनासइ।।जइ।।ताईनबोल
इ।।७दानरण। सुण।।नरग
मादि।जक कइापर
मतीछा। गादी
तीव्रछ्छताव दना।पर
माधर्मनीकीधी वेदना।।का
वंण।तउाणवर्ममीबोलीस्क
इ।वरसनी।कोडि।जीवतउनि
रंतरबोलउ।।बालीनसकइ
।।७ण।करकड०।कर्कशाद्ध
अग्निनउइामली अमिवना।वे

घउबाधइ।देव०।तदिद्वाफइं।२असंख्याती वरषनी कोडिजा गउरूखऊपाजी।।७५।।एसकामा०
।एसकमनरकाउ।बांधिवा०णिजाणिवउ।पापकरतउपल्योपमनउअसंख्यातमउभागनरकजो
गउ।आऊषउंऊपाजइ।दिन१लागिअसंख्या तीवरसनी।कोडिजागुंडरककऊपारजइ।।छ

खिघं।नागं।जाबंधइसुरगणेसु।दिवसेण।बंधइ।सवासकोडीअसंखि
ज्जा।७५।एसकामानरएसुवि।बुद्धिमानाऊणनामएयंपि।धम्मंमिकह
पमाउ।निमेसमित्तंपिकायव्वो।।७६।दिव्वालंकारविभूसणाइं।र
यणुज्जलाणियघराइंरूवं।ला। गसमुदउ।सुरलोयसमाकउ
इहयं।७७।देवाणदेवलोए ।जंसुक्खंतंनरोसिलणिउवि
नतणइ।वाससएणवि।जस्सवि जीहासयंहुज्जा।७८।नरएसुजा
इंअइकक्कडाइं।दुक्खाइंपरमतिक्ख।इं।कोवन्नेहीताइं।जीवंतोवा
सकोडीवि।७९।कक्कडिदाहं।सामलि।असिवणवेयरणिपहरणसएहि।
इं।जाजायणाउपावेंति।नारयातंअहम्मफलं।८०।तिरियाकसंकुसारा

तरणीनदीनापाणी।ता।ता।ताफूया।।पावणा।अनेककरवतऊलादिक।तलकरीजउणातना
।वेदनानारकीपामइ।तअधर्मनउफलजाणिवउं।।८०।तिरिया०।तिर्यंचतांडणा।अंकुश।आर।
पिराणी।नीनिपात।आदणिवगा।बधलकुटादिककरीमारणा।मारिवउ।तदनासइ।इहलोकि

घडा।दना०।।इस्यउंजाणीनइ
।धर्मनिय।विषयप्रमादमध्ये
नाऐष किमइनकरिवउं।।७६
दिव्या०।देवलोकना।अलंका
रसिंहासनछत्रादिकनंअइ।
।अनइ।देवता नो।विभूषा
मुकुट।कड लादिक।।
अनइर त्नका।
रीउज्जल फलदल
तां।घरविमान। अनइदेवनुं
रूप।।ला।ग।समुदाय।शोभादि
कविषयसुरलोकसरीषा।एक
इ।।बोलानउ।सुख।इहां।मत्य
लोकि।किम २३ दीषका।।
७७।।देवाण। ०।देवलो

उन्नाइं।पाबिला।लवा।नविरू
।कर्मकी।प्रेमनउव्यप०णउ।ल
हानइ।मरंतिय।।कुगाढानि।
वीनाखूंता।।विषादग्रामधिक
।मरइ।प्रो०ण।बोफइ।।८४।देवा
णपा।।देवलो किदेवतानइ
।दिव्या०दि व्यफलद।
लतां।अ नरण।
ताहिकरी।अ अतुंडित
मंडित।शरीर। जंता।जंपरि
प।।जंपडइ।अश्वविबीलउमगतो
वासमादि।।तेडरकंण।।तडरक
।देवताकहइ।मारा।दारूणमाह
।रोड।।८५।तंसुरविमाण।।तसु
रविमाननउविलव लक्ष्मी।वि

नएमत।परव।।ऊणा।विलइलवि।नीयअसिगळपालांत।।८२।आजीव०।।इयवृत्ती।वसंकिलष्टा।चित्तवि
वा।।सौख्यउज।।उपद्रवघणा।नीचजण।ना।।आक्रोश।गालिअनिष्टा।अनेकसहिवा।अणिवसा।।८०
अणगमतइवासिपरवशिपघकष्टवसिवउं।सुन घ्यानइ।।८२।चारगइ।चार।कि।ति।।धमा।।तिहरइ

।निवायवहबंधमारणसयाइं।मविइहइं।पावंता।परवइअइतिव्व।मिच्छाजं
ता।८१।आजीवसंकिलेसो।सुक्खं।तुच्छं।उवद्दवा।बहुया।नीयजणसि
ट्ठा।वियं।अणिठ्ठवासोयमाणुस्से।८२।चारगनिरोहवहबंधरोग।ध
णहरणमरणवसणाइं।मणसं। तावो।अयसो।विगोवणायाय
माणुस्से।८३।चिंतासंतावेहि। य।दारिद्दरुयाइंदुप्पउत्ताइं।
लद्धूणविमाणुस्सं।मरंतिकेइसु निव्विन्ना।८४।देवाविदेवलोए
।दिव्वाभरणाणुरंजियसरीरा।जंप।। डिवडंतितत्तो।तंदुक्खंदारुणंतेसिं
८५।तंसुरविमाणविभवं।चिंतियचवणंचदेवलोगाउ।अइबलियंचिय
जंनवि।फुट्टइसयसक्करंहिययं।८६।ईसाविसायमयकोहमायलोभे।।

ह।घचीतवता।अनइववणं०।देवलोकथिकीचविवउ।चीतवउ।अइबलियंचिय०।देवतानी
हियय।।मतषंडनहीथाता।।तअतिबलष्टलणीनफूटइ।बीजा।सातधातना।कांचा।हियाजइतउ
एवडइडखिइशतखंडथाइ।।८६।ईसाविसा।विषवाद।कोद०।।देवताफड।।कापकनी।रिद्धि।देषी

फूभिठयुइ।बक्षयपइसुथ्या।दिक।
इमारिवउ।बंध।तडि।अवील
प्रसु।रवंबाधिवउ।रोग।जरादि
कअनेकरोग।धणपलक्ष्मी
नउलेवउ।।अनइमरणअने
राइविसनअ पद्म।मणस्सं
पअनेकम नतासंता
पछइसो ण।अय
शपः।विगा० अनेक।
विगावा।विडं। बनामनुष्य
मादिभइ।।८३।चिंतासंतावे।
कुटुंबलरण।दिकनी।चिंता
चिता।दिकनउ।कीधउ।संत
ाप।अनइ।दालिद्र।रुयाइ०
श्वासस्वासदि।करोग।उप्प

परस्य रिउं। इष्या मत्सर रूजश मृदर्हिकादवनत। क्रोधउंपरा लवदेषी विषादधरश। आपणी रिद्धि
करी मद अहंकार रूजश। क्रोध मान माया लोभ दवरूजश। तादकरी सम लिन्दया वा हिया ब्रुश।
तिहनइ। सुरवकिहां नाम संभाव नाइनथी॥८७ धर्मपिण नाम पिरसिरूश्री सर्वज्ञनउ धर्म जोणी

निद्धिंपवमाईहि। दवाविस्ममलिन्नया। तसिंकत्ताबद्धनाम। ८७ धम्म॥
पिनामनाऊण। कोसउरिमासहन्निउरिमाणं। सामातसाहीण। का
नामक्क रिञ्जदासत्तं। ८८ संसारगणं रेत्वारयव्व। आवीलियस्सबाधद्धि
उद्विग्गाइस्समणा। साकिर। आसन्नसिद्धिपद्दा। ८९ आसन्न
कालनवसिद्धियस्स जीवस्स लरकणंइणमा। विसयसु
हेसुनरचइ सव्वत्थामेसुउज्जम। ई। ९० जइचवनवादहवलं धइ।
मइसात्तणंजइनउद्धमिसि इविहि॥ सिविरंकाले। वलेचकालं गमायं
ता। ९१ लद्धिल्लियंचरबादिंअकरं ताणागयंचपत्थिता। अन्नंदायंबादि
लक्षिसिकयारणसुल्लण। ९२ संघयणकालबलदूसमासरूआ। लंबणा

लद्धिण॥ श्रीजिन विलाथी। बाधिबीजशामिउ। वीतरागनउ धर्म। कर्मनिउ। वाहिउ। करलउन घीअ
नागत आवतइजन्मि अणाराधीइ। बाधिनी प्राप्ति किमलहेसि। अन्नं। आनबोधिके हइ स्यूलिलाजशहारीन
लालशण॥ संघयण। संघयण वरंउ। कालउ रिद्धि। बलदेहना नही। दूसम अरकमा कालि। पांचमस्य आरू। पहवा
आलंबणा।

२४

घिह्मण लईनइ सघलां नियमधुरा तपक्रिया निरूद्धण। निरूद्धम आलस्सू जीवस्तकश॥ पत्ताकालस्सप
कालसइ कालनी हांणि संघैरण॥ आऊषा दहसक्या दिकनी हिशम इरहाणि पा इवइसंयमनिवहिया।
गपतासा। क्षेत्रनथी जयण जयणाइंतत्तिविउ। नहएजभजयणा करा इतउचारित्रकपिउ। अंगनाजइनही

इंघिह्मणं। सव्वंपियनियमधुरं। सिरूद्धमाउपसुव्वंति। ९३ कालस्सयप
रिहाणी। संजमजोगाइंतत्थिखित्ताइं। जयणाएवट्टियव्वं। नजजयणाभं
जएअंगं। ९४ समिइकसायगारव। इंदियमयबंभचेरगुत्तीसु। सज्झा
यविणयतवसत्तिउय। जयणा॥ सुविहियाणं। ९५ जुगमित्तंतर
दिही। पयंपयंचरकुणाविसा। होता। अव्वखित्ताउत्ता। इरि
यासमिउमुणीहोइ। ९६ कायव्व। मइलासं। अणवज्जमकारणे
नसासइय। विमाहविसुत्तियपरिवज्जीउय। जयनासणासमिउ। ९७ बा
यालमेसणाउ। लोयणदोसयपंचमादिय। सोएसणायसमिउ। आ
जीवीअन्नहाहोइ। ९८ उद्विचरकपरिरिकिय। पमज्जियंजोगवइगिहइवा

पालण॥ ४२एषणा दोषनइं मांहि लिनालाउन दाष। साधइटालशा। तपथणा सम तिम्बानतउ।
जइ। जइदोषनथलश। तउअन्यथा। आजीवी लिंगनइ मिसिइं। आजीवका। आपणउ। निवहिक
रइबइ॥ ९८ उद्विंप। पदिलंच उहदिखिपरिघी। जोइपमए। पञ्जइ। जीदरणइ करी प्रमार्जीनइ। मल्द

।१३। क्रोधि चडिउ जीव। आगि। ला नाउ पगारनासि करइ। नल वइ। तल्लणी। क्रत्रिना ३। कही २। अयम मंपसमता जाइ तेह नणी अमा धिकहीय १५ पनल नामा क्रोध नाजाणिवा। बंध यण पता क्रोध नाप्रकार जी करत उधार कउगाढा चीकण। कर्म। बाधय।। उम ।। माण।।० मानरमद३ अ हंकार। आप रथा उपवादबोलइ तह नणी परपरवाद४ आपणा उकर्षक रइ। तह नणी आत्मकर्ष कही इ।।५। परकउ परा लवकरइ। तल्लणी परपरिलव कहीइ ६ प राई निंदा करइ।।७ परकउ परिइ

इं। अथवा। उ उपगरण लिइ मुआदान संइ निक्षपणा समतिकस्व निजाइ।। ए ए उच्चारण।। उच्चार वडीनीति। प्रश्रवण। लघुनीति। श्लेषमा। सिंघाण नाम मल। प्राण विही। आनरव। उकाई अधिक

।आयाण संड निक्खवणाइ समिई सुणी होइ। ए ए उच्चार पासवण खेल जल्ल सिंघाण पयाणविही सुविवइ ए पडेम तिमरं ता होइ तस्स मि उ ।२०। कोहो माणो माया लोभो हासो रई य अरई य। सोगो भयं। उगंछा पच्चक्ख कलीइसमा वि।। १ कोहो कलहो खारो अव रो प्परमच्छरो अणुसवो य चं डत्तण मणुवसमो तामसभा वो असंतावो ३ निच्छोडण ति भत्थण निराणुवत्तित्तणं असंवा सो कयनासो अ असम्मं बंधइ घ णचिक्कणं कम्मं ३ माणो मयहं कारा परपरिवाओ य अत्तउक्करिसा परपरिलवो विअ तहा परस्स निं दा अमूयाय ४ हीला निरावयारित्तणं निमवणामया अविणओ य।

र्षी करइ। ए हलणी असूया। कहीयइ।।८।४ परकई अवज्ञा करी हीलइ। तल्लणी हीला कहीइ।।९ ए परकउ उपकार नकरइं। तल्लणी निरूपकारित्व कहीइ।।१० वडा नइ नमइ नहीं।। तल्लणी निरवनाम ता कहीयइ।।११ मान लगइ विनय न लोपयइ तलणी अविनता कहीइ।।१२ पराया गुण आवादइ

लक्षपान। अप्रु। परनववा। मजोगपा। तल्ल भिजोइ परिवव इ। तप। रिष्टा पना सं मतिजइ ।। ३ ०।। को दो ०।। क्रोध मान मा या लोभ हास रति। ३। क्रू लयाउगंभा। प्रतहक लिकल ह। दोउजाणि वा।। १ को हा कल ०। क्रो। ४ कलह श्हा र३ अवर प। परस्प प रमव रधअ नुपअ उआय ५ चंडवा हअ नुपश्चामउता ममता व संता प। क्रोध पकी अलगा थईया तत्त णी।। ३ नि भेड ण ए निर्लज्ञनक हीइ।। पराई अवर्तन कहीइ।। १२ जिणि त्रिं क्रोध उवई ति णि सुपक **२५** वउन बेमइ तिहनणी अस वास कहीइ

१८ सुब्राप। सब्बि नाम उ। अतिबऊधन ला सता प। ला सनइ मावत उरइ३ ।तल्लणी नस्यावस्थावना कहीयइ। ए पतला लोसना प्रकार।। बोलं म ति पजरामरण ह्वपिया।। घोरते जम हा समश मा हिंडी वफइ बो। लइ।। ए पिपसुण। पहविडंकष।य नइला वि। जलामिवं तनवत्र इ। परिहर इ। तिणि। आ त्मा। आप णा सुउहण। य।। प्रास्वितस। च उजाणइ। तम कुष्य कइमान नीथ। अनइ। दवाणवि। इं द्रादिक। देवइ नउ देवता घाइ। तहश। श स्यलणी।।१७ जो लास रंजे क्रबही उत्पति। लास्व रारो दृसु। उं गम सर्प ग्रचंग। इगा दुहादइ वि

तिल्लणी वञ्चवता नाम कहीयइ।। ३ पतला मान ना प्रकार नीवनइ संसारना छिपाऊ इ।।५।। माया। ए माया रं ऊंडंग पर्वतया पता। ३ कूटना मधा कपटना मया। परकई वंचइ तल्लणी वंचणा दसबले का जअनरा थी अप्ररउ दे प्राउइ तल्लणी सर्वत्रा सदना वक कहीय उपरा इद्या प णि अपहरइ। ते ए जीपर निऊपहरण।

परगुण परवायणया जीवं पाडंति संसारे ५ माया कुडंग पच्छन्न पावया कूड कवड वंचणया। सव्वत्थ असब्भावो पर निक्खेवावहारो अ ६ छ लोमसंवइयारं गूढायारत्तणं मई कुडिला वीसंभघायणं पि य न वा काडि सपसुत्ति वडंति ७ ल गा अइसंचय सीलयाय किलि ट्ठत्तणं अइममत्तं कप्पन्नम। परिभोगा नट्ठविणट्ठय आ गल्लं ८ मुच्छा अइबज्झ धणा ला।। लयाय तण्हावला व णायसया बे लं ति महाघोरे जरमरण महा समुद्दंमि ९ ए एसु जो न वट्टिज्जा ते णा अप्पा जहट्ठिओ नाओ मणुयाण माणणिज्जो देवाण वि देवयं हुज्जा जो भासु रभुयंग पयंडदाढा विसं विघट्टेइ ता तो च्चिय तस्सा तो र सत्तुयं

सउइ। जहन इइ सासा पनइला क हीइं हंनि कारि विघट्ट इहला वइ। तह ऊइं तस्ता चि प्रत दडि सा पथि कउ। आ नविणा सऊइ। ता मा क्रोधऊइ सर्पनउ उपमा जाणिवउ। क्रोध इजा का उदीरइ तह सउ ऊविणासइ।।११।। ।।

।।६ परन इवलइ। तवल कहीय ए विभकहीय १० गहल करय तेसंचय तिकरक हीरा ग्रूढ चरित्र कहीया शी अ सर्व २ कूट लमतिर इवी संलणी विश्वास घा तक करइ।।८ लणी विश्वास घातक कहीइ।।१७ म लवा को डिप प्र न माया ना प्र कार कीजता स बनी को डितसपी। विनउ इं विगावइं। पाला ला अप्पाला लछ तिसंचय अम तडो हलन ला इलो लिप। तल्लणी क्लिष्ट कहयइ। अलो। सगो लेइ आनक वस्तु कपरि समी कारा ते लणी। ति स संवक हीयइ। धकल्प नापरि लाग। पनष्टविणष्ट संता दिका माहल गइ सा च्छ ऊप ऊ२०

दिवई मरा। तिलो सरूपिया महास
सुउमा हि पइ सइ। जिम ति हमम
उमा हि पइवउ जलचारया उइ॥
मरइ। तिमलो समा हि पईसइ स्वर्गे
इ। तजीव आनकडरकरू पिण्ड
लचारपी डीश आनकमरण। दिक
। अनघपिामइ॥१४ गुणादोण। इस
गुणाज्ञानादिक मा हा दिताक्षध
दिकसंमाय नउकारण।
पवइगुण दापनउ
आंतरउजाणी नईपयंपयं
०। पदि०दिश्रीस वेज्ञिनाबोल्पा
सिद्धांतमा दिनी संसं०। संघयुर्मउ
णी नशदा सण। दाघनइ विषइ
जाणा०। जनलो कविरचइनही
निवर्त्तइ नदी कम्माण००। तिकर्म
नउं अधिकार जाणिवउ॥१५ अ
इइ० सुंजंइ। विकामिइ। दरूदम
दमि घउ। तिअइइ दासउं। कदी

जोआगलि ०जअज्ञाणसूर्यमित्र०महोनमत्तहंतां मरणकाल॥ नीवलासारीघउ। तयं करबइ॥
एहवउं। वणागयं दं०वननउहांस्थिउ। तिहनइ आगलइ। रामचइ। तिसूर्यनी णिवनगजजिहां
दियइ सूनकी जइ। इसीपरिमानकइ। गाजहनी. उपमा. जाणवी कही।॥१२॥

गवमाणमिणं ११ जोआगलिइमत्त कयतकालावमवणगयंदं सोते
णंवियहुज्जइ माणगइंदणपहुवमा॥ १२ विसवल्लिमहागहणं जोप
विसइसाणुवायफरिसवसं सो अविरणविणस्सइ मायाविसव
ल्लिगहणसमा १३ घोरतया। गरसागरंमि तिमिमगरगाहप
उरंमि जोपविसइसोप॥ विसइ लोलमहासागरा
लीणं १४ गुणदोसवज्जविसं पयंपयं जाणिऊणनीससं
दोससुजाणानविरयइत्ति क म्माणअहिगारा १५ अइइहा
मकेलि किलत्तणंहासखिडजमगरुई कंदप्पंउवहसणं परस्सतं
करंतिअणगारा १६ साइणंअप्परुई ससरीरपलोयणा तवेअरई
ई। रामतिइंपरूइ। यथा तथा बोलइ। ति केली किलकाकहीइ। हासुखडु एहासइं करीखमघूंटअनउ
करिवउं। जमगरुई०। वातकरतायमकतप। डिवउं। कदर्प्पकउति कें नउंकरिवउं। उवहसणं आनरा
ईपनिहसिवउ। एतलाबोलमाहिणकाबोल महातमा०रनइनकरइं॥१६ साहणं०। साहूणं०मा हुस
हात्मा कहइ। आत्मकचितजइ। रामा हरासयरनइता पता आदिक कष्टऊपजइ। सरीर० आपणा सयरमांइ

विसवल्लि०। विसनी वलिनउग
हनवन। किसिउं बइ। साणुवा
यण। साम्हो वायनी गंधिइं अन
इफरिसइ करीनइ मारइ। इस्यउ
। विसवइं डिहां॥ एहवा वंनमा
हि जोपसइ। साचरथतदूरू
षअचरणा० डाकालमा
हिविणस। इमरइ
। इसीप। रिमाया
विणमायाम धिपावल्लि
। नामहनसार घीकहीजिम
वनगहननउस्वरूपनजाणीइ
तिमसायावं ननउस्वरूपनजा
णिइं॥१३ घोरतया। जस्यन
उ आगरमहा बीहामणउति
मकेमेराग्र 26 हाजलचर
जीवकरीप्र। उरासागरमा

वितालइ०बिहेउजिनकल्पीसुंप
रमगणयरअसंयतनइवारनकहि
वी। अथवा सयादिकइकरी प्रदर्शी
नउ मार्गप्रकासइ॥ जेइइधमजि
इतीहरइ। एतलाबोलनकरइ॥२०
अझाचिण॥ चिलीनमलिइकीसंक
डसुत्तरियाउर्ध्वमं आकडेवरादि
कनइविषइ। जा था। स्वगमुद
मादिवउघक वादिक्रिया
नउंकरिवउं । उच्चवण
। आपणांवस्त्रदे हमयलो
हषीउद्वेगनउं धरि वउ। चऊण॥
असूलकीडे पाप्रास्थानादिकदेषी॥
अपिनउ निवर्त्तिविवउ। हिप्पावी
करिवी। दांतनाजिर्तिक्रिइं। इममगनऊ
पनइं॥२१ एवं पि०ज्ञी० पजापालिक
क्रिया वारिकवाइ इत्यादिक। नउ नियह
करिवउं। इसउं श्रीसर्वज्ञ ननउ धर्मप
कनामउ सिंह। जाणीनइ॥ सुशियउ
जंजीवमृदघा इविशंमी इकरवायादि

जोवइनही। नवि०। तपनइ विषइ। अरतिनकरइं। रावेमाहरउ। सयरइबलउ घाइइ। अरति। सुविड०। सुखितव
र्मआपणउंआपणही ऊवघाणइ। अयपहि०मा ट इलो तिम्र प्ररयेवसुदीमी। अतिदर्पनिधरइ। एतलाबोलसाध
रूइनथी। कहिया॥१७ उब्बत्व०। उदेग धर्मथिकवालिवउ। अरणा मयण। चित्राराग विषइनउ अतिलाष। अरण
। धर्म नइविषइमनउं अरमि बुं. उं। अरईण मनउउद्वेग. दातअरति। कलत। कलमल उविषयनो लोन
सुविघयवाना अइपहरिसंच नहीसुसाहूणं १७ उविवत्तउ अरणामउ। अर
मंतियाय अरईय कलिमलउअणगगाय कोत्तासुविहियाणं १८ मागं
संताव अधिइउ मज्जंचावमणस्सं च कारुणकलुसलोवउ नसाहुधम्मं॥
मिइछंति १९ नयसंरवाहवि माउ मयविलेउविलीसियाउय प
रमगा दंसणाणिय दड्ढा म्माणंकउजंति २० अज्झाविली
णमलसंकडेसु उव्वेवउअणिहे सु वच्छनियत्तणमङ्गलसु नविहवे
सुदंताणं २१ एवंपितामताऊण॥ सुशियवतिहणजीवस्स फाडऊणतता
रइ अइबलिउकम्मसंघाउ २२ उदहउदवज्जस्सुंउसमस्सउय सीसगणसंपरि
वुडाय अविणिव्वउयसम० नहतहमिइंतपडिणीउ २३ पवरगइवइपाया
कनावकरइ। वृणां०। तनिस्थइजीवनांकर्मतउसमूहअतिबलिउ। फेडी परहउ करीनसकइ। पाहकर्म
करीजाणइजीव बालवकारिइं अकार्यनइ विषइप्रवर्त्तावीइ॥ २२उदउ०। उदउ०। जिमइवजस्कतयणामि
सांतनउंसासलिवउं। कीधउकइ। समउ०जिमश्लोकजइ। बुजमानि। शिष्यगणि परिवरिउ। अविन्नम
मयसिद्धांतनीरहस्यतच्चातहनइविषइअजाणतउ। तिमरसिद्धांतक अणकरतउधकउ लाघावणा
उ०माइइ॥ सिद्धांतनउ शनिनी कथाइ॥२३ पवरग०। प्रवरवाकूवस्मणानुआसमनउ पकरण०मारउइ रिहिकइ॥

लगी॥ जमननउघोरआकलता। अ
बकंघाउ। असुकउपीउ पदिरिवउ।
इत्यादि॥ असंवरूमननउबीतविव
उ। एतलाबोलमाहिसाधुमहात
माकइं। एकउ नजवइं॥१८ मागं०
॥ था कसंताप। अधितिगा सहित्रउ
पाश्रयादिकनइ एकहीइबाहिसि
। मन्यगाहइ। था किइकरीइंद्रिय
नांविकलपम णानउ। धाव
उं। वमण० ह्याकइं
करीआत्मघा तादिकनउ
चीतविवउं। का। रूनण। घोडम
सिउंसादिरावउ। अथवा रूसम
वउणगाढइं सादइं। आक्रंदिवउंस
गधधर्ममाहिपताबोलनईवइ॥१
ण। नयसंण॥ अकस्मात बीहवउ॥
संरवा०। चोरादिकदेखीनासिवउं॥
विमाण। विषाद। मयविणसो हादिमा
ग्रीदषीऊवहिजावउं। विसीसिआ०
विनालादिककरीत्रासिवउं। सीदा

बापामइ।शणि०।इंद्रीनइंवशागातप
कुउ।मंयामना।अनेकउखजीव।
पामइ।।२७सहिस्सु०।।चाक्षनइविष
इनरा।वइ।रूपस्त्रीादिकनउं।देषी
वलीनजोइ।रूपांगंधकरप्रशादि
कनइ।विषइ।रूडारसनइ।विष
इरूडा।सुकमालफरसनइविषइ
।अमूर्छितथक उ।उद्यमकरइस्
निमहात्मा। ।।२८निहया
णि०।मह ।त्मानइं
इंद्रिय।निह तहणणाका
हीइ।जहलणी सब्दादिकन
इविषइ।रागाद्वेषनकरइ।पहलणी
हणीयाजकहिउइ।अनिहिताणि
०।आकारमात्रबइ।पदार्थदेषइं।
पहकाशणिअनिहित।कयनथी।प
माणां।।अनइघापहणां०।यत्निस्करी
सर्वथिकीसघलाइंइराहणवा।अ
हिआवि०।अहितार्थअहितपापमय

बलीमहोजन सालालोकनउ नतानाऊरबउं।।लोकसरूपकनइं।वादरबइ।इसीपरिशिहितउगारव
करणतऊढिगारबयुक्त।।२४ अरसं०।अरसहीनमिरचादिकअसंकरिउं।विरसताढउं।लूखंलूष
उं।ऊदो०जिमालाधीतिसीसरूपानादिकजिमवानवांबइ।निद्दाणि०स्त्रिनिधचापइं।।पसलस्वआ

साणिवगराणाइंणसविहावाम। अविणमहोजणनया। अहंतिअरइ।
हिगारवठिउ।२४।।अरसंविरसंलूहं। ऊदोववंचनिद्धणलाउं। निद्दाणि
पसलाणिय। मणाइरसगारवे। गिद्धो।२५ सुस्सरसईसरीरं सणाणास
णवाहणापसंगपारा।साथा। गारवगरुउ। उरकम्मतादइअप्पा
णं।२६ तवकुलछायालंसो। पंडिचफेसणाअणिहपादा। व
सणाणिरणमुहाणिय। इंदि। यवसगाअणुहवंति।।२७ साहसुत
रछिद्दा। रूवंदहुंआणातइरकि। हा। गंधरसफासे। अमुच्छिउउच्छमे
हमुणी।२८ निहयाणिहयाणियइंदियाणि। घाएहाणंपयत्तणं। अहि
अवनिहयाइं। हियकाहरअणिजाइं।२९ जाइकुलरूवबलसुय तव।

अहितिहां।निहतकरिवां।अणहणतांकरिवा।अमइहिताईआगमश्रवणजिनबिंबनिरीक्षणविषइ।अ
निहितकरिवा।तिहांपवित्राविवा।तिहांपइंनीयप्रहाघयाइं।।२९जाईकुल०।जाति।कुलरूपउबलध
सुतप।तवइलाभउइस्सरियउअव०।पादआविमहे।मानउथकउपहजिअप्तनअनंतगुणाबांधइ।। ।।

लाभमगाइवांबइ।तसगारवाइहउ
गणिवउ।।२५सुसरसइ०।।सुस्वरक
रीवलीशसालाकरइ।सयणाणि०सु
कमालसिय्या।आसण।पहका
दिकातहनीहाहता।निकारणी।पा
शिलागपसगकरइ।साता।गारवन
इविषइ।गरुउवाहिउजइं।उरक
म०।उरवजइ। आपणाउंनिंदइ
।लूषत्रिवा दिकपरीसह
नाउरकइ माहिनप
इसइं।।२६। तवकुल०।त
पश्चनचानादि २शलहकुलउग्र
लागादिछाया०।लोकमाहिउ
चतिइहां।त्रिजंतउ।अंश।हवउंपउि
वउं।पंडिच०।पंडित्यरहइं।पंडितप
णानांफसणानी गमिवउ।मा
लिगत।अनि। २७ इसंसारते
हनउ।पंचमार। गवधारइ।वस
णिइंद्रीना।व्यसना।अनेकाकले।

संसारिवजघणीवारिफरइ।।३०।जाइ०उ०।।उत्तमजातिइंकरीअधमनकुलिरूपइंअनइऐश्वर्यइआ।
श्रयीबलिपविद्याइतपिकरीउलाभ।मदिइं०।।जपररहइं।षिंसइ।अवहीलाकरइ।।३१संसार०।।तेजी
वसमारिअणवयग्गा।जइनउ।।पलउ।पारबहनथामिइ।तसंसारमाहिमहनाधणी।।समइ।।नी।।

वावरइं।३निरूवणं०।।अनइस्त्री
।जननां।अंगापांग।अंपिसुरवहनइ
हयनउ।जोवउवर्जइ।४।।३४पुव्व
रया०।।पुहस्त्रपणइ।जकाम
कीउ।कीधीउ इ।।तहनउस्म
रिवउं।टाल इत्थीजण०।
स्त्रीनारत्नरी। विरहनारा
वा।।विलाप नसांसल
इ।अनइ तीन।
जोलानइअ नरइ।अ
रूपस्त्रीनाविल वविलासइ
त्यादिकनथा संभल
।अइबए।अस तिवजमात
।।आहारआकंठवमाणनजिम
इ।।उपवजांता०।सयस्नीवा
सविहधासंगारवजइ।टाल

लानस्सरियअहमयमाता। पयाइंचियबंधइ। असुहाइंबजंचसंसार।३०
जाईएउत्तमाए। कुलेपहाणंमिरूवमस्सरियं। बलविज्जायतावेणय। लाभम
एणंवाजोखिंसे।३१।संसारमणवयग्गं। नीयट्ठाणाइंपावमाणोउ। भमइ
अणंतकालं। तम्हाइमएविवज्जि ज्जा।३२ सुट्ठुविजईजयंता। जाइम
याईसुमज्झईजाउ। सोमे यज्जरिसिजहा। हरिएसबलुव्व
परिहाइ।३३ इत्थिपसुसंकिलि ट्ठं। वसहिंइत्थीकहंचवज्जिंता। इत्थि
जणसन्निसिज्जं। निरूवणंअंगुवंगाणं।।३४।।पुव्वरयाणुस्सरणं। इत्थीजणविरह
रूवविलवंच। अइबहुअंअइबहुसो। विवज्जयंतायआहारं।३५ वज्जंतायवि
भूसं। जइइइदंतवेरगुत्ताओसु। साहूतिगुत्तिगुत्ता। निहुअदंतापसंताय।।

इंजइरजं।रमवहाचर्यनीगुप्तिमनइविषइयत्नकरइसालूया।साधुमहात्मा।त्रिणगुप्तिगुप्तनिहूत
।निव्यापार।पराइंदात।आपणापंचइंद्रीदमि।आंबइजीणाइ।प्रसांत।पालानादिककरवाइ
जीणइजीताबइ।।३६।।

चस्त्रानिकअध।मऊात्यादिकण
मइ।इम।अणंतकाललमइ।।तम्हा
०।एआवमदनउपवहउ।जीणी।।
नइवर्जिवा।।३२सुट्ठुवि०।यतिम
हात्मा।सुष्टुविलणीय।परिग्यन्न।
करतउथकउ।जाइए।जातिमदा
दिकमावइ।सो मेयज०।तम
तार्यरिषिअ। मइहरिके
सबलतर णीपरि
हीणथाइ।।३३ इथिपसु०
स्त्रीमनुष्यनी।। अथवा।देव
तांरीस्त्रीजइ।पसु०।तिर्यंचनी
स्त्रीजइं।तीणइ।उपाश्रइमहा
त्मानवसइं।।इत्थीकहं।स्त्री
नीकथा।आसरणादिकावषा
णीकथानकरइ।अथवाएका
लीस्त्रीआगलिधर्म्मकथाइवजइ।इ
इत्थिजणण०।स्त्रीजननां।आसण।न

गुज्झाण। स्त्रीनां॥ गुह्यस्थानक। अपरि॥ ऊरू जंघ। वयण। वदन। कक्ख। कक्षा। थण। हृदयनां। अंतर तथा। स्तन
नां अंतरां देषीनइं। साहरइ॥ तथिकउ॥ दृष्टि साहरइ। पाछी वालइं। बीजी वार सा सूर्य नजोवइ न
य०। स्त्रीनी दृष्टि सितउं। आपणी दृष्टि मेलइ नहीं॥ काजिकाभि नीचउसा स्व॥ जो नउ बोलइ॥ ३७

३६ गुज्झोरुवयणकक्खोरु अंतरतहथणंतरदट्ठुं। साहरइतउ दिट्ठिं न
य बंधइ दिट्ठिए दिट्ठिं॥३७॥ सज्झाएण पसत्थं झाणं जाणइ य सव्वपरमत्थं। सज्झाए व
ट्टंता खणे खणे जाइ वेरग्गं॥३८॥ उड्ढमहतिरियनरए जोइसवेमाणि
याय सिद्धीय। सव्वो लोगालो गो। सज्झायविउस्स पच्चक्खो॥३९॥
जो निच्चकालतवसंजमुज्जु उ नवि करेइ सज्झायं। अलसं सु
हसीलजणं नवि तं ठावेइ साहु पयं॥४०॥ विणउ सासणे मूलं वि
णीउ संजउ भवे। विणयाउ विप्पमुक्कस्स कउ धम्मो कउ तवो॥४१॥ वि
णउ आवहइ सिरिं लहइ विणीउ जसं च कित्तिं च। न कयाइ दुव्विणीउ स
कज्जसिद्धिं समाणेइ॥४२॥ जह जह खमइ सरीरं धुवजोगा जह जहा न

श्री लक्ष्मी। पमाडइ। विनयवंत। जस कीर्त्ति पामइं। न कु० दुर्विनीत उ। काज किवारिइं। न सी
झइ। अविनीत। आपणा कार्यसिद्धि न पामइ॥ ४२ जह जह०॥ जिम २ देह मय रक्षव मइ सद इ ने
त्रादिकना। बल त्रवांनी पाडइं। धुवजोग। धुवजोगपडिलेहण प्रमुख। हीण न पाडइ। तिम। तपसादि

जिजइ। सिद्धांत नइं बलि इ। चउ
दपूर्वधर। असंख्याता भवना संदे
हना जइ॥३९॥ जो निच्चकाल
उज्युक्त। आपणपइ। नित्य सदेव त
प संयम। नइ विषइ उ। हपकर
इ उद्यमवंत ज। इ। न वि०॥ सज्झा
य श्री सिद्धांत। न णि वा गुणि वा॥
। जो वा नइ वि षइ। आके
ष न करइ॥ अलसं०
। आलस सुख सीलिया न
णी॥ न वि०। तस। धु पदिस्थापी
न सकइ॥४०॥ विणउ॥ विनय
श्री जिनशासन नउ मूल। महात्म
। संयत विनीत जइ। विनय। विनइ
विप्रमुक्त नइं किहां धर्म। किहां
तप हइ॥४१॥ विणउ०॥ आवण। वि
णा यइ पावं तप तिइं की धइ घकुइ

सज्झाएण। सज्झाय करतां। जीव ध्यां
प्रशस्त रूडउं। धर्मध्यान। शुक्लध्या
न आवइ। जाणइ०। अनइ सज्झाइ
न उकारण। हार सर्व परमार्थ जाण
इ। जगत्र न उ स्वरूप जाणइ। सज्झा
एण। अनइ वली सज्झाइ वर्त्तितउ॥
जीव क्षिण। २ वैराग्य पामइ॥ उ
ड्ढमह०। उर्द्धलोक अ
धोलोक तिर्यग्
लोक। जो। तिक विमा
निक सिद्ध सर्व नू लोक। अलो
क सर्व धर्मयनो जाण। जइं प्रत्यक्ष।
जइं। साख्यात देषइ। घणउं किम
उं। कहीयइ। चउद राज आत्मक लो
का। अनंत। अ लोक नउं स्व
रूप सज्झायन २८ जाणइ। सि
द्धांतना बल थिकउ सर्व प्रतिहइ

वकरिवउं॥ कम्मखव० तप करतां विउल घणउं कर्म खय जइ विवत्तियाय। विकतासाव। दहादिक
स्पउं हां हहारउ। अनइ। इंद्रियदमइं॥४२ जइ त्तां असण०॥ लाछि छि उद्भ यमहात्मानी बारशतिमा। तप
कायास यादिक। कर्म करी नमकइं। तउ ज्झंण०। तात अ हा छि छ॥ जसण। बलि कं हीसमति॥

हायंति कम्मखउ य विविउलो। विवत्तियाइंदियदमाय॥४३॥ जइ ता अ
सक्कणिज्जं न तरसि काऊण ता इमं कीस। अप्पायत्तं न कुणसि संज
मजयणं जइजुग्गं॥४४॥ जायंमि देहसंदेहयंमि जइणा इ किंचि से
विज्जा। अह पुण सज्जोय नि रुज्जमोय। तो संजमो कत्तो॥४५॥
मा कुणउ जइ तिगिच्छं अ हियासेऊण जइ तरइ सम्मं।
अहियासंतस्स पुणो। जइ॥ से जोगा न हायंति॥४६॥ निच्चं पवय
णसोहाकराण चरणुज्जुयाण। साहूणं संविग्गविहारीणं सव्वपय
त्तेण कायव्वं॥४७॥ हीणस्स वि सुद्धपरूवगस्स नाणाहियस्स कायव्वं। ज
णचित्तग्गहणत्थं करिंति लिंगावसेसे वि॥४८॥ दगपाणं पुप्फफलं अणे

सिज्जं। जणचित्त०। लोकनां चित्तरंजवानइं। अधिलिंग०। चारित्र रहित वेषधारी जइं। लि
गमात्र। वेष धरिउ बइ। तहिनउ। वयावच्च करइ। नकरइ तउ लोक। इस्यउं जाणइ जिण हन
इ परस्पर माहि नकरइ इम सामनन इविषइ मालिन्य०। ४७ उडाहघाइ॥४८ दगपाणं०। सचि

उ विक्रम हात्मा न करावइ। अन
इ संयमना जोग हीण थाता देषइ
। तउ चिकित्सा इ करावइ। इस उला
वा॥४६ निच्चं पव०। नित्य प्रवचन जि
न शासन। तिहन उ शोभा करइ
। चरण०। चारित्र नइ विषइ उ
द्यमवंत। संविग्ग सं वेग नेवइ ज महा
त्मा। संविग्गए। अनइ उम
वगीयाम हीया
सिल। घीघका विहारकुर
इ बइ। एवहा म। हात्मा जइं
गादिक कीजइ॥ सव्वपयत्तेण। अ
नेरमाहात्मा। प सर्वविय न करी स
वृत्ति किइं करी॥ वयावच्च। दिकृत्य
करिवउं॥४७ हीणस्स वि। चारित्र
करी हीन थका। पणि सुद्धस्वरूपक
। ज्ञानाधिक रहइं। वयावच्च। कीर

गुप्ति जयणा। आपणा। आत्मवस्ति
। इंद्रीनउ। निग्रह कांइ न करइं॥४
४ जायंमि देह०॥ देहनइ संदेहि॥
ऊपनइ। रोगादिक। अपवादि। अ
पनइ जतन इ। जयणा इं करी कांइ अ
ल्प। दोष सेवइ। असूजतउं कांइ
लिइ। अह पुण०। साजउ नीरोग
समर्थ जइ। नि उद्यम किहां त
तपसंयमन इ विषइ
उद्यम करइ तउ तिहां संय
म किहां हइ। न थी ॥४५ मा कुण उ
जइ तिगिच्छं०। जत्तियमहात्मा चि
कित्सा म करउ। अहिया। सउ णो ज
इ सम्यक प्रकार इं अहियासी सक
उ। अनइ अहिया सतां थकां। जइ तेह
नइ जोगपडिलेहण। पडिकमण
। प्रमुख हीन न थाइ। उबानथाइ तउ

रीघउंमानइ।अममादा त्मा॥उं
इमतपस्वीगुणवंतकइंदीलइं
।तद्दनउसमण्हकाकामल।अ
मारातमिथ्यात्वीइजिंजाणिवुं
॥५०सम्मत्तस्स०।अवसन्नशिथि
लवइं।अथवा।पास्थादिकजइं।
अथवायूहस्थ। इपणिजिनव
चननइविं॥ थइसीव्रत
१वमतिबइं।अ नइद्दढम
मगक्षिबइं।कीर इजंण।तद्दक
इंजनिस्सावद्यनिपाप्ययोगथ।व
यावत्तजइ।तकरइ।मृदात्मा।ऊ
णाइअवस्थापडी।करइ।।पंरया।म
।स्थापापार्श्वस्थि।अवसन्न।कुसी
ला।संसक्ता।इत्त।आत्मवंदा।जाम
णीनइ।सुविहितईहांनरहइम
नपयनिकरीवजइ।।पत्रबायाल

त्ता।दगपाणीनउंपानपीवउंफूलफलस्वचित्तअनषणीय।आधाकर्मीनइं।गृहस्थनो।क
त्यअयत।असंवरिया।।जाहणापघारणतलोसवइं।तनवरं।तवयजइंवरिंवणा।दाररजा॥

संणिज्जं गिह्वकिच्चाइं अजयापडिसेवंती जइवसविंडंवगानव
रं ॥४९॥ उसन्नयाअवोही पवयणउब्भावणाय वोहिफलं उसन्नो वि
वरं पि ज पवयणउब्भावणापर मो ॥५०॥ गुणहीणो गुणरयणायर
सु जइकुणइ उच्चमप्पाणं सुतवस्सिणो य हीलइ सम्मत्तं के
।मलंतस्स ॥५१॥ उसन्नस्स गिहिस्स व जिणपवयणति
व्वभावियमयस्स कीरइजं अणवज्जं दढसम्मत्तस्सवत्थासु
॥५२॥ पासत्थोसन्नकुसीलणीय संसत्तजणमहाछंदं नाऊणतं सु
विहिया सव्वपयत्तेण वज्जंति ॥५३॥ बायालमेसणाउ नरक्खई धा।
इसिज्जपिंडंच आहारइअतिरक्कं विगईउसन्निहिंखाइ ॥५४॥ सूरप्पमा
ण॥पंयाणाहोषनरायइं।धात्रीपिंडहूतउ।विन्नाषदोषनणीबोलितउंशय्यातरपिंडराषइ।आद
णाविगइ।निरंतर।आहारइंसंनिण।अनइ।संनिगिहि।खाइ।वावरइ।।पंयस्तरपमाण।जोलग
इसूर्यहीसइंतां।संझतांइ।जिमइ।आहारण।नित्यमहिवा।आहारलिइ।प्रत्याख्यानानकरइ।मां

णिचा।।धएउ।कसन्न०।इसानृथा
चारीकइं।अहलोकिइजा।उन्नता
।पराननृत्वइ।अनइ।परलोकि।अ
बोधि।जिनधर्मनीप्राप्ति।नहुइ।।
पवयणा०।तथा।।बोधिनउंफल
पतलइंजिलालइजा।प्रवचननी
उभावनाप्रभाव करणउंकीज
इं।उसानाण। उसनकम्म
नइपरव। सिपणइ
।जेउसन्नथि कउं।वरषु
धानजा।प्रवच। नउआगमनइं।
व्याख्यादिनोककलाकरीपिज
।घणाउं।शिव।श्रावक।ज्ञाननइउ
नतियडावइ।महिमावधारइ।।
।।पंयुणहीणो ।गुणचारित्रिक
रीहीणाम्रक। ५१ उगुणरत्न
करस्समाधसि उं।आपणउंस

उवरण।अधिकउ।कांबल।वस्त्रा
दिकपाथरइ।।५०।सावद्य।पसघ
लीरात्रिस्त्रूय।नीसवनि:प्रमरक्ता
क्षतणी।परिआवतनथईसइं।स्वा
ध्याइं।सिकायनकरइंनपमंडतो
प।रातिइंरजोहरणादिकिकरी।।
स्तुइं।पूंजनतउंनप इमइ।आणप
जतउमीकल इ।अनइ।।
नीसरतउ। आवसी
पयइसतउनि सही।नक
रइ।।पायणायप। हूतपमजय
णमारगिविहारकरतोगामनीसी
मपइसारिनीसा।शिरऊखरिडिया
पगइप्रमार्जइनही।झगण।युग।प्र
माण।सूमिका।ासाधइनही।वुदा
विदगपथ्वीकाय।पाणी।अग्नि।
वायवनस्पति।अनइ।त्रसपजी

फिलिम।दिनजिमइ।नीकोइनहीडइ।आलस।षिकउ।बसीरहइ।।५५।की।ला०।कीवकाय
घकउलो।चनकरइ।।काउस्सगिरहितउ।जइ।जलपमलहोलइ।।साधो०।खामइंसहित
हीडइ।कारण।विण।ग्लानपश्चाद्दिककडिवाधइ।।५६।गामांदेसंचकुलंण।।गामहसाकुलनीम

णालाई आहारईअलिक्कमाहारं नयमंडलिपत्तुंजइ नयलिक्कंहिंड
इअलसो ॥५५॥ कीवोनकुणइलोयं लज्जइपडिमाइजल्लमवणाइ सोव
हाणाय हिंडइ बंधइकडिपट्टय मकज्जे ॥५६॥ गामंदेसंचकुलं ममा।
यपणीढफलगपडिबाद्दा घरा सरणसुपसज्जइ विहरइयसकिं
चणमिरिक्को ॥५७॥ नहदंतकेसरोमे जमेइउच्छोलधोयण अ
णाअजत्ते वाहइयपलियंकं॥ अइरगपमाणमत्थुरइ ॥५८॥ सोवइ
यसव्वराइं नीसट्ठमचेयणोन वाकरइ नपमज्जंतोपविसइ निसी
हियावस्सीयंनकरेइ ॥५९॥ पायपहेनपमज्जइ जुगमायाएनसोहए
रियं पुढविदगअगणिमारुय वणस्सइतसेसुनिरवेक्खो ॥६०॥ सव्वं
वनइ।विषइ।निरपेक्षुविरा।धनाकरतउ।मनमाहिशंकानआणइ।।इण।सव्वंथो०।सघलउ।अघ
वा।।थाइउपडिलिहइंनहीं।नयण।मज्ञायनकरइंसहइकु।राण।पाछिलीरातिसूतो।लाकांगाढइ।

मत्ता।करइ।मादंगा।म।मादंश।
दिसा।माहरा।कुल।इममांनइ।प
ढफलग।धावरसोली।सघइका
लिपा।टिपाटि।×लाटो×त्ता।दिक
वावरइ।।तहनइविषइशनिबध
घाइ।घरसरणपघरनीसारचिं
ता।करण।अथवा पूर्वगृहनउ।
स्मरणचिंता प्रसंगाकर
इ।अनइ। करइ।
जंनिग्रंथ।अ। नइंसकिंच
न।सपरिग्रहम षिकउविहर
इ।।५७।नहदंतप।आपणा।नख।
दांत।केश।राम।ऊमइप।जा।न
लणीसमारइ।अंघोलण।घणाइ।पं
।णीकरीहस्तपादादिकधोवइ।व
ाहडीपल्यंक।लागवइ।।वावहरइं
।अइरग०।म।स्त्तौहितलिसंथारइ

अधिकवइं।वय।जे हवइ।।तेदक्खइ
।परासवइं।पर।परपरिण।परा।या।अव
र्ण वाद।बालइ।निठुर।नी।वरकर्क
श।वचन।।बालइं।विगह।राड।पा।
दिकविकथा।करइ।।रुष्ट।विउंमंता।
।।जो।मंत्र।विद्या मित्रयोगप्रस्त्री
दवंता।।अ धिष्टातविम
द्या।कदी। उइ।।प्रुस
षदेवता।।अ धिष्टाता।मित्र
कद्दीशअकृष ध्यादिकना।जा
गप्रक्ती।अदिष्टी।।करण।।तेजोग
।।कदीयइं।तेगल्वं।।विकल्हारे।
गनउंपतीकारणतलाकरइ।वली
स्वयकर्म्म।स्वतकर्म्मरी।घडी।राष
गढस्तकइं।आपइ।अरवरा।लस
लियाकइं।आरवरसी।षवइ।जाति

कादकरइं।ॐफकारा।।कलहकरइ।।नरूउ।लुषा।ता।द्वरूउगणगद्व मिधाडइ।।लदकारइं।।
१रिवन्नाइयं।।छिन्ना।नीविजगाऊ।।ऊपदरउ।आणिउ।जिमइ।अनइ।का।लाइण।काला।तीतवित्त
रइन्निजंपदरऊपदरउकाला।तीत।अविदिन्नं।।अणादीधउ।।लामवइ।अणुण।अणुऊगिडस्तूर्थि

घाव तुवद्धिं नापढणनयकाइसज्झायं सद्दकराकॅढकारा लहुत्तु।
गणलउतितिन्निग्ना ६१ खिन्नाइयंभुंजइ कालाइयंतादवअविदिन्नं
गिण्हइअणुइयसूरा असणाईअ हवउवगरणं ६२ उवणकालनवव
ई पासवद्विवसंगयंजणाइ।। तिव्वमवन्नाणरउ नयापदपम।
ऊणासीला ६३ रीयइअ दवदवाए मूढापरिभवइतह
यराइणिए परपरिवायंगिण्हइ ।निठुरभासीविगहसीला ६४
विज्जंमंतंजोगं तगिच्छंकुणइंत यकम्मंच अक्खरनिमित्तजीवी अ
रंभपरिग्गहेरमइ ६५ कज्जेणविणाउ. ग्गहं मणुजाणावइ।।
दिवसेतुसुयइ अज्जियलाभंभुंजइ इत्थिनिसिज्जासुअभिरमइ ६६

षनीमंत्रअष्टांगप्रकारावइकरी।।आरं।।आरंभछव्याद्दिकनाविणासतरुनइविषइरम
इ।।बध्यकाजेण।काइविणादेवताद्दिक।अवग्रहमागीस्तकइ।दिवसिसूयइ।आर्यिकालालाल
गवइ।स्त्री।निषिद्या।बसइरमइ।।६६।। ।। ।। ।। ।। ।। ।।

।अइनाद्दिका।अथवा।वस्त्रादिका।
लिइ।।६४।उवणकालण।।स्थाप
नाकुल।।जेघुरुनइ।मोरइंका।
जिआवइं।।तेकुलराषइ।नही।।निद्द
कारण।विहरिवाजाइं।।तेदेकुले
जाईनीवसगा। लाण।बालन
इं।कारिला नइ।।तलणी
स्थापना। ऊलनि
दकारणनि। जाईवेउ।प
सात्र।।पास्त्राम इसंगि।मिलइ।
निद्व।।नित्यसदीव।अपध्यानरा
गादिकरूपचीतवइंनइ।यउ।अन
इ।पणकादृष्टिइं।जोवउप्रमाजिविउ।
राजादरणा।दिकनकरइं।।६।रीयइ
०।कूनावलाद्दी ३० उइ।मूढो।।मू
ढस्वर्वज्ञानादि। करान्नकरी।।जो

कारणिजिमइ।नधारण।रजोह
रणसदानधरइ।।६४।।अगमप
।।संवत्सरपर्युषणाइ।अगमतप
नकरइ।चउमासिकि।छठनक
रइ।।निःपारवी चउद्दिसि।
चउथनकरइं।।म सायाण्सात
वकूलधिक उ।मासक
लपिवि। हारन
करइ।।। ७गनीयं म
गिल्हइ।पिंडिउं ग।।नित्यआ
द्वारपकाण घरिलिइ
।एगागीएाम कालीधिक।
उरहइ।।गिर्दस्वना।घरनी।वातक
रइंपाव।।जोतिष्क।विद्यकादि
कपापश्रुतपढइ।अहिण।लोक।

उवारए।उच्चारप्रश्रवण।।खेलसिंघाणनाकमल।अना।भुक्ता।।अजयणां।।लीरइ।।संथारा।ऊपरिषकवा
।विमण।संथारणसहितपडिक्कमइं।।६७।।मकारइ।।पथिमार्गि।प्राशुकानस्तरूता।।अन्नपाणीनी
जयणा।नकरइ।तलिउमार्गि।चालतउपाणतलियानउपरिभोगकरइ।।चरइउवथकिलिविष

उच्चारपासवणं खेलसिंघाणएअणाउत्तो संथारगउवहीणं पडिक्क
मइसवासणाउरणा ६७ नकरइपदेजयणं तलियाणंतहकरइपरि
भोगं चरइअणुबद्धवासे सप क्खपरपक्खउमाणे ६८ संजोयइ
अइबहुयं इंगालसधूमगंअ णट्ठाए भुंजइरूवबलट्ठा नधरइ
पायपुंछणयं ६९ अट्ठमछ ट्ठचउत्थं संवच्छरचाउम्मासपा
रकस नकरइसायबहुलो नयविहरइमासकप्पेणं ७० नी
यंगिण्हइपिंडं एगागीअच्छएगिहकहो पावसुयाणिअहिज्जइ अ
हिगारोलोगगहणंमि ७१ परिभवइउग्गकारी सुद्धंमग्गंनिगूहई
बालो विहरइसायागुरुओ संजमविगलेसुखित्तेसु ७२ उग्गाइगा

नाभवरंजिविवा।मउअधिकारकरइ।।परिभव।उग्रकारी।उद्यविहारी।रहइंपरा।लवइं।सूत्र
०।मूलउमार्गगोपवइ।बाला।विहरइ।साता।गारव।धिकउसादा।विकीत्रिविहरइ।।जिणि
त्रिसंयमनपलइतिणिरहइ।।७२उगगाइए।।गाइ।अथवा।हल्लवइसादिगीतगाइ।ह...।।

दारकरइ।सपक्षपरपक्षपरिपक्षप
रपक्ष।नमादात्माणकरी।।अथवा
बीजातीषक्षकरी।आऊलक्षि
लाघवकरतउ। ...तिदंआ
पमनिमित्त। ...तवजा
इ।।क्षपसंघा... ...उप्रमुखव
ाया।सुमली ...अतिप्रमाण
ऊपक्षि ...रउजिम
इंइगाल ...रूनीव
सुकृपरि।राग ...सवनउ जि
मइ।।सधूम ...विरूउंई
अंगमसीकव ...ऊपरिमुहम
वाकाइतउजिमइ।स्नेषावदना।।
कारणपोषणजिमइता।अणगाए
।कद्दीकहा।सुडइण।रूपबलनिम

जंकाई। वस्त्रादिक। दिइं लिइं॥ उ
इ गुरुपरिताप॥ गुरु जवारइं ब
इ। तत्रिय्यास्त्वानीपाटिकं ब।
लादिक कल्प डा। बालायथि
कां सहू यु। रुना। वंदनी
कइ जिकइ। त वावरिवानदी
। कित्तिअप। गुरुबोल
वइ ताह रवि। न
य नक्खनन बोलइ। तु
कारइं। एकवच नबोलइ॥
बालावइ। प दसणी॥
अविनीतकद्दी जइ॥ गुविउ
। लद्दीण गर्वलिद्ध जइ। गर्वितसाद
कारलद्धी। विषयादिक नइ विष
इलालीजइ॥ ३७ गुरुपच्च। गु

असुखडाउ। ऊघाडइ। माकलइ। सुद्दिद मइ कंदर्प। करइं। परस्द्दइं इ माव इ। गृहस्थनां कार्यचीन
वइ॥ उसन्नादिक नइ आज्ञा दिइं। अथवा लिइं॥ ३२ धम्मकप॥ लोकरंजना। नणी धर्मकथा
अहिज्जइ सीष। घराघरं॥ घरिघरि कहतउ निक्कालमइ। गणणाणा॥ मदात्मा तु उपगरण॥ अ

इह समईय असंखडाइं कारइ कंदप्पं । गिहकज्जचिंतगो वि य उसन्नो
देइ गिण्हइ वा ३२ धम्मकहाओ अहिज्जइ घराघरं भमइ परिकहंताय
गणणाइ पमाणेण य अइरित्तं वहइ उवगरणं ३३ बारस बारस
तिन्नि य काइय उच्चारकाल भूमीउ । अंतो बहिं च अहियासि
अणहियासे न पडिलेहे ३४ गीयत्थं संविग्गं आयरियं
सुयहरं वलइ गच्छस्स । गुरुणो य अणापुच्छा जं किंचि वि देइ गिण्हइ
वा ३५ गुरुपरिभोगं भुंजइ सिज्जा संथारउवगरणजाइं । कित्तियतुमं॥
ति भाससि अविणीओ गुव्वित्तो लुद्धो ३६ गुरुपच्चक्खाण गिलाण सेहबाला
उलस्स गच्छस्स । न करेइ नेव पुच्छइ निद्धम्मो लिंगमुवजीवी ३७ पहग।

रु। आचार्य। पचखाणी॥ अनशनीय। अथवा बीजाइ तपीया। अथवा गिलाण॥ रोगी। सहपा। नव
दीक्षत। चलउ। बालउ। लक्ष्य। आकुलत्रिगछ॥ तदनउ। वयावच्चादिक कर्त्तव्य न करइ। न वउ।
छइ॥ गच्छ संबंधि श्री श्रावक नदी निद्धम्म॥ निर्धर्म लिंग नइ श्रमणि उपजीवइ। आजीविका करइ॥ ३७

नइ। प्रमाण॥ तदनी निरतिन करइ
॥ अधिकाराघइ॥ धबारसण। काय
भूमिकाइं वसति॥ माहि। अनइ व
सति। बाहिरि वं४ तिम उच्चार
भूमिकाइ। इमा हिवा
हिरि सईहो अ सहायी गणइ
म४। अन। इइ। कालय
दण। ये ण्य। भूमि
एवं॥ २७ स्थंडिल प्रतिले
खइ। पडिलेहइ। नही॥ ३४ गी
यछ। गीता र्थ अनइ सं
विगी आचार्य आपणा गुरु
इं। सूकइं अनइ गछ रहइं सीखा
मणा देतां वल ३१ इ। सा स्वउं घाइ
। अनइ गुरु। हइं विणु पूछ्या

पहगमण। पथगमन मा रिगि चालिवउं। वसहि ण। उपाश्रय। रहिवउं। आहार विहरवा। जिम वासुयण
पसूवा। थंडिल्ल। थंडिल जामा धिवा वावरिवानी विधि। परिठवणं। अ सूजता नांतपानी परिठ विवा
नी विधि जाण नउ न करइ॥ अथवा न जाणइ। अज्जा। आर्या महासतीनउ वरत्ताविवउं। तेहनी

मणवसहि आहार सुयण थंडिल्ल विहि परिट्ठवणं । नायरइ नेव जाणइ
अज्जावट्टावणं चेव ३८ सच्छंदगमण उट्ठाण सोअणो अप्पणेण च
रणेण । समणगुणमुक्कजोगी बहुजीव खयंकारो भमइ ३९ बत्थि
व्व वायपुन्नो परिभमइ जिणमयं अयाणंतो । थद्धो निव्विन्नाणो
न य पिच्छइ किंचि अप्पसमं ४० सच्छंदगमणउट्ठाण सो
यणो भुंजई गिहीणं च पासत्था इट्ठाणा हवंति एमाइया एए ४१ जो
हुज्ज उ असमत्थो रोगेण व पिल्लिओ झुरियदेहो । सव्वमवि जहाभणि
यं कयाइ न तरिज्ज काउं जे ४२ सो वि य नियय परक्कमववसायं धिइब
लं अगूहंतो । मोत्तूण कूडचरियं जइ जयंतो अवस्स जई ४३ अलसा स

वारागि करी पीडिउ। झुरित। दह जराय स्तादह। सव्व। सघलउं। श्री सर्वज्ञ नइं भणिउं। क
दाचित करीन सकइ। चारित्र क्रिया मागकरी न सकइ॥ ४२ सो। विरय। तेह। जइ तिम। अथवा
अलेरउइ। आपदाइ पडिउ हुंतउ। निय इण। निज आपणउ पराक्रम वीर्य विवसाय समयर नउ

त। जिन आज्ञा मनुअद्धंकारादिक।
दी। षनइ ऊषध्मा समान॥ तनजा
णइ। ध्यहोण॥ स्तब्ध। द्द्ध। करीघ
टिम डणा वइ। निविन्नाणा॥
ज्ञानि करी रहित। नय पिउ
अप्पणा समं। उ को ई न मांन
इं। मघलउं। जाणउ आप
घी हव। उं। जिमा
नइं॥ ४० स। छंद। स्वछं
दि। करी गम नउ ठाण। ऊ
वइ। सयइ। भुंजई। गृहस्थम
हि जिमइ। तहनसा जान डि।
म। इत्यादिक। पासत्था दिक
नी स्थानक जइ॥ ४१ जो जइ
जो असमर्थ अक्षम। दह। अथ
उद्यम धिईण। धृतामन नी समर्थ

विधि जयणा। संमाचरइ नहीं॥ ३८ ए
सछंदण। गुरुनी आज्ञा पाखइ स्व
छागमन विहार करइं। स्वबाइं। ऊ
ठइ। बइसइ॥ स्वबाइं। सूयइ॥
अप्पाणेण। आत्म बुद्धि कल्पिउ॥
जमुवरण। आचरण। तीणइ जिहा
रुइं। समणण॥ श्रमणमा हाम
ना। ज्ञानाम दिक। गुणनं
उ य्याग। बापाइ।
मुंकि ‍त्युं बारा इ। बहुजी
वण। बहुजीव नउ क्षयकरन
उ भमइ। हींडइ॥ ३९ बच्छिवण॥
वस्ति चर्मनी ना घडी जिमवाउ॥
करी पूर्ण घकी उपडइ तिम अहं
कारि पूरिउ। धिकउ। रूपडि उहं
डइ। कोइ जिणमयं। जिनम
न करतउ घकउ। अवच्छपय तिका

स्थिल। पतल्ला। अगूहंतो। आणमपवतउ घकउ। मर। कूट चरित्र माया मूकी नइ जइ। यतिय

हि। पवित्तो लज्जइ। व्यारिज्जइ। व
संयोगकर्त्ता। जिमए। घणा दो
षत्ति मति मयुरुन्नि द्विजो णिवा॥
८७ गच्छगओ। गच्छगता। गच्छमा।
हि वसइ। एकलउ नही मध्य अ
नुयायी। मर्यादास्थितय। अनु
यायी धरइ। मनउच्छिक
रइ। गुरुण गुरुनी आज्ञा
नइ वि... स्तत्पर
। अनियत ... नियतवासी
मासकल्पादि कविहारकरइ
संयोगए। पदपंच पदसंयोगइ
बिज त्रिज चिज पांच नइ मलि
वइ करी नइ। जालोगि वंतमहाम
। तसंयमना आराधक कहिया
॥८८ निम्मम॰। किसाऊ परइम
मतानथी। अनइ अहंकार नथी॥

दीजइ॥८४ अलसा॰। आलस धर्मकृत्त्वि। नइ विषइ। सठ॰। माया विउ। आपण उ कर्त्तव्य प्रमा
द आवादइ॥ अवलिप्त सगर्वा॥ आलंबण तत्पर डि संगे। तिसउ। आलंबन लई प्रमाद करइ। अ
ति प्रमादी इसी परिस्थितिय कउ। सली॥ परिरहि उबउं। इसमा नइ। जइज कूडी परिस्थितंबउ। व
रूमाहा ... ... आमलि आपणउं युणवंतप॰ ... प्रकाम सप॰ दव

ढावलिन्ना आलंबणतप्परा अइपमाई एवं ठिया वि मन्नइ अप्पाणं सु
ट्ठियमि त्ति ॥८४॥ जा विय पडिक्कमणं माया मा सक्खिया इ सुद्ध करणं ति
गामम ज्झवासी ।सा सा यइक्क वइखवयुव ॥८५॥ एगागी पासत्थो स
च्छंदो ठाणवासि उसन्नो दुग ... माई संजोगा जह बहुया तह गुरु
हुंति ॥८६॥ गच्छगओ अणुओ । ... गी गुरु सेवी अनियय वासि आ
उत्तो संजोएण पयाणं संजम ... आराहगा भणिया ॥८७॥ निम्मम नि
रहंकारा उज्जुत्ता नाणदंसणचरित्ते एगक्खित्ते वि ठिया खवंति पो
राणयं कम्मं ॥८८॥ जियकोहमाणमाया जियलोभपरीसहा य जे
धीरा वुड्ढावासे वि ठिया खवंति चिरसंचियं कम्मं ॥८९॥ पंच समि

उद्युक्ता॰। ज्ञान दर्शन चारित्त नइ विषइ। उद्यमवंता। सावधान छइ। एगक्खित्त॰। जंघाबल रहि
त पण। दिक का रणकरी एकणि क्षेत्रि रहिया थका। खवंति॥ पो विला। घणा सवना कर्म प्रतइ
॥८९ जिय॰॥ जीत्या क्रोध मान माया लोभ अनइ। त्रुष त्रिषा दिक परीसह जेहे तो। ब
डा। अनइ जे धीर सादसी कां। ति रूडा वासं गलानवा सिर हिथका। दिरसं चित कर्मी क्षपवइ॥८९ पंच

उ माया वीजो णिवउ॥८५ जाविय॰। जाउं गध ले कडइ। आप
णइ वक्षि पाडी नइ। खाइ। वंचइ
। तत्रि जं गाम विचालइ। वसता
। कूड लगी। कप का कपट तवस्वी डि
मासा चइ॥८६ एगागी॰। ज
एकाकी ध ... मति धव रदि
तपासु ... स्था। ज्ञा
न दर्शना ... दिक नइं पा
स इवर्त्तइ। स्व छंदइ। जिम थ
घणा दोष तिसउ इ गुरुनी आ
ज्ञा नरहइ। थाणवासी। एक
इं जि स्थानकि रहइ नित्यवासी
उसन्ना। प्रतिक्रमणा दिक क्रिय
। नइ विषइ ढीली। लउ प्रमादी उ
दुगमाई पाजे उग दसुनिमा
समईया पा। पांच समति करी समता।

क्रू धर्म माहि न थी। नीणाइ। बोलिइ
धर्मि न थी॥ धर्मिनु। वचन। स्फुट।
प्रकट। अकुटिल ऋजु। धर्मण धर्म
न उ वचन पाधरउ। मा छन उ कु
रणा। जाणि॥९३ व। नवि धर्म॥ मा टउ
। आच्छा नादिक। आडंबर लगी न
छका। कहिइ। तिहा धर्म नथी। उत्को
डा॰। अमकी वस्तु मू कुइं देइ। जिम
अमुकउं एक। ... तादरउं का
ज करइ। वं ... चना। प
रवइ इंत्यारि ... वउं। कवडं
वा। कपट माया। ... इ धर्म निस धा इ
निच्छम्मो। सर्वज्ञि कहइ। धर्म नि
श्च भनिः कपट जइं माया रहितव
इ। सादव॰। देवस्वर्गलोकि मनुष्य
असुर पाताल वासी॥ दव सहितलो
क माहि॥ ९४ भिक्खू परिकुम दालसी
... ... गीतार्थ। ए क अगीतार्थ
। अभिषेक गणउपाध्याय। ... ता अ

नेतृ त्रिकरण उपति करी गुपता। उद्युक्ता॰। संयम बहु जीव नी रक्षात पबार दि। चरण पांच महाव्रत। अ नइ
पडिले हणादिक साधु क्रिया नइ विषइ। उद्यमवंता। एवंता। जम हात्मा कृइं वा सवर्य प। तप करवत्रि इंव
र्षा। तव सता पुनि आराधक कहिया॥९० तम्हा सव्वा॰। तदनणी सर्व जं वस्तु आश्री इसि उंजाणि वउं॥ वीत

या तिगुत्ता उज्जुत्ता संजमे तव चरणे वाससयं पि वसंता मुणिणो आरा
हगा भणिया ॥९०॥ तम्हा सव्वाणुन्ना सव्वनिसेहो य पवयणे नत्थि आयं
वयं तुलिज्जा लाहाकंखि व्व वाणियओ ॥९१॥ धम्ममि नत्थि माया न य कवडं
आणुवत्ति भणियं वा फुड पागडमकुडिल्लं धम्मवयणमुज्जुयं
जाण ॥९२॥ न वि धम्मस्स भडक्का उक्कोडा वंचणा व कवडं वा
निच्छम्मो किर धम्मो सदेवमणुआसुरे लोए ॥९३॥ भिक्खू गीयम
गीए अभिसेए तह य चेव राइणिए एवं तु पुरिसवत्थू दव्वाइ चउव्विहं सेसं
॥९४॥ चरणाइयारो दुविहो मूलगुणे चेव उत्तरगुणे य मूलगुणे छट्ठाणा प
ढमो पुण नवविहो तत्थ ॥९५॥ सेसुक्कोसो मज्झिम जहन्नओ वा भवे चउद्धाउ

चार्य सूरि। स्वयंप्रकुद्धतो। स्थविर कहइ। किचलउ कइ॥ इत्यादि इसी परिकु रूप स्पृ पिउर्त्तन। जो णिवउं। दि
वां। द्विविध क्रश काल ससमप्या रिष्वो ला। समसी जा ई जाणिवाउ॥ ९५ चरण प। चारित्रा तिचार द्विविध।
मूलगुण तिचार: मूलगुणि छस्थानक प्राणातिपाता दिक पञ्च वउ रात्रि भोजन पहिलउं प्राणातिपात नव प्रकार।
पृथ्वीकाय। अप्काय तेउकाय वाउकाय वनस्पतिकाय पांच इंद्रिय तेइंद्रिय चउरिंद्रिय पंचेंद्रिय करि कर
न उ तथा तिहा प्रथम व्रति॥९६॥

रा म न इ आ ज्ञानमादिक कूदा
वस्तु आश्री सर्वज्ञ आज्ञा अमुक कउं
सही करिउं। अन अन सर्व निषेध।
अमुकउं सही न करिवउं। द्रव्य
। क्षेत्र काल भाव नी अपेक्षा म
ग लाभ लक रिवउं इ छइ। अन
इ निषेध छइ। आयं॰। आय
लाभ व्यय। ... । वरतो लि
वउ जि। ... मला न
कांक्षी वा॰। ... णीउ लाभ
बहु उजाव इ जिम घणु ला
भ दइ इ तिम करइ॥९२ धम्म
मि॰। धर्म माहि माया नथी। मा
या। तिहां। धर्म तिहि न इ ए धर्म न
इ विषइ परकइ वंचना नी। लिख
की जइ। एहवउं। कपट। नथी॥
आणुवत्ति॰। आनर आवर्जव
नणी माउं गाउं। बोलि वउं ते

इ॥ आमिश्र। इमउ विस्तागनजाणइ। कप्पाप। आवस्तुमदात्मा। ऊइंकल्प्यागप। इमउस्वरूप। नजाणइ। आवस्तुआ नइदीधीधकीगुणकरइ। अगुणनकरइ। इमउ जोगायागप विलागनजाणइ॥ १जहठियए। क्षेत्रनउयथास्थितिस्वरूप। नजाणइ॥ आद्धत्रलक्ष बध अद्धाणए॥ अध्वइरमा ठीविहारक र्मकरताउ णप। अनइ जनपदसम मादिरता। जं परमेश्वरिकह्यी बइतनजाणइ। अनइकालनउस्वरूपनजाणइ। सुभिक्षकालिआवस्तुकलपइ। आनकलपइ। दुभिक्षइकल्प। अकल्पनजाणइ॥ २भावहिठए। भावआगिलानउस्वरूपनजाणइ। आसहनीरागहइ। आगिलानमांदउबइपनजाणइ। गाढइ। गाढइकाजिक

सखाकाणागाघस्थाधादादिक। अतीचारउतकृष्ट मध्यमजघन्य। इम त्रिधा। अघडिवादिकालदतउ। वउर्षविजंप्रकारिजइं। उत्तरगुणनउअतीचार। पिंडविशुद्धयादिक। गा वरपणइकरी। आनधकारजइ। दर्शन। अनइ ज्ञाननाअतीचारजइं॥ ए८ जंजयणजागीतार्थ। तायानुष्ठानादिकउंयत्नकरइ। अथगीतार्थ निस्रतउ अगीतार्थ। लइनिइयत्नकरइ। गछ बावइविइ। सिद्धांतनाअर्थविषारणइ। अजाण। थिकउ। तअगीतार्थ एतलेकत्ती व्याकर

उत्तरगुणाणागविदा दंसणनाणेसु अइइइ ॥८६॥ जंजयइ अगीयत्थो जं

अगीयत्थनिस्सिउजयइ। वट्टावइयगछं अणंतसंसारिउहोइ ॥८७॥ कहउ

जयंतोसाहू। वट्टावइयजोगछं संजमजुत्तोहोउं अणंतसंसारि

उहोइ ॥८८॥ दव्वंखित्तंकालं भावंपुरिसपडिसेवणाउय। नविजा

णइअगीउ उस्सग्गववा। इयंचेव ॥८९॥ जहट्ठियदव्वनयाण

इ सच्चित्ताचित्तमीसियंचेव॥ कप्पाकप्पंवतहा। जोगंवाजस्सजंहो

इ ॥९०॥ जहट्ठियखित्तनयाणइ अद्धाणजणवएयजंभणियं कालंपियनवि

जाणइ सुभिक्खदुब्भिक्खजंकप्पं ॥९१॥ भावंहट्ठगिलाणं नविजाणइगाढगाढ

कप्पंच सहुअसहुपुरिसरूवं वत्थुमवत्थुंचनविजाणइ ॥९२॥ पडिसेवणाच

लपइ। बइ। तगा दइशीघ्रइलूप कंकदीयइ। सामान्यकाजिकलाइं तअगाढिकल्पकदीयइ। सहु। असहुए। आ। पुरुषसहनसमर्थ सयरतउंधणी। आ। असमर्थ स्तुकमाल। वस्तु। आ वस्तु आचार्यादिकनइसामान्य आंगामांनिमहात्मानइ मानि। इत्यादिकस्वरूप अगीतार्थनजाणइ। ए पडिसेवणा प्रतिसेवनानिषेध

अनंतसंसारि उथाइ॥ ए८॥ कहउजए॥ साधुयत्नकरतउजगछवर्तावइ। संयमयुक्तजथनइ किम किमअनंतसंसारीउ नाथी उपचालना॥ शिष्यकीधीवलतउ उत्तरकहइ छइ॥ ए ए दव्वंखित्तंए। द्रव्यक्षेत्रकालभाव। पुरुष। प्रतिसेवना। इ। यतनाप। सचित्त चित्तादिक। स्वरूपनजाणइ। आ नइक्षेत्र नउलषइइ कालनजाणइ॥ वलीआ गिलानउ परिणामनजाणइ॥ ४ उत्सूत्रपयोगप। अपयोगपदलवाडउं नउलषइ। पपनी प्रतिसेवनानउ स्वरूपनजाणइ। अगीतार्थपणाइंकरीइ उत्सर्गए। उत्सर्ग। 33 अपवादादिकनजाणइ॥ ४००जहठिए। यथास्थित। द्रव्यअगीतार्थनजाण

नसकइ॥ उ॥ कहासाए। किमते अगीतार्थसाधु नियमसंयमनइविषइ उद्यमकरइ॥ कहवाए। अथवा। अगीतार्थनिश्रितनउ। अजाण। जयुक्त हुना॥ निश्रातहनइ। वर्तनि इतप। नियम। संयमानुष्ठानकरतउ। किम आपणउपरायउहितकरइ। ए। सर्वथा करीनसकइ। कहवाए॥ अथवा आतिक बालवृद्धे। दकरी आकुलित गछ। पूरितछइ तद्गछ। त। अगीतार्थयुक्तनउ आश्रित। सोहनइसाधिप्रवर्तावइ॥ आपअजाणहूंतउनावइ। तिमछवर्तावउ। अनथपामइ॥ ए सुत्तेयए। सूत्रसिद्धांतिइमकह्युंछइ। अपछित्तएपायश्चित्तए। पायश्चित्त। अपालागइ। प्रायश्चित्त। तपदिइ॥ पछित्तए॥ अनइजहनइ॥

वखनउकरिवउंतवउंधा। विजंप्रकारिछइ॥ आकुट्टि। प्रमादादार्प। इकल्प। ४ इणीपरिविजंप्रकारि। पापनास्वरूप। अगीतार्थनजाणइ। अनइ। पछित्तं। तादृपायजं प्रायश्चित्तकहइतउ। आपणपुं। परआनरानइ अनंतसंसारमाहि। रालवइ॥ ४ जहनामए। जिमकोइएक। उत्कृष्टनयणविहीण। अध

उत्थो। आउट्टिपमायदप्पकप्पेसु नविजाणइअगीउ पच्छित्तंचेवजंतत्थ

॥९३॥ जहनामकोइपुरिसो नयणविहूणोअदेसकुसलोय कंताराडवि

भीमे मग्गपणट्ठस्ससत्थस्स ॥९४॥ इच्छइ यदेसियत्तं किंसोउसमत्थुदेसि

यत्तस्स। दुग्गाइअयाणंतो नयणविहूणोकहंदेस ॥९५॥ एवम

गीयत्थोविहु जिणवयणपईव वक्खुपरिहीणो। दव्वाइंअ

याणंतो उस्सग्गववाइयंचेव ॥९६॥ कह सोजयउअगीउ कहवाकुण

उअगीयनिस्साए कहवाकरेउगछं सबालवुड्ढाउलंसोउ ॥९७॥ सुत्तेयइमं

भणियं अप्पच्छित्तेयदेइपच्छित्तं पच्छित्तेअइमत्तं आसायणतस्समहईउ॥

॥९८॥ आसायणमिच्छत्तं आसायणवज्जणायसम्मत्तं आसायणानिमित्तं

प्राउरुपाप लागेउं जइ। तदतनइ अतिमात्रघणउंतपदिइ। तदकृइ। श्रीवीतरागनी। माटीआशातनालागइ। जहइणी ती। एइ वीतरागनी आज्ञालोपी। आपणी बुद्धिइं। लावइतिमतपदिइतइ स्नेतइ॥ ए आसायणए। आशातनालागी। मिथ्यात्वजइ। अनइ आशातनानुं वर्जिवउं। तसमभ्यक्त्व आशायण। आशातनालागी दीर्घसंसारकरइ। ऊपार्जइ॥ १०॥ ॥ ॥ ॥ ॥श्री॥

उदेसासमार्थनउ। अजाण। कंताराण। भीमरोद्रकांतार। विषमा। अटवीमाहि मगापमारगा। पइछइ यप। एहवउ भिकउ। देशाकमारगनउ। देषाडिवउकरिवा। हीइइ। किंसोउप। ते किंसमार्थ देषाडिवा समर्थ। सर्वथानजइ। उगाइए। दुर्गविषमषाम। कांतरा दिकनास्वरूप। अजाणU तउ अषिदीनकिम देषाडइ। सर्वथादेषाडीनसकइ॥ ए एवमगीयत्थो। पाप वइणि। दिष्टांतिइं। जनिश्चइं। अगीतार्थ जिनवचनश्रीसिद्धांत। तदरूपिउज्वलदलनउदीवउ। तदइ जिअषिति। ताकरीरहितहूंतउ। द्रव्याए। द्रव्यक्षेत्रादिकअजाणनउहूंतउ। वलीउत्सर्गअपवादनउ अजाणथकउ। किमसाहूनगरनीवाट देषाडी

णा दिष्टा मध्य फल॥ कोई न जाइ कांइ०।
सुंदरबुद्धी ०। एहं सुंदरसूत्र रुइ इसिउं। आ
पणी बुद्धि। कलपी नइ चीतवइ इम घ
णउं इ। तपनी मसंयमादिक। कीधउं
तउ। रूडउं म। ला इ। लाकी। करूं थिनी
परि इं। अज्ञान कष्ट इ जिंघाइ॥ अफल
फल। १४ अपरिछिय ण। श्रुत सिद्धांत
नउ रहस्य। साच उपरी छिउ नथी॥
जाणइ। केव। लण। अनइ के
वलउ। एक लउ॥ अलि
न आणवघा। ण णिउ। सिद्धांत
नउ सूत्र मात्र। तद जिनइ बलिवाल
इ। जिम श्री सिद्धांतनउं सूत्र निर्युक्ति च
र्णि वृत्ति इम आदि गीतार्थ विरवाणिउं ब
इ। तिमन लिम सूत्र ना अक्षर मात्र ना लई
क्रियानुष्ठान करइ। तेहना तप क्रिया
कीधा। अज्ञान तप कष्ट मादि पफइ॥ १५।
जहण जिम मार्गि वाटवा रूरहइ। विउ
षमार्ग ना अदिनाण न कहइ। तालग

१ पादामाण। अगीतार्थ धकउ जि आपणी बुद्धि तपनी मन इ विंध इ यन्नस्व पकरइ। अथवा अगीतार्थ गुरु
नी निश्राइं तपन नियम। क्रिया करइं। अनइ अगीतार्थ थि कउ। ग ठ्ठ पाल इ वत्री बइ। अथवा॥ जा का
अगीतार्थ नि इ गछ सार दिइ। प दविइ। आचार्य थापइ। ते हनइ ए दोष॥ ११ अबहूण। जंब जस्सूत नही। अ
नइ तप स्वीत पकरइ। अति गाढा तप करइ। अनइ अगीतार्थ थिका। मीता
कुव्वइ दीहं व संसारं १० पएदामाजड्डा। अगीयज्जुयं तस्स गीय निस्साए वद्द
वइ गच्छस्स य। जोयगं एं दइ अगीयस्स ११ अबहुस्सुए तवस्सी विहरिउं
कामा अजाणिऊण पहं। अवराहपय सयाइं काऊण वि जो न याणइ
१२ दसिय राईय पाक्खिय वयाइ। यारय जो न याणई अविसुद्ध
स्स न वड्ढइ गुणा। सेढी तत्तिया। गइ १३ अप्पागमा किलि
स्सइ जइ विकारइ अइडक्करं तु। वं सुंदरबुद्धीय कयं बहुअं पि
न सुंदरं होइ १३ अपरिछियसुयनि हसस्स केवलमभिन्नसुत्तचारि
स्स सव्वुज्जमेण विकयं अन्नाणतवे बहुं पडइ १४ जह दाइयंमि विपद
तस्स वि सामपहं सयाणंता पहिंते किलिस्स इ विय तह लिंगायारसुय
इं पढिउ। वाटवाउ॥ कउ पामइ। स्त्रूप क्षपादिक करी॥ तह लिंगा०। तिम लिंगी रजोहरणादिक वेषइ। अ
पणी बुद्धि क्रिया करइ॥ च क्षादिक वखाणिया अर्थ नमो नइ। एकला सूत्रत्र। ऊपरि चालइ। ते वाट वा अनी
पहिल्ल उपामइ॥ १६॥ ॥ ॥श्री॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

र्थ पाघइ विहार करइ। आपणा आग
लिमाइ। अजा०। मारूपथ समय गत्र
जाणता। अवरा०। अपराध पद अती
चार तहना सइं। आ बा करी। नजाण
मइ अमका। अमका। अतीचार। की
धा। अबहुश्रुत तपसी॥ १२ दसी रा
ई। पाक्षीय पा। दसीय० दिवस संब
धीया। अतीचार। राईय०। रात्रि सं
बंधी। आ अती चार। नी शु
द्धि। प्रायश्चि त्त। अनइ
उतना अतीचा र। जनजा
णइ। अविणा श्रा। विशुद्धा कृष्ट
विहार हइं। गुण ज्ञानादिकनी श्रे
णि न वाधइ। उत्कर्ष न पामइं। तत
ली जिरहइ। आ गिला गुण गुड इ
मुडइ जाइ॥ १३॥ अप्पागमा मा०
। आल्पागमश्रु ३४ ल्पश्रुत झ
घोडा सिद्धांत न उ धणी के
तीवार इं अति दुक्कर तप। मास क्षप

लाविज्ञान न जाणइ। लोका
मादि गुरु विना। न जाणइ तउ
लोकातर मादि। कहि वउ। कि
सउं॥ १० जह उच्छू। जिम गुरु
कहइ। तणी नइ। महात्मा तप
सयमानुष्ठानइ। विषइ। उद्य
म करी जाणइ। कषायवा
दी घकउ। कद मी। जोण
इ समगू। अ नुष्ठानप
रीवइ। तिम। व। कमावद
शति। अनरानइ। अनुष्ठानादा
षी। तसम हकरी न जाणइ। २० मि
थ्यात्वि०। शिल्प वित्रादिक। शास्त्र
व्याकरणादिक। जाणं जाणतउ
रूतउ। जक्रिया करी प्रवर्तइ॥ न
ही। तशास्त्रन उ। व्यापार न करइ
। तन। तहनउ। लाभ फल ना लाग
वइ। ईय अऊण। इम अयन मान य
त्रा। आण कर। तउ। घकउ। फल। मा

६ कप्पाकप्पं०। तश्रुल्प सिद्धांत लगइ कल्पि। अकल्पि। न जाणइ। अथवा। कल्प मास कल्पादिक
। ना स्वरूप न जाणइ। एषणा आहार नी। शुद्धि। तन जाणइ। अनेषणा। न जाणइ। चरण। अ
नादिक॥ ७० करण पिंडविशुद्धि आदिक॥ ७० बाल। शिष्य नवदीक्ष विधि सामाचारी। शिवाउ
मित्ता १६ कप्पाकप्पं एसणमणेसणं चरणकरणसेहविहिं पायछित्त
विहिंपि य दव्वाइगुणे सु य समग्गं १६ पव्वावणविहिमुट्ठावणं च अज्जाविहिं
निरवसेसं उस्सग्गववायविहिं अ याणमाणो कहं जयउ २० सीसाय
रियकमेण य जेण गहिया। इं सिप्पसत्थाई नज्जंति बहुविहाइं
न चक्खुमित्ताणुसरियाइं १८ जह उज्जमिउं जाणइ नाणी त
वसंजमे उवायविऊ तह चक्खुमि त्त दरिसण सामायारी न याणंति
मिप्पाणि य सत्थाणि य जाणंता वि य न जुंजई जो उ तेसिं फलं न भुंज
इ इय अजयंता जईनाणी २० गारवतियपडिबद्धा संजमकरणुज्जमंमि सी
यंता निग्गंतूण गणाउ हिंडंति पमायरन्नंमि २१ नाणाहिं वरतरं हीणा
कसूपना ला गवइ॥ २१ गारवतिय०। गारव त्रिक। त्रिहुं। गारव। प्रतिबद्ध संयम। षट्जीव। नी रक्षा
करण पद्यण। दिक। तणा। उद्यम करवा। नइ। विषइ। सीदाता। ढीला। थाता हुंता। निग्गं। त्रूण०। ग
ण गछ माहि थ कउ नी कली नइ। हिंडंति०। आपणी स्वछंदा। चालतां प्रमाद रूपिया अरूणि माहि हिंडइ
। अनेक विषय कषाया दिक खापद वोरबइ। अनर्थ ना करणहार तहमा हि हीडइ। क्रिया रहित हुंता॥ २२ ना

। अ उक्कमा तन जाणइ प्रायश्चित्त
विधि। आलावना। दिइ ते न जाण
इ। दव्वा०। द्रव्य। क्षेत्रकाल भावना
गुण रूडा। विराम समग्र न जाणइ॥
१७ पव्वा०। दीक्षा विधि। उद्ठामण।
नी विधि। आर्या साध्वीनी विधि॥
निरवास संपूर्ण उस्सग्ग अपवा
द विधि। अजाण न उ थकउ। कि
मयन्न करइ॥ छित। अर्थ॥
किम साध इ॥ १८ सी
सायण। शिष्य आचार्य गुरु
कहइं। विद्या लि। इं। ईणइ जिम
मिइ प्रकार इं। जाणी ०। जाण
लाक इम। हि शिल्प विज्ञामादि
क शास्त्र। व्याकरण प्रमुख सीख
। जंता जिम जाणइ। न जंति०। अ
नेक प्रकार। बहुविधि। चक्खुमा
त्रिइ। दीठां हुंता आपणी बुद्धिइ

कउं।नारत्निवदहइ।पणि वंदना।
लागी।नजइं।विलेपनादिक।क
रीवंदनननउ।उपालाग।नलहइ
।एवं।इम।ज्ञानी।ज्ञानाधिक।।चा
रित्र।हीन।घकउ।ज्ञाननलागीब
इं।तणि।सुज्ञतिलागी।नजइ।
रहइ।संपागडण।जपगट।वस्तु।म
र्वलोक।ममक्क। निःस्पृग।नील
जपणइ।निषे हीवस्तु।अ
हारादिक। त्सवइं।
कापण।छक। यनयविष
इ।वएस्तुण।पांच। महाव्रत।न
इविषइ।जउद्यमनकरइं।पच।
यणाण।वीतरागनाशाशन।नइ
।विषइ।मजबधिकउं।पाडिव
उं।लाछवती।करिवानइ।विष
इतत्पर।हूतउ।वर्त्तइ।तहनइ।
सम्यक्तिपलव।असार।जाणिव
उ।प्रमाथीविर्ति।तहनइसम्यक्।

णादिकउ०।जश्रा निःशंकपणइ अधिक करइ।तववरत।घणउकरतलइ।हीणाण।कतीवारइ।चारित्रक्रिया
करीहीणउ।जइं।तक्त।पवयणण।प्रवचन।श्रीवीतरागनाशाशनक्तइं।भावइ।प्रभाव।नाकरइ।तमिहं
ततइप्रकाशिवइ।करीनय।णमासक्षपणादिक।सुक्तविणइक्कर।तपक्रिया।घणउंकरतउ।तरुड
उ।नहीं।जअल्पागमा।घाडा।सिद्धांतनउ।जाण।एतलइ।ज्ञानिवंतइषक।।२२नाणादियः।जज्ञानिमित्त
विज्जापवयणपभावगा। नयउझ्झरंकरंता। सुद्धविअप्पागमा।उविसा।।२२।।
नाणादियस्सनाणं। वुच्चइनाणपवत्तपवरणं। जस्सउण उज्झइंपि नविंतस्स
उच्चएकाउं।२३ नाणंचरित्तहीणं। लिं गग्गहणं वदंसणविहूणं। संजमहीं
णं वतवं। जोचरइतिरत्वयंतस्स।। ।।२४।। जहाखरावंदणसारवाही
।सारस्सलागीनजवंदणस्स।। एवंखुनाणीचरणणहीणा। ना
णस्सलागीनजस्सुगगइए।२५ सं पागडपडिसेवी कायछवएसुजो
नउद्यमइ पवयणपाडणपरमा सा मत्तीकामलंतस्स।२६ चरणकरण
परिहीणा। जइवितवंचरइसुडुअइगुरुयं सातिल्लवकिणंता कंभि
यछउहाणपयावा।२७ छज्जीवनिकायमहव्वयाण परिपालणाइजइधम्म
नथी।।२५वरणणा।कायकर्त्तरण।महाव्रतादिकरण।पिंडविसुधादिक।क्रिया।तहकरी।रहि
ता।हूंतउ।अतिसुष्ठु।गरूयउ।मोटउ।तप।चउमासी।छमासी।मासक्षपणादि।तपकरइ।सा।
तिल्लंण।तकीसिकं०।आरीसइकरी।बहुलणीबापा।उा।यमीणतिलमवी।आपइ।वलतउतिणि
जिकरी।तलनिय।तसरीष्ठुसंयमहीन।तपस्वीजाणिवउ।।२८छज्जीवनि०षइजीवनिकाय।अन

तनइंजाणिवइकरी।अधिकउज
इ।तहनउज्ञान।प्रजिश्य।प्रजाप
।मइ।जहलणीज्ञानधिकउचारि
त्रपवर्त्तइ।ज्ञानननउधणीज्ञानमि
घातागनउ।वली।क्रियाआदरइ
।वेराग्यपामइ।जहनइ।ज्ञानत्र
नइ।चारित्रविहूं।मादिएकउ।बो
लनथी।वीतवत्ता ।तहनउकि
स्यु।प्रउत्य।कांई ।प्रउत्य।।न
ही।।२४ना। णंचरि०
ज्ञानाचारित्र।। हीननिरर्थ
कजाणिवउं।लिं। गग्गहणादि
क।दर्शनिसम्यक्तरहित।निरर्थक
।संयमहीनतपनिरर्थक।जाणि
वउं।जाचरइण।जकरइ।तहन
उ।महूनिरर्थकजाणिवौउं।।२५।।
जहाखराण।। २५ यथाखर।ग
मन।वंदनना रावहउंघ।
इ।महाव्रत।पांच।तहमी।प्रतिपा।

ति।नीमलिई।नइयतिमहात्मा
।एग०।एकइजीव।अघवा।एक
इ।महाव्रत।विराधइ।तउ।अ
म०अमर्त्य।राक्ता।श्रीसर्वज्ञ।तह
नी।बोधिहणइ।आज्ञा।हणइ।।
आवतइ।सवि।धर्म्म।नलहइ।।
३१।तोहयउ।बोधिधर्म्मनीप्रा
प्तिआपणपा।क्त इ।हणी।नइ।
पच्छइकयाव० ।कीधा।अ
पराध।दोष ।तहक्त
इं।सरीषउ।।ए हज्ञानीरह
इ।प्रत्यक्ष।अभि ना।अनंत।सं
साररूपिउ।संसुडतिहांछनरपि
वलीपडाउ।थकउ।जरामरणभा
डयंअतिगहनमाहिनमइ।३३
जइआप।जतीथारइ।इणिजी
विवर्त्त०छाडिउ।अप्प०।आपण
उज्ञानदर्शनि।चारित्र।विराधिउ
।तितीवारइ।परअनेरा।ऊपरि।

लना।पालिवइ।करीयतिमहात्मानउ।धर्मी।बइ।जइछं०।जइतछजीव।निकायराषइ।नहीं।अन
इमहाव्रत।पालइनहीं।लणाणआदा।शिष्य।तउइमकहितमिउधर्म्म।एतलइ।तधर्म्म।कांईनहीं
।इसउला।।२७छजीवनिकायदयाण।जमाहात्माकहींनइ।छजीवनीदयारहित।जइ।विराधना
कर
म्मा जइछउणताइंनरकइ लणादिकानामसोधम्मा।२८। छज्जीवनि
कायदया विवज्जिउनवदिक्खिउनगिही जइधम्माउचुक्को चुक्कोगिह
दाणधम्माउ।२९ सव्वाउगजहाक्का इअमावा नरवइस्सघित्तूणं आ
णाहरणपावइ वहबंधणदव्व हरणंच।३० तहछक्कायमहव्व
य सव्वनिवित्तीउगिण्हिऊण जइ एगमविविराहंतो अ
मव्वरन्नादणइबोहिं।३१ तोह याबाहीपच्छा कायावराहाणु।
समियममियं उणवित्तवाअहिय। डिउ तमइजरामरणउग्गंमि।३२
जइआणाणंवत्तं अप्पणयंनाणदंसणचरित्तं। तइयातस्सपरेसुं अ
णुकंपानत्थिजीवेसु।३३ छक्कायरिऊणअस्संजयाण लिंगावाससमि
अणुकंपा।दया।परिणामनथी।।जआपणा ।आत्मा।जइंहितउनथी।।तबीजानइं।हि
तउकिमजइ।नजइ।।३४छकायण।छकायना।रिपुवइरी।आरंभजलपणइंकरी।जअ
संयतवाह्याकारिलिंगावतापमात्रजहकइवषमात्रजिछइ।तवरुअसंमं०।असंयमधिक

करइ।तहीधितमाहात्मानकही।
यइ।चारित्र।रहितलणी।नगिही।०
अनइ।रहस्थपणिनकहीयइ।ज
हा।लणी।माघउ।मुकिउ।माहात्मा
रउ।वषधरिउ।छइपतिमहात्मान
इ।वषि।छजीवधर्मी।विराधना।कर
तउ।यतिधर्मथिकउ।चूकउ।छक
उण।ग्रहस्थइछइ।जदानतेधर्म।छ
श।तहथिकउ।च कउ।उणसव्वाउ
ण।सघलाई।अ प्याग।अधि
कार।काप कमकउ
उ।राजा।नालेई मइ।पछइजा
राजानी।आज्ञा।उ० छेघइ।तिमम
इ।वहणवध।बांधन।द्रव्यहरणीव
रापहतउ।मरण।पणिपामइ।इत्या
दि।अनथी।ऊपजइ।एला।अशत
हछकायण।तिमममहात्मापाउ।
काइनीरक्ता।पांचमहाव्रतनउ
।पालिवउं।सीणइकरी।सर्वनिव

।डह विंन्न। वइ। तेन वरं ०। एकल
उं। आपणपउं। इंद्रिमइल्लु करं
इं। पापकूपाई इ। चंचण। चंचल।
विषयादिकनइ विषइ स्वभाव
वइ। जइ नउं। तस्सुद्धिविण॥ गा
ढउं इ। अजाणपणइं। आपणउं
। मयर। व्याया मता हि तापापरी
षहतपकरी ह रकपमाडतउ
। कूतउ। कांई गुण। नक
रइ। कर्म। कथारू
पनकरइ।३८। केसिं०। क
तला रहइं। परलो कततिइमर
णरूउउं। कतला। जीवरहइ। जी
वतविरूउउ। कतला कहइं। मरण।
अनइ जीव॥ नविउनयविहइरू
उ। जगीदंगकदेवनी परिइं। अहि
यं ०। कतला जीव कहइं। बिहइ। अ
हि इत्रां विरूयां। ३९। किं सिंव परो
लाग कतला कहइं। मरण। हिहउ

उ। रूपनउ मसूहु। खीराप। खार वलियं। तिला दिकनी राषि मरीचउं। मयण। तद्दन। जीवन
इ। मयलउं करइ॥ ३४ किं लिंग विं०। राजा हरणादिक। आडंबर। तद्दन उध रिवउं। तिणि।
किम उं। काउसीगइ। करउं। जयवारित्रक्रिया संयमि रहितउ। नकइ। गाणउ। जिम स्वा निलल।

त्ताणं बज्झअसंजमपवाहो खारामइ लेइ सुक्कयं ३४ किं लिंग विड्डरी
धारणेण कज्जं मि अट्ठिएवाण रायानदोइ समयामव धारंता वामरा
डा वि ३६ जा सुन्नवि णिविय॥ कन्थाग मो मूलउत्तरगुणाहिं ३
घट्टइ सयाखलिउ त्ति सीलिरको इम्मा ज्झलिरकं मि ३८ बज्झा
सम कलिहा तवरं मइला इंवलसद्दावा सुद्धविवा
या मित्ता कायं न कारइ किंचि गुणं ३९ किमिंववरं मरणं जी
वियमावि मिउ नयमावि सिं दहुरा देविद्धाय अट्ठियं कसिं विउलयं
पि ३९ किसिं च परालाग अवि मिं इहा इहलाग कस्स विडप्प
विलागा दो विहया कस्स इलागा ४० बज्झीवकायविरउ कायकिले

। अनेण। अनेरा। एक कहइ। इहलोकि। जीव तद्दहितउं। कतलां रहइं। बकं इहलोक। परलो
क हिरत आकइ। कतला कहइं। बहूलाक। जीवितमरण उरवा ह्रादया विणाउ जाणिवा। इहांआ
शिहिष्टांत। श्री महावीरनइ। श्रेणिक। अनयकुमार। कालकसूरी। एच्या रि ६०। बजीव०। जबजीवन

इ। मिहासंनि। वइगउ। षिकउ।
आडंबर। बन्ना दिकन उकरइं॥
पिणि। एह्वीनी गाकुराइ लक्षी।
गाडंडउ रंगमादिक। किहिन
जइं। उ। बत्रचामरादिकनइ। आ
पहणी धरा विवइ। राजानथाइ॥
३६ जा सुउ०ओ महात्मा स्त्रव्य
र्ष विहिरा षिइं। निश्चइंकरी
कूता गम। सिद्धांतन
उजाणकूउवइ । इमउ षिक
उं। जमूलगुण। उत्तर। गुणन।
उ। अघसमूह। असंक्लिलता। नि
रतीचारपणइ। अतीचारदोष॥
न आणा वइ। सालिषइण। तसाध
नइ। लेपइ। लेपवी जइ गिणी जइ
। ते। महात्मा माहि रिषायामइ॥
३७ वकादामि ३८ ०। घरमा। ज
वइं। दोषराग । हिष। अज्ञा।
नादिक। ताहकरी नइ संकलिहा।

पाजैश। अनइ। मूयां। सुविइ सुकृति
पामइं॥ ४२ अहियं ०। पापकर्म।
नाकरणहार। नइ। मरण अनइ
जीवतविविहइ ईपाड्या। अहिइ
याजाणिवां। जइमरइ। तउ। तम।
सि। नरकि। पडइ। जइ जीवइ। ब
हु। तउ आनक जीवनइ। वइरवधा
रहइ। ४४ अविइ बेतिण। वरिवि
विक। मरण। ईहइ। नय
व। परभने गजीव।
कइं। पीडाइह वणमतिइ।
करइनही। जसु विइए। जजीव
सुविहितमा वउं जाणिउं। इया श्र
लमोरूमार्थ। जाहा। ताकहनीप
शिसा अरियण। कालगसूरि।
यान ओविस्उ। मूलउ ना मिइं। जि
मतिणि सूलमि परजीवनी पी।
डानकाधी तिम। आनारई। उन्नम
नकरिवी॥ ४५ मूलगण। जिमाको

इविषइ। विरत। आरंनत्पाग। कायक्लेश। लोवन प्रपणउ। मलधरण। प्रमुखकरी। इहलो
कि सुखनघी। परलोकि। देवतानां। सुखकहइ। वली बीजउ। अर्थहि जीवनइ विषइ। आउ॥
कत। विणासकरइ। कायप। मासकूपणा हिपंचा मिकालेश्राक ष्टगरूआ॥ माटी। करइ। ता अज्ञान

म हिसुबुगुरूपहिं नज्ञतम्मइ मालाग हवइस्माग परालाग
४१ नरय निरूद्धमईणं दंडियमाईण जीवियं सेयं बजवा यं मिधिद
हि विसुद्धमाणस्स वरमरणं ४३ तव नियम सुद्वियाणं कल्लाणं
जीवियं पि मरणं पि जीवंता घेति गुण मुया वि उण सुगइं जं
ति ४२ अहियं मरणं अ हियं च जीवियं पावकम्मकारी
णं तमसं मि पडंति मया वेरं वड्ढंति जीवंता ४४ अविइ हंति य मर
णं नय परपीडं करंति मणसा वि जे सुविइय सुगइपहा सोअरिम
सुउ ज्ह सुलसा ४४ मूलग कूदंडगादामग्गा णि उव्वलघंटियाउ य पि
डइ अपरिंताता चउपयाते नियपसवि ४५ तद्दव उपायदंडग उवगार

एक। सूर्पमूलगउंषीलउं। इटउ। कूदंड। काल। उउ। दामग। गांड्र। उव्वलपटारवांधिवानी
मारंगी। घंटि। गलइ। बांधिवानी॥ एहवा उपगरण वरा हतउ। बीजाई उपगरण। मेलइ॥
पणिषा कइनही। उपव। पणि तहनइ घरि। पसु गालीइ। नथी नइ। सूद्धो पवडी हइ। ४६ तद्दवउ

तपना धणीदइं। नजप। तहकइ। अ
हला कूनघी। अनइ घणा कष्टरासि॥
हिवा। षकी कोइ परलाक उइ। ४१
नरयप नरक विषइं। निरद्धस्यापी
। मति। जाहा। तीहदंडी रायप्रमष
नइ। जीवतां॥ श्रेय मूया श्रविइ। न
रगि जासी। जीवतां सुखी वइ। बज
वायं प। कूणइ पि कर हइसमय रि
वकूघणा ग। वइनइते
विदना। अ हियासी
नघी सकतउ। अनइ ध्यांन।
रूडउ। वइति णिक री मूआ श्रविइ
सुगति जासी तिणि नइ मरण। श्रे
य। रूडउं॥ ४३ तव नियम०। जत
थि नियमसु स्थित। सली परिस्था
। ती हरहइं। जीवता वि। अनइमर
ण। कल्याणकारण जाणिवा। ते
जउघणउ। जीवइउ घणा गुणाक

३किसउं॥४७वरमउडं०।वरप्रधान
मुकुट।उत्तमपणानउ।किरीट।मस्त
कनउ।अलंकारधरइ।विंवइउं०॥
कडगवहिरषादिक।आभरण
करी।दीपतहालता।कुंडल।आ
भरण।बइ।इमउ।आकइंइरूउ॥
हिता।पादशलगी।अनइ।पराव।
णहाघीउ।वाहण जहइंइनइंअ
इं॥५०।रयणु ०रत्ननीला
दि।करी।उ हला।ज
लहलताबत्री सालक्काव
मानवरप्रधानाव हुण।वजनइ।
धरणहारि।इंद्रिलाधात।वीतरा
गना।हिता।पादशआराधियान
फल॥५१सुरवइं॥०जंलरत्नवक्र
वर्त्ति।सुरपतिइंद्रातक्षमासारीभ
षीविभूतिऋद्धिपामिउ।माणुस
ण।माउपाला।कमाहिवरवंडउ

वतिमनिर्वविकीमहात्मा।जयणा।उपगारणामलइवस्त्रपात्राउंडासणाकंफाइत्यादिक।उपगारण
।मलइ।जयणा।नइका।जिमलइपणि।तम्हपतिहिजा।जयणा।नकरइ।जिमघरिजउ।वउपदादार॥
जइ।तकजिषीला।पावादिकउपणा।मलिवानीषपसारघकइइइनिरर्थक।जाणि वी।तिमजयण

णजइणकक्रमुत्तो जम्हाइक्किलिम्मइ तंचियमूढोनविकारेइ ४९
३ अरहंता भगवंता अहियं व हियं व न वि इह किंचि वारंति कारवंति
य घित्तूण जणं बला हत्थे ५० वयमंउणं तं दिंति जेण व थियाण कि
त्तिनिलयाणं देवाण विज्जं॥ तिपक्क किमंग उण मणुअमित्ता
णं ५१ वरमउडकिरीडध रा विंचई चवलकुंडला हरा
णा साक्काहिववपमा पेरा वणवाहणाणजाव ५२ रयणुज्जला
इं जाइं बत्तीसविमाणसयसहस्साइं वज्जहरेण वराइं हियवएस
णलहाइं ५३ सुरवइसमं विभूइं जं पत्ता भरहचक्कवट्टी वि माणुस
लोगस्स पहू तं जाण हियं वयणमाण ५४ लहूण तं सुइ सुद्धं जिणवय

।स्वामी।हूउ।तजाणि॥लोशिष्य।श्रीवीतरागनउ।उपादेश।आराधिवानउफल।जाणिवउ॥५४
लहूणतं०।लहीणं।जिनश्रीवीतरागनउ।उपादेश।श्रुत।कनइं।सुखावहअनइ।अमृतना
विंदु।आसरीषउ।नव्यजीवरूइं।आल्हादकारकपहवउलहीनइ।अप्पहिउ।आपणाआत्मा।फइं॥

।।अकरवउ।उपकरणनउ।मलि
वउ।निरर्थक।जाणिवउ॥४९अ
रिहंता०।अरिहंत।भगवंत।अहि
त।कार्य।अथवा।हितकार्य।इहां
।लोकमाहिं।किंचि।काइं।बला
कारिजनलोकहइं।हाथिलेइ
साहीवारइ।नही।करावइंनही
॥५०।उवएस णाणधम
नउ।उपदा मातींघ
कर।देवहिइ। जेणविजि
णि।उपादेशिआ वरिहंतइ।
जइ।कित्ति।कीर्ति।नानिलय
गम।देवातहन।उलस्वामी।इंद्र
।हायइ।किमगण।अगला।शि
ष्य।वीतरागनइ।उपादेशि।आरा
धिइ।मउष्यमात्र।नाम।टा।ग॥
कघाईजन ३१ ग्राकहिव

रमिइकरी।मुकुटकूपिथउ।विश
पापसवडइ।जहनइ।नगतिनी
।कत्ताबलाईइं।करी।जहनइं।आ
भरणकलहलडउइं।महस्मण।
इमवंमहस्रनयन।इंद्र।सता।ति
रंतर।वांदिवा।आवइ।पगुणना।
प्रमाण।जाणि।५६ वाशिकवं०।
चोरीवंतनाणर। इइं।वीचा
रिवउ।कूट। ववन॥
नवं।कूडउ।बा लिवउ।क
पटमनिइंमायान उं।चीतविव
उ।परस्त्रीपतलां।पापनइ।विषइ
।दारुणमइलीमति।हइ।जहा।
नी।तस्सण।तहजवोयाहिक।
इहालाहिपरला।कि।अहिं।
यां।अनइवली।लाकजनकह
इण।पापीअहइप।मुषा।इमउवर।

हितकारिउ।धर्म्मीउष्टाउ।वीतरागनइ।उपादेशिकरिवउं।अहिपण।अहितनिषद्धिंसादिक॥
कर्त्तव्यनइ।विघइ।मनइ।नदेवउ।वचन।नइकायानउ।कहिवउं।किसउं॥५३हियमण।आपणपा
रहइं।हितकारिउं।अनुष्टानकरतउ।कुतउ।कस्मणगुरुआचार्यकल्यप्रधानत्वानकि।कणणकनइ॥

णवणसममयविंदुसमं अप्पहियं कायव्वं अहियपरमणं नदायव्वं ५२
हियमप्पणो करिंतो कस्स न होइ गरुउ गुरु गाम्मा अहियं समाय
रंतो कस्स न विप्पहउ होइ ५३ जो नियमसीलतवसंजमेहिं जु
त्तो करइ अप्पहियं सो देवा यंव जो सीसमिहवउघउ
णा ५४ सावायुणाहिगणे १ गुणाहिअस्स जहा लोग
वीरस्स संतंमउडविउवा स हस्सनयणा सययमइ ५५ वो
रिक्कं व णाकूडक्कवडं परदारदा रुणमइस्स तस्स चिय तं अहियं
॥ उणाविवरंजाणावहइ ५६ जइता तणकंचणलिहुरयण सरिसो
वमा जाणा जाव तइयाते उविहिप्पा अहिला सादववहरणंमि ५७

वहइ।दाघांकूपशिफाउ।जिम॥५७जइता०।तणकांचन।अनइ।रत्नपहलेश।नइविषइजहन
इ।समभिन्नमारी।पांवइ।नईयाप।ततीयवारइ।जनिस्वइअहिलाप।पराया।इम।अपहरइ
नही।वंचवानउ।अहिलासनकरइ॥५८॥ ॥

नकइ।मविजंकइं।गुरुस्वारीषउंइ
ज्य।घाइ।अहियंमण।अहित।पाप
उष्टांन।समाचरतउ।कणनइपरवा
रहितअविशाशनीनघाइमगलान
इघाइ॥५४जाणिणज।नियमिम्मा।
लितपिकरीयुक्तघकउ।आत्महित
करइ।तादवजिमलोकमाहिशजा
इं।अनइजनाला किमीसमाघइ
कीधइवहिय। इ।सिद्धार्थवितु
।मकिसव। जिममांग
लिकपणइ।क रीमाघवहइ
॥५५सावागुणा। ०मरूाकाजीव
गुणजिज्ञानादिककरीगणपण
णिवाजा।गउमान।वाजागउज्य
घाइ।जिमगुणांधिपकालोकमाहि
पमिद्ध।श्रीमहावीरतीर्थंकरकइं।म
नांतव।मंस्वातमकि।नइ।गाटइ॥

आजीवगगणनायगो रज्जसिरिं पयहिऊण य जमाली । हियमप्पणो करेंतो
न य वयणिज्जे इह पडंतो ॥५८॥ इंदियकसायगारव मएहिं सययं किलि
ट्ठपरिणामो । कम्मघणमहाजालं । अणुसमयं बंधई जीवो ॥५९॥ परप
रिवायविसाला । अणेगकंदप्पविसयभोगेहिं । संसारत्था ।
जीवा अरइविणोयं करंतेवं ॥६०॥ आरंभपावनिरया लो
इयरिसिणो तहा कुलिंगी य । दुहओ चुक्का नवरि जीवंति दरिद्दजि
यलोए ॥६१॥ सव्वो न हिंसियव्वो । जह महिपालो तहा उदयपालो
न य अभयदाणवइणा जणोवमाणेण होयव्वं ॥६२॥ पाविज्जइ इह वस
णं जणेण तं छगलओ असत्तो त्ति न य कोइ सोणियबलिं करेइ वग्घ

आजीव॰ । आजीविका मात्रि इं जि जीवइं । एहवणी । आजीविका । निह्नवनायक जमा
लि श्री महावीरनउ जमाइ । राज्यश्री परिहरीनइ । दीक्षा लेईनइ । सिद्धांत पढीनइ हियमप्प॰ । आ
त्महित करंता । तउ पणि श्री अरिहंतवचन । उथापता नही । नइ अरिहंत कारिनवा हियं हा । न य प॰ ॥

लोकमाहि वचनीयता न पडतां ।
॥५९॥ इंदिय॰ । इंद्रिय कषाय । गार
व त्रिणि आठ मद । एहे करी सय
यं॰ । सतत निरंतर । क्लिष्टपरि
णाम थकउ । कर्मरूपीआ । घन
मेघ तेहनउ महाजाल । जीवरूपी
या । चंद्रमा नइ । आछाद
इ । इस कार्म करी म
सउर । बीटाइ ॥६०॥ परपरि॰
॰ । परनउ परिवाद तिणि करी
विशाल विस्तीर्ण । अनेक । कंदर्प
परिहास विषय लागि करी संसा
रमाहि ला जीव इस मरति ऊविना
द रूप नउ । ताफडिवउं करइं । जी
वमति जाणइ बइं । जु आछइ समाधि
पामउं उ । पि ३८ णि । परमार्थ
इ तिइं मांहि । अरति बांधइ बइ

॥६१॥ आरंभपाव॰ । स्नानादिक
करी आरंभ । पापध्यान । तेणेउ॥
निरत । आसक्त । लोकिक ऋषि
तपस्वी । तथा कुलिंगीया । माया
वी ॥ दुहओ॰ ते उभय थाता ब्रष्टथा
तिनही । गृहस्थ इं नही । जीवंति
उ । केवल दारिद्र । दालाग्य
दीनदुन्नि । करी जीवलो
कि जीवइं । धर्मी धन
। नइं । अलाविइं । दारिद्र जा
णिवउं ॥६२॥ सव्वो नहं॰ । सर्व
लउइ । जीवधर्मी नइ । जाणि हिंसि
वउं नही । जहमह॰ । जिम महीपा
ल राजा परनवीइं नही । तिम उद
कपाल पाणीनउ रपवाल रांको
ति हिपरा न विवउं नही । माटा
ना हास विहूं जीव । ऊपरि दया
सारीषी करिवी । न य॰ । अभयदा

न जीवदया । न वंछनतवइ । जणोवमाणेण॰ जीवदया । उतमउ ध्रणी जण । लोक मिथ्यात्वी तेहना
इउ पमानि तमारी पऊ न होइवउ । जिम लोक करइ । आपणा नइ डपाइं है तइन इहणतां दोष न
ही ॥६३॥ पावि॰ । छगल । बोकडउ । अशक्त । असमर्थ । नणी हिसाइ । पमाडीयइ । इह वि । ब्रुजन ।
लोका कोइ । वाघ नइ । प्राणि ति करी । बलि चंडिका । दिक नइ का न इंदइं । पिणि तथा पिघिमा क ।

एण देवाणं ॥६३॥ वच्चइ खणेण जीवो पित्तानिलधाउसिंभखोभेहिं उज्झ
ह मा विसीयह तरतमजोगो इमो दुलहो ॥६४॥ पंचिंदियत्तणं माणुस
त्तणं आरिए जणे सुकुलं सा हुसमागम सुणणा सद्दहणारोग
पव्वज्जा ॥६५॥ आउं संविल्लंतो सिढिलंतो बंधणाइं सव्वाइं देह
ट्ठिइं मुयंतो झायइ कलुणं बहुं जीवो ॥६६॥ एक्कं पि नत्थि जं सु
ट्ठु सुचरियं जह इमं बलं मज्झ । को नाम दढक्कारो मरणंते मंदपुण्ण
स्स ॥६७॥ सूलविसअहिविसूइय । पाणीयसत्थग्गिसंभमेहिं च । देहंतर
संकमणं करेइ जीवो मुहुत्तेणं ॥६८॥ कत्तो चिंता सुचरियतवस्स गुणसु
ट्ठियस्स साहुस्स । सोग्गइगमपडिहत्थो जो अच्छइ नियमभरियभरो ॥६९॥

रिवी ॥६४॥ वच्चइ॰ । क्षणमात्र माहि ब्रपणी उं इ । समविकार जाइ । पित्त । पवन । अनिल वात । धातु रसादि
क । संनिपात श्लेषमादिक । नइ क्षोभ करी क्षणमाहि जीव जाइ । एहवणी । उज्झ मह॰ । धर्म प्रति उद्यम न
इ विषइ । उद्यम करउ । मा विसीयइ॰ । ढील म थाउ । तरतम॰ । जाण । एतरतम । जोग धर्मनी सा

मग्री पामवी पणादिक । एहो दुर्ल
भ जाणिवा ॥६५॥ पंचिंदिय॰ । पंचेंदि
यपणउं । मनुष्यजन्म आर्य मगधा
दिकादेश उत्पत्ति सुकुलप । धर्मीया
गणयादि कुल । साधु । समागम । श्र
वण सिद्धांत । सद्दहणा । सरधनी । आरो
ग्यपणउं । प्रवज्या । दीक्षा । एते लोक बो
लनी पामि । एतरत मायागक हिय
इ ॥६६॥ आउं सं प । आउषउं
षोडउं । कर तउ । सांक
लनउ । सिढि॰ ॥ सथरनां बंध
न आगणां नां बंधन । मोकलाइ । शि
थल टीला करइ । देहनी स्थिति । देह
वा सम्यक् नउ । अकृतधर्मी जीव घणुं
करइ मइ । आलोचइ । उपन्न कीधु
उं । जं किम थाइस्य । इस चीतवइ ॥६७॥
एकं पि॰ । एकउ निमाहरइ पोतइ स्य
धी । जिम सुकृत इ । सुगतिल जामी तह

नउ बल जइ । तेम दसुन्त्य जीव । नइ
। मरण । समइ । कोण दृढ करइ । अव
ष्टंभन जइ । कोई न जइ ॥६८॥ सूल
। विस॰ । सूल विष । अहि सर्प । वि
सूचिका । जल । शस्त्र । अग्नि । संभ्रम
। आकस्मिक भय । एतले करी । जी
व । देहंतर । संक्रमण । करइ मु
हूर्त माहि षिषा जीव लोभ मा
हि । आगि । ली । देह
। छोडि । नइ ॥ नवी देह । अ
वतरइ ॥६९॥ कत्तो चिंता॰ । जीण
इ बालपण दीनी परि तपस्या
चरिउ । क्षिमा सहित । अथ अण
सण साधिउं । जीणइं । गुणसुस्थि
तस्य गुण संयम तिहां नल पारि
रहिउ बइ स्ते गाइ उगति दव॰

लो कि तिहां जावा नइ विषइ दष्प वइ समर्थ वइ वली । नियउ अनेक प्रकार तास्य लियइ तेत
हि करी धर्मन उपाता ननि उभर वइ तहनइ विता किहां था जवइ समर्थ धा नजवइ ॥७०॥ ॥

इ। वैराग्य शम इ। पडिक्कमण। तत्र आगम
या वीउ पदेश वांछाक वैराग्यमय प
दीनय पढइ। आपा जा ना लईनइ
णीमा छिमा गालि थापइस इ। तिम।
धर्मकथानउ। करणहार लाकान
इ रंजवइ। अनइ। आपसमा दकरइ
॥१४॥ कहकहव। विवक्षिइं। जो
विशक्षिणि उ॥ इमितं। वि
मामिवउं॥ जिधर्मन
अनुष्ठांन किम क्रिमरूडां
करउं। कहव। विरू उ किम किम
नकरउं वालउं। कह० किम किम म
हरउं धर्मनउ। अनुष्ठान कीधउं॥ ब
जकयं०। बकूस नयगुण घणाला न
हितज मिइ। जे हियप। जनाणात
आपणा हीया संउं। संपसार आलो
च। वली वली। करइ। सा अप। तत्र
पणा। आत्मा। कइं। हित। अतिघण
उ। करइनी पडवाइ॥ १५ सिढिलो०॥

साहंति०। मासाहस पंखीया सरीषा जीव स्फुट प्रगट। उपदेस इ। कहइ। पणि आपणपइ। कर्म
नासारीपणाथकी। जिम उ। कहइ। तिम उ आचारी न सकइ॥ १? वग्घमुहं०। पतमासाहस। पंखीउ।
वाघनइ। मुखि। अतिगत। पइसउ। दांत। कचरइ। मांस काढइ मामाहस इस उं। बोलइ पणि जिम बो
× लंजइ। कोई न जइ। उत्तनिर तउ आपणी वासना करइ तउ। संयम कहीइ॥ १६ चंदुव्व काल०। जिमचं ×

॥ साहंति य फुडवियडं मासाहसमउणसरिसया जीवा न य कम्मभारगरु
यत्तणेण तं आयरंति तहा ॥ १० ॥ वग्घमुहं मि अइगउ मंसं दंततराउ कड्ढइ मा
साहसमउणं भणइ न य तं जहा भणियं ॥ १? ॥ परियट्टिऊण गंथत्थवित्थरं
निद्धसिऊण परमत्थं ॥ तं तह करेइ जह तं न होइ सव्वंपि नडपढियं ॥ १२ ॥
पढइ नडो वेरग्गं निव्विज्जिज्जा बहुजणो जेण पढिऊण तं त
ह सढो जालेण जलं समोयरइ ॥ १३ ॥ कह कह करेमि कह मा क
रेमि कह कह कयं बहुकयं मे जो हिययसंपसारं करेइ सो अइकरे
इ हियं ॥ सिढिलो अणायरकओ अवसवसकओ तहा कयावकओ सययंपमत्त
सीलस्स संजमो केरिसो होज्जा ॥ १५ ॥ चंदुव्व कालपक्खे परिहाइ पए पए

सिढिल ढीलउ जइ। अणाय। अनादर। आदर पाषइ कीधउ। अवसवस। उरनइ। नइ करी परिवशप
णइ कीधउं। आपणी धर्म्मनी वासनाइ कीधउ। कयावप। कदाचिल उ वाला नकीधउ। सययं०। सत
त निरंतर। प्रमाद विषयादिक गांबा। तइनइ। विषइ। सील स्वभाव। ऊह कइं। एहवउ। संयम कि मि×

लइ। तिम न करति म। अनेर उ जिका
बोलइ तिम उ। न करइ। तमासाह
स पंखीया सारीषउ। जाणिवउ॥ ११
परियट्टिऊण०॥ अनेक। परिवाड
लेईइ। सिद्धांत सूत्रार्थ सीनइ। तह
नउ। अर्थ। लई थाकरावीनइ। निद्ध
सि०। जिम कसव टइ। सान उक
सीनइ। निश्चइ कीउइ। ति
म सिद्धांतन उतत्व जा
णी। निश्चलकरी नारी कर्मी जा
व। तं नह०। तिम क रइ जिम। प्रमा
दनइ करिवइ करी। तसिद्धांत जा॥
णिउइ। काउगरउ नजइ। अनर्थ। हे
तनटा वानापडित सरीषउ थाइ॥ १३
पढइ नडो०। नटावउ। नाटक मा हि
वेराग्य ना श्लोक सूत्र नाधित पढइ॥
निव्विजि०। जीण उ उपदेश। घण
उ लोक संसारथ कउ निवीउ

इम॥ अथ गरढा पंखवाडइ। दिक्षा इइ। दिक्षा इइं। कथिउ जाइ उउउ थाइ तिम। प्रमादकरतउ साहामायु
णआओ हीण उथाइ। उपघ०। तिम वली। दीक्षा लतइ। घरबांडिउं। तेहमणी। उद्यम अनइ। संमान
। उपाश्रय। वइसइ। तेहणी विसुद्ध। अनइ। अंगनास्त्री। छांडी। एहतणी निरंगण कहीइ। एहवउ। थक
उ विषइ नी। वांछा करतउ ऋणि इ कर्म ऊपार्जइ। नइ० मननावां छिया विषइ। पामइ नहीं॥ थ रक

पमायपरा तह उग्घरविग्घरनिरंगणा य न य इच्छियं लहइ ॥ १६ ॥ नीउ विम
निभुच्छा पागइपयन्नदासमयकारी अप्पवयं जणंता जणस्स धीजीवि
अं जयइ ॥ १७ ॥ न तहिं दिवसा पक्खा मासा वरिसा वि संगणिज्जंति जे
मूलउत्तरगुणा अक्खलिया ते गणिज्जंति ॥ १८ ॥ जो नवि दिणे दि
णे संकलेइ के अज्ज अज्जिया मि गुणा अगुणेसु अ न य खलि
ओ कह सो उ करिज्ज अप्पहियं ॥ १९ ॥ इय गणियं इय तुलियं इय
बहुहा दरिसियं नियमियं च जइ तह वि न पडिबुज्झइ किं कीरइ नूण भ
वियव्वं ॥ २० ॥ किमगं तु पुणो जेणं संजमसेढी सिढिलीकया होइ सो तं चि
य पडिवज्जइ दुक्खं पच्छाउ उज्जमइ ॥ २१ ॥ जइ सव्वं उवलद्धं जइ अप्पा भाविओ

विय। तजो। वशिथिलपणउं। जिपडिवजिस्यइ। पछइ। दुक्खिइं। करी संयम नउ। उद्यम करइ॥ ८२
जइ सव्वं०। आहो सम्यक् उइत्थमव्वं। एम घलउ पाखिल उ कहि उ। अथवा जउ। ईमिद्धांताक्षरस्पा
उवलद्धं। साचउ परीक्षिउ। वइं। जइ अप्पा०। जउ आतमा उपशमि करी। ना विउ। तउ। तिम करिवउं।

दिक्कनइ। विषइस्त्रवलितसाति वा।
रनरूउ॥ तआत्मा हित किम करइ॥
नकरइ। १८ इय गुणिउ। धुरिसंवत्सर
। सुमन जिणा। इष्टांथा। धर्मदृष्टांन॥
गिणी॥ दषाडिउ उलियं पा। गायसुड़्का।
माला दिकनां। परिताणि उं। प्राणजां
तधर्मो छुष्टान सूकइ। नहीं। इति वज
धा। आनक पक्का शि आर्यमहा गि
रि प्रमुख। दृष्टांत करी। दिखा
डिउ। निय०। ति यंत्रींस
मिई कमाय०। गा रवइस्या हि
करी। निय त्रियं। तथा पिश्तिबुझ
इनही। तउ उन नि श्चइ किम मउं। क
रिवउं किमउं की जइ। तइ अनंत क
ाल। संसारमाहि रुलइ। रहइ। व
८१ किमगं तु०। हि जी ष्य जीणइ। सा
रिन्न लईनइ। सउउम श्रेणि। ज्ञाज्ञा॥
क्रियागुणनी। श्रेणि। ढीली। छंकी। ते
शूकस्तपा हिहीन जाणिवउं। मानै॥

लउरहित तणी॥ १७ नीउं०। नीतकु
ण क्रिमउं। कहइ। बइ। इसवाहत उ
रहइ। मननी श्रुति समाधि रहित त
णी निभुछा प। संघ। उरूषनी बोला
उइ। आपणपउ गाप वनउ। दीउइ। जि
हमणी। पाग०। प्रगट। अनइ। प्रछन्न। बे
नादोषनी समय तउ करण हार उइ। अ
पण लोकनइ। मति धर्म रूप रिअप्र
त्यय अविश्वास। रूपजा वत
उ। धीव। तेथि। कारणा
गय निश्चि। जीवत। ज्जीवइ॥
१८ न तिहिं०। धर्मनइ अधिकारिइ
वस पाष मास वरस प्रमुष घणउ प्रया
य अनुका कइं रूप उ। इम न गणीय
इ। जि मूलगुण। उत्तरगुण। अस्वलि
त निरतीचार त गणीयइ॥ १९ जो न
वि०। जि दिवसिइ। अहो रात्रि संकल
इनही। सम्पाप। बुद्धि इ। लषउ। नाजा
इय। केअय० मइ आज किस्या ज्ञान

र्मइजि।नइ।विपइ।स्विरक्रविवइं ॥८८ इह।जइण।जिमजिम।यम स्तयागमानउरइस्सइ।णिजं।जि मजिमसुविरि।घणउकालनएण धनमा।धुमाहिय।मिवउं।तहातइ ण।तिमतिम।मिद्या।दिक्र।पाताने।कर्म।।तइनेमा।रिस्मसूदवीपि उं।इंतउं।संजमo।संयमश्री॥ सिद्धाता।क्रा।क्रि या।अउघ नतेइविक उ।वहि न्नेतघाइएहला। इनारीक मीं।जीवसिधांतपदि।पघाकसंय। मघकीडीलाउघाइ॥८७ विज्ञाण्णा ण।विद्यासा।पकवाथना।धणीनइ। कघधाजा।दवपाथवायहराइ।अ नइ।ताहाउपाध।पाविण।द्वात॥ अधिकरइउ।विकार।घाइ।तगो गीयानउ।पटवाय।करी।उरीयइ

जिमक्राय।वाचा।मन।पाया।निरि।जम्मायं।उपवन।दिइं॥८२ ह्वाहपापe।हाथपग।निरर्थक।का उपावइ।माहात्मा।आपणाइला।वइनही।काया।दह।तपिणि।तयाइ।नाहिक।काय।पावइ। दलावइनही।कम्मुवंo।कर्मक्रा।वद्या।नी।परि।आपणा।अंगा।पांगा।पवइ॥८४ विकहंo॥

वसामण। कायंवायंवमणं। अप्पाहणं जहमदह ८२ दाव्वपावनखिव।
कायंवालिहतंपिकाघण। कम्मुवसमअंग। अंगावंगाइंगाविद्या ८३ वि
कहंशिणायमासं। अंतरलासंत्र वक्कलासंव। जंजस्सअणिहमज॥
विजय। लासंतलाभिद्या ८४ अ णवहियंमणाजस्स झायइव
ज्जयाइ अहमहाइं। तंविंतियं चनलहइ। संविणइपावक।
म्माइं ८५ जहजहसवुवलहइ॥ जहजहसुविशंतावावणवुह्वं त
हतहकम्मलरयुरु। संजमतिह्वाहि गाजाग ८६ विहाप्पाजहहजहग।
महाइं। पाह्वहवायहरणाइं तहतहासअहियथरं वापणाकयिंसुहं ८७
दहजगमकघकरं। लिवसंरवंनाहाइजणकरणं। लाहंचतंबविहं नपइपा।

तिमअहंत।सुविहिक्रमवातहर।मिरांत।पद।कषधपावातंघकंइ।पाविहप्रांणिया।गिंयां नां।विना।रूपिया।पटगा।हरजा।नराइ॥८८ हहजण।हाधीला।घनस्सकीधीका।जिनावइ।अ नइ।नागउमां।घवली।संधइ।नही।लाहंचण।लाहइउ।तांवइं।बोधिउ।वइलाइं।घाट।घिउ।तद

विकहा।व्याप।विनाद।नाषा।क उतिगनइ।काजि।तहिइनकरइ। अनइगुरुवाबालना।विवइ।आंजी ।तद्धातइ।तरिअंतरनाषा।नाबालइ अवहकण।मक्का।रवक्कारा।हि।तिह इनबालइ।जंजस्सण।जिजइकइ ।अनिहअगमती।नाषा।ताइ॥ इइं।नाबालइं।अ उविजाविक उा।नावालपण इवालइ। तिसाघानना धिवी॥८ पा॥अणवहियं उजइजम नअनवहिना।अति चपलाजइ। काथइण।अमनइ।अनका।पानाव का।रि।आलाजाला।ध्यायइचीतवइ संविनि।तमनमउ।चीतवीउ।तउ लहइ।नही।संविणइण।कणि।कि णि।पापक। मनरका।दिक ।जरकना। ४८ कारणबांधइं॥ इह।नणी॥ आपणअमनाध

नउला।गाइविहं।नणइण।कणिइंसंधाइंनही।बीजाईला।हा।नावइ।मिं।अयक्कराइ।उरिक म णा।नजाइ।तिमजदीक्रा।लेईनइ।प्रमादीघाततउपादमनइ।आजाम॥८० एकादाहीण।ते हइइ।विरागतवनउ।कण।उपादशादशिइं।कानदिइं।मिधांतलवपठानइ।वारिन्ननइवि

वार्धनमावइजा।कही।उयविहा रता।जमाहात्मानां।किया।व्र इंतनतनइरवरकक।विवउ।अनइ व्यावर्तनइ।अवइजाज।विंबंनी।कल फलादिकइजानइक।विवउ।जा जीवनावइणाउप।नावर्तनघरावा रित्रपालीनमक इ।तउहविज ।ण।इथअइजीथा॥ वक्रा।नअध ग्मी।पालिवा नइविव इच्छामवंतधाइ ॥८२ जीव णाण।जिनवहाधार।नावइजाहि वइजाधकीरहनसरीर०।मयरत्न सुवनउका।उत्तिहनइ।विघइ॥ पिशिसीयाo।लानी।तहनइ।नवात शिजिनधर्मपामिवाधिरूपवाधिनज इं।अइसइ।तिमा।स्वरूप।अनइ।पर ला।किस्यगी।गतिनजइ।॥८३ कंचण ०।कांचन।मय।मणि।मय।सिद्धालापा

रकम्मणं।किवि ८० कादाहीउवपसं। चरणालसियाण।इविघदाणं॥
इक्कस्सदवलागा। नकक्वचिइजाणमाणस्स ८१ दाचेवजिणवारहिं।
जाइजरामरणविप्पमुक्केहिं। लागंमिपहानणिया। सुसमणसुस
नवगावावि ८२ नावव्वणसु। गविहास्याय। दहवणंजिणइ
या। नावव्वणाउनाहा। दा। विहदव्ववणंसुत्ता ८१ जाव
णनिरव्वणविय। सरीरसुद्ध॥ कघमित्ततव्विाव। तस्मनयावा॥
क्किलाला। नसुगाईतवपराला। गा ८२ कंचणमणिसावाणं। थंतस
यसमसीयंसुवन्नतलंजाकारियजिणहर। तउवितवसंजमाअहिउ ८३
निव्वीणहशिक्क। रन्नादीवंतराउअन्नाउ। आणऋणंवीयं। इयदिन्नंकास

नपाडिया।गांजइ।अनइधंनाना।महस्मात।दिकरी।उहित।अनइस्वर्षा।वधतलउं।उ इ।इमउंसवाभावपांक।जिनलवनकरावइ।तहपां।क्षि।तपसंयमअधिक।जाणि वउ॥८४ निव्वाणo।वीजउइघ्नंननलानय।इमइडलिक्षिपइडिइ।कणक्षिराजा।अनेरा

षडा।आलसप्रमादीइइ।जाणनाव। मादकरइ।वइ।तहइकइशिष्या।क णदिइ।इंदस्सण।दवालाकनास। रूपइंइ।आगलिवर्यवाइनही।इंद आगलिववंजाणइब्रह्मानबणाना। कहाइ।तिमतइइकहिइ।संथति नपा।उपादशना।हि पाघाप्तनइ।तु मइ॥८० दाचे। वहजिनवर तीर्थंकरा।दव जन्मजरा मरण।विप्रमुक्ता॥ किना।तीर्द मोक्षिनगरा॥ विहिइजिमा। र्धलणिया।लाकमा।हिक।क्रिया।जि स्समणपअमणावारस्राया।उअत्तइ आवकनउ।अधिज।इलगा।नो।जा संविग्नपाक्षिकमउ।पणिजो।त्रिणि उपणि।तहपाक्षिजा।विइमा।क्षिमाव इ॥८१।नावदाणo।परामअनवंता

तुंखाधउं। दशविरतअर्द्धखाधउं रसाधमात्मा॥ धर्मबीजस्वथित खात्तवाथिउं। निष्पत्तियमाडिउं॥ ८ तजातसबंध जणपामहादिक॥ तसर्वविरतिरूपधर्मबीजलहीन इ। हृत्रिहजिवतउंविणासइंतुबल प। तुर्बलिअसमर्थथतिमननउंघीर पणुत्रबइ। इस्याघ कातपसंयम नइविवइपरि॥ श्रीतकस। ज्ञातपनकर शइहते उं०। तजिनशाम मिनिमूकि उं। शीलनर। संयम॥ सार। जादा ते पासबाकहियइ॥ ८८ आणंम०। ते पासज्ञासविऊ। जिननी आज्ञासाउ रा बइ। जहमणी उविहंप। उविहि॥ पंचमाहात्मा। अनइश्रावक। नवमा ग्रविअतिक्रमी। उलंघीवत्रइबइ॥ प कश्मा हिनघी। आणंवपउऊ। आज्ञा

।द्वीपांतरघकउं। बीजवाविवा जागिआंणीमइ। करसणीलाकनइ। आपिउदीधउं॥ ८५। कहिविपतबीज। कतालकरसणिएसगलउंखाधउं। अनारपइन०। अर्द्धवा थिउंअर्द्धखाधउं। अनेर। सघलुंवाविउं। अनइ। निपत्तिइलीधउं शत। सहस्र। गुणउं। नी

वउणस्स ॥८४॥ कहिविसव्वंखइयं पइन्नमाह्निं सव्वमहंच उत्तयं
घाकइ खित्तखुद्दंतिसंतव्वा ॥८५॥ गयाजिणवरचंदा तित्थीयंधम्म
विरहिउकाला (खित्ताइंकम्म विरहिउकाला) खित्ताइंकम्मभू
मी ॥८६॥ कासवयागायवा॥ ताहि ॥८७॥ असंजयहिसव्वंखइ
यं अद्धंवादसविरईयहि सारूहिंधम्मबीयं उत्तंनीयं
चनिप्फत्ति ॥८७॥ जातमबलहि यं पव्वाखुद्दंतिडबलधिया नव
संजमपरितंता इह्रातउहरिय। सीलनरा ॥८८॥ आणंसव्वजिणाणं
तंजइडविहंपहंअइक्कंता आणंवअइक्कंता लमइजरामरण।
दुगंमि ॥८९॥ जइनतरमिधारउं मूलगुणलरंसउत्तरगुणंच मुत्तूण

उलंघइवइअउनमइप। जरामरणाकरी दुर्गादनसंसार अनंतामाहिरूलइसमइ। ५०० जइनतप। लासव्वजीवजइतउं। मूलगुण। पांचमहाव्रतउत्तरगुण। पिंडविशुद्धउंलार। धरीनसकइ। तउ। मत्तूणातापविशिभूमि। जिहां। जन्मजुआरवाधिउ जिहां दिक्षालीधी।

पजा थिउं। उत्तगयं०। केतालाक्षेत्रि घाथिउं। अनइ। कगिउं। उग।। क्षेत्रि इजिवतउं। खुद्दंतिप। चोरीआणिवा नइकाजि खुदिउ। कहिउप तालारा जउकघातहीसपबइ। मीघांमणदी धी॥ ८६ हरायाजिप। इहांअनरंगलाव। आआराजा। जिन वरचंद। अरिहं ताजाणिवा। उर्ति का। धर्मरहि तकाल। तनि बीजजाणि वउं। कर्म्मभूमि॥ १५ क्षेत्रअन इ। असंयत। दशवि रतश्सा धुश्पा ख्थि। एच्यारिकरसणीवर्यरहइं। धर्मरूपबीजआपिउं। केवलज्ञानरू पियाहीपघकउं। आणीनइमाक्षरू। खरूपियाधनंनी निष्पत्तिनइकाजि इंआपिउं॥ ८७ असंजय०। असं यतिविरतिरू ४१ पधर्मबीजसघ

उ। कीतरागनी आज्ञा। उलंघी। त उ। कस्म०। शेषघाकतां। अतुघांन जिकरइरूबइ। तकहमइ। आदा शिइं। करइबइ। तनीधणीयांम १ मणी विटंवनाजाणिवी॥ पस साराायणजत्व थवाशिन्न। अन इ। आजीवक। मात्रलिंगि उपजीवइ। बइ। ज हा। तहइडइ। अ नंता संसा रिका। पणउ। जाणि वउं। जीणइं॥ पांचमहाव्रतनउंभंग। उधिस्नरा प्राकाशगद। ललिउं। लोपिउं॥ ध नकारप। सर्वसावद्यनकारमि। नकारवेमिइसघ। कहीनइवली

विहारकीधउ। पतिणि तुइबांडी अनेथि। जईतुश्रावकपणइगृहस्थधर्मनउ। आराधिवउ। ते वरतरूतुउं॥ १ अरिहंप। अरिहंतना बिंबनी पूजा। अनइसुसाधपूजा। वस्त्रादिके। त हनइविषइ। रत। हढाचार। अणुव्रतादिकनइ। विषइदृढ। इसिउं। सुश्रावक। वरिलउं

तातित्तमिं सुसावगत्तंवरतरागं अरिहंतचेईयाणं सुसाजपूया
रउदढायारा सुस्सावगावरतरं नसाजावसणउअधम्मा ॥१॥ स
बंतिनाणिऊणं विरइखुत्तुज म्मम्मवियानवि मासव्वविरयवाई
तुक्कइदसंवसव्वंच ॥२॥ जा॥ जहवाउंनकुणइ मिच्छदिट्ठीतउ
जाका आज्ञा वहइअमि बुत्तं परस्ससंकंजणमाणा
॥३॥ आणाइच्छियचरणं तज्ञ॥ गजाणकिंनलगांति आणंवअ
इक्कंता कस्माएमाऊणइसमं ॥४॥ संसारायअणंता लद्दवरिन्नस्स
लिंगजीविस्स पंचमहव्वयतुंगा पागारातिल्लिउजण ॥५॥ नकारमित्ति
नणित्ता तंचवमिसवउआणापावं पवरकसुसावाई मायानियडीपसं

तविडा। पापनिपद्याचरण। सवइ। तपतप्यमृषावादी। कुडा। बालउ। कहियइमा या०। अनइतरुकइ। सननउकुडकपरसणी अंतरंगउवा। पणउ। जाणिवउ। अनइ। बाहिज

पणिसा धावधि। व्रष्टधर्म। तनलउ। नहीं॥ १ समहतिप। सावद्य। जोगपव षी। इसिउंसणीनइं। जसंग्रहपविर तिनपालइ। खटजीवनी। विराधना करइ। सासवप। तसर्वविर्तिनीप तिज्ञानउकरणहार। तुकइप। दशा विरत्ति। अनइसर्वविर्तिविरूघकोउ। हकइ॥ २ जाज हप। जिघावाद जिमउ। बाल इ। तिमउ। नक रइ। तउ। त हथिकुउ॥ अनेरउं। मिथ्या बीजाण। वाह ई०। तमिथ्यात्ववा धारइ। परस०। प रआसरालाकनइं शंका। ऊपजाव इ। ध आणाइच्छि०। श्रीवीतरागनी। आ ज्ञाइ। जिवारित्रउइ। अनइ। तत्तांऊइ। त्रिणिकिंसवंनलागउ। मरूलागा। उं। इसिउं जाणि आणंच०। अनइऊ

यं।मारूलक्षणसाधी।नमकइ।अ
नइ।आपणपारहइ।कागग्रायकर
१०पराचितिऊण।निउण।उद्धिं।प
रिचिंतिऊण।आलाचीनइ।नियम
नर०।उइमूलगुणउत्तरगुणरूप
चारित्रनउभार।ऋयाडीनसकइ।
मरणांतलगी।निर वाहीनसकइ।
तउपरचित्तरंज   णण०।परअ
नेरालोक।   नांचित्तरं
जिवइ।राहीजो   हरणादिक
वेषमात्रनइधरि। वइ।आधाइग्र
तिपडतोरहीकाईनऊइंसाहूउ।
लोकनइमनिविस्वमऊपजावी॥
अनंतउसंसारवधरइ॥१०निच्छय०
निश्चयनयइपरमार्थविचिंइ।इमि
उ।व्रइइचरण०।उउचारित्रनउ।उप
घातविणासऊउं।तउज्ञानदर्शन
नउ।विणाशऊउं।जाणिवउं।जउ

रावपणउं।क्रिया।आश्रीकपटतमायानिवइउंप्रसंगजाणिवउं॥६लोएविए।लोकइंमा
हिजमुनिष्पसस्तगजइ।प्राडाईपापनउबीहइ।तामहसाकारिइं।ऊडउ।नाबालइ
।घणी।विमासणकरइ।अहदि०तदीक्षाइलीधीजेती।अलीकाबोलइ।सर्वसावज्जंपच्च।

गाथ ६ लोएविजोससूगो अलियंसहसानभासएकिंचि अहदिक्खिउविअलियं भासइताकिंचिदिक्खाइ ॥७॥ महव्वयअणुव्वयाइं छडेउं जोतवंचरइअन्नं सोअन्नाणी मूढो नावाबुडोमुणेयव्वो ॥८॥ सुबहुंपासत्थजणं नाऊणं जोनहोइमज्झत्थो नयसाहेइसकज्जं कागंचकरेइअप्पाणं ॥९॥ परिचिंतिऊणनिउणं जइनियमभारोनतीरए वोढुं परचित्तरंजणेणं नवेसमित्तेणसाहारो ॥१०॥ निच्छयनयस्स चरणस्सुवघाएनाणदंसणवहोवि ववहारस्सउचरणे हयंमिभयणाउसेसाणं ॥११॥ सुज्झइजईसुचरणो सुज्झइसुस्सावओविगुणकलिओ उस्सन्नचरणकरणो सुज्झइ

साचउत्तचारित्रनपालइतउसावउसाहहिवउ।ववइ।अकउघियां।विवहार०।अनइवि
वहार।बाह्यवृत्तिइंजाईइतउ।चरण०।चारित्रविणवइ।नयणा०।बोषघाकताज्ञान
दर्शनिनीनजना।नाऊइअघवानलाऊइ॥१२सुज्झइ०यतिसुचरणउहउ।चारित्रिस्म
ऊइ।कर्ममलकलंकपखालइ।अनइसुश्रावकगुणकलित।समपक्ता।अणुव्रतादिक

स्वामि।इमकहीनइसावद्यिगालइ
नहीतहनीदिक्षाइंकांइ।काजनम
रइ॥८।महव्वय।अणुव्वया०।जम
हात्माआपणामाहाव्रत।छांडइ।अ
नइश्रावक।आपणाअणुव्रतछांड
इ।अनइ।जतपाउपवासादिक॥
एकाकष्टउंसमाचरइ।करइ।सो
अन्नाणीमूढा०त वापडउ।अज्ञा
नी।मूढ।मूर्ष॥   अज्ञानतप।
नउ।घणीक   ष्ठीइ।नावा
बु०।तपइलावे   डीनाधणी।
मूर्षसारीषउजा॥ णिवउं।तमूर्षि
षीलानाकाजलणी।।बडीनांजीवी
लुउलिइ।जीणइ।षीलइ।करी॥ब
डी।बुडइवइ।तषीलाउषलिइ।ब
डीगाढरडीबूडइ।तिमतसंयमरू
पणीबेडीलांजइ   ।अनइतपरू
पिउंषीलउंलि। ४२ ६।९।सुबहुं
०।घणाउंपास्वाजनजीणीनइ।जेम
भस्वनजंइ।मोमझीलनऊइ।तस्वक।

दिइं॥१२उसन्ना०।शिथिला।चारि
त्र।आत्मार्थहीका।दिइनउधकउाप
२२हइं।अनइ।आपणपाऊइं।हण
इविणासइ।तहशिष्यकइं।शिथि
थलाचार।सीषवी।इयेति।धावइ
।अद्विथ०।अनइआपणपउ।आ
गमसंसारूमाहि   बूडउवइ।नइ
वलीअधिक   रउं।बूडसी
॥१७उहस   रण।जिम
कोएक।जीव   बीहतउ।ऊ
णइएकनइसर।णिआवइ।नि
कृतणए।तसरण।गत।जीवना॥
जिराज्ञेवेदइ।इमआचार्यकहइ
नविजीवसंसारना।नइघकीम
रणिआवियावइ।तहरक्षिइ॥
उस्सुत्तं०।उसूत्रउन्मार्गप्ररूपीऊ
मार्यिपाडीनइदुर्गतिपाडइ।ति।

गुणमहितसूऊइ।अवसन्न०सियलचरण।करण।शिथिलचारित्र।उधणी।संविग्नसाक्ष॥
लिलाषीमाह्लास्मानीऊीया।ऊपरिसुविधरतउ।चारित्रियंऊपरि।बऊमानधरतउसूऊइ
॥१३संविग्गा०संविग्नपाक्षिकनउ।सरूपलक्षण।समसतउ।मोक्षपिस्तीपंकिरगुणधारक

संविग्गपक्खरुई ॥१२॥ संविग्गपक्खियाणं लक्खणमेयंसमासओभणियं उसन्नचरणकरणाविजेणकम्मंविसोहंति ॥१३॥ सुद्धंसुसाहुधम्मं कहेइनिंदइनियथमायारं सुतवस्सियाणपुरओ होइयसव्वोमराइणिओ ॥१४॥ वंदइनयवंदावइ किइकम्मंकुणइकारवनेअ अत्तट्ठानविदिक्खइ देइसुसा हूणबोहेउं ॥१५॥ उसन्नोअत्तट्ठा परमप्पाणंचहणइदिक्खं तो तंबुहइउअइए अहियपरं बुड्डइसयंव ॥१६॥ जहसरणमुवगयाणं जीवाणनिकिंतएसिरेजोउ एवंआयरिओविहु उस्सुत्तंपन्नवंतोय ॥१७॥ सावज्जजोगपरिवज्जणाए सव्वुत्तमोजईधम्मो बीओसावगधम्मो तइओसंविग्गपक्खपहो ॥१८॥ सेसा

णिनामस्तकछेदजाणिवा।एनावए॥१८सावऊजोगए।सावद्ययोगसपापव्यापा
रउंपरिवर्जनाकरीयतिधर्मसार्वोत्तमाजाणिवउबीऊउश्रावकनउधर्म।त्रीजउसंवि
ग्नपाक्षिकनउ।पथ।मार्गजाणिवउं॥१८सेसामिथ।त्रीषधाकता।मिथ्यादृष्टीजाणिवा।ऊ

हिउं।उसन्न०।कर्मनइविशोधिइ।चा
रित्रनइ।विषइ।प्रमादीऊता।कर्म
विए।ज्ञानावर्णीयादिकर्मविसोध
इधोइ।इमकर्मक्षयकरइ॥१४सुद्धं।
सुसाएसुद्धनिःकलंकसुसाधुधर्म।
लोक।आगलिकहइ।आपणउ।क
र्तव्यलोकआगइनिंदइ।आसिथम
दनावात्याकरूउ बउ।तिसुनमार्थ
नहीइमकहइ   ।सुत०।अनइ
तपस्वी।न   लामाहा।
त्माआगलिक   रइ।आपण॥
आजनादीक्षापांहि सुहउउघाइ।यु
रूनीपरिमानइ॥१५वंदइ०।तीहसु।
साधुरहइं।आपणिवांदइं।तीहलघ
डाईरहइं।नवंदावइं।तीहरुइं।कृति
कर्मविश्रामणवांदणादिककरइ।त
हपाहिकरावइनहीं।अत्तठ०।आप
णइ।अर्थिदीक्षाशिक्षनइनदिइ।दे
इसुए।नलासाधुऊइं।प्रतिबोधीनइं

असमाधिमननीनजवइ।तिमक
रवीजाईतउकाउ।अथवा साधुरू
डउं।काउ।मरू।करइं।तिसंविग्र
पाक्षी।कहियइ॥२३आयरउ।गा
ढइ।आदरिइंकरीसुसाधकइं।स
न्मानमउं।करिवउं।इजा तक्किन
उंनीपजा विवउं।संविग्रपाक्षिक
पणइमाटउंडक रकरतां।दाक्षि
लउंकोइ।मा। णसंघाजम
णी।णाला काआप
णइ।अलिमा। निइ।करी।
संकटातावउउव इ।संविगपसं
विग्रपाक्षिकपणउकमन्नाकइं।ले
ाकमाक्षिस्फटप्रकट।निश्चंचपण
इकरतां।दाक्षिलउ।एहमणी।तव
संसनीकहवइ॥२४सारणप सार
णाएकोई।वीसरिउं।धर्मानिषेध।
नसंलारीइ।तस्मारणा तीणइंक

णा२।गृहलिंग।त मिथ्यात्वी।कुलिंग जोगीसन्यासादिक।नइ।वलि।त।द्रव्यलिंग।ओघा मुहपात्र
स्था दिक वेश।ते।जिमत्रणि।मोक्षनापंथक क्रियासुसाधु सुश्रावक संविग्रपाक्षिकपत्रिणि।तिमथ।
इस्थपत्र जीक्षिक२।पासत्था दिक३।एत्रिणि संसारना मार्ग जाणिवा॥२० संसार० संसारसमुद्रमाहि

मिच्छद्दिट्ठी गिहिलिंग कुलिंग दव्वलिंगी हि। उदत्तिन्निउ मुक्कपहा संसा
रपहा तहा तिन्नि ॥१९॥ संसारसागरमिणं परिभमंतेहि सव्वजीवेहि।
गहियाणि य मुक्काणि य अणंतसो दव्वलिंगाइं ॥२०॥ अच्चणुरत्तो जो पुण न
मुअइ बहुसो वि पन्नविज्जंतो ॥ संविग्गपक्खियत्तं करिज्ज लब्भिहि
सि तेण पहं ॥२१॥ कंतारराह मद्धाणओम गेलन्नमाइकज्जे
सु सव्वायरेण जयणाए कुणइ॥ जं साहुकरणिज्जं ॥२२॥ आयरत
रसम्माणं सुदुक्करं माणसंकडे। लोए संविग्गपक्खियत्तं उसन्नेणं
फुडं काउं ॥२३॥ सारणवइआ जे गच्छनिग्गया पविहरंति पासत्था जिणव
यणबाहिरा विय ते उपमाणं न कायव्वा ॥२४॥ हीणस्स विसुद्धपरूवगस्स

री।वोइयारूंता जगनइधकाबाहिरिनीसरीआ।आपणीइंवांवालइ।हीडइ।तेपासत्था
जिनवचनतउ अलगा।बाहिरि तउ।प्रमाण।तेसाधपणइ प्रमाणनकरिवा।पासत्थाजाणिवा॥२४॥
हीणप।जेसूलाउत्तरगुणहीन विशुद्ध।परूपकाधका।यथास्थितिसर्वज्ञागमप्रकाशइं।संविग्र

सधलो।जीवपरिभ्रमण करतथकां।२
जाहरणा दिकावेषसहा ग्रह्यो।अनंती
वारलीधा।अनइ मूकियाहउइ॥२१अच्च
णु०जोवधधरिवानइविषइगाढउं।अ
नुरक्त।प्रतिबद्धजइ।लगारइ।समग
लावइ।इसिउंहतउ।नमूकइ०।घणुंई
परिहवीनउघणुं।सदा।त्मानाउपनस्य
कइ।तउ।संविग्र पातिणि संविग्रपा
क्षिकपणउक विवउं।तीणइं सं
विग्रपाक्षि कपणा थिक
तनवातरिज्ञानी दिक।मोक्षमा
र्गलहस्यइ॥२२कं तार०।कांतार।मो
टउ।अरण्यराह०।राधपरचक्रानन
यो।गहराहउ।अद्धाण।विषम।मार्गि
चालिवउं।अवमए।डर्निपिकालि।ग
लग्नए।गिलान उगादिक।रोगाकरी॥
संदीवाडिनइसणइत्यादिकार्यकुप
नइसत्रायण।स धन्नु वादिरिइ।जय
णा।करी।जिमद्रमाधकइंइहवाणमावइ

जीव।नइ पिउपादशमालिइ।किसउं
काज।कोई।काजनहीं॥२०वशण
०।माक्षाव्रतादिक।करण०।पिंडवि
शुद्धादिक।सकलना शिवक्रियान
इ।विषइ।जिआलस्य।प्रमादीवइ।अ
शिणय०।जिजीव।दर्विनीतवइ।अ
विनयवजलजइ।तदरहइं।एउप
देशमाला।प्रकर णमादवा।आया
गप।दवायुकउ।नहीं।कोइ।
नमणी०।जा नमहआल
क्षस्य।गुण।र नाकाउसाम
।कागनइ।कंभिआ इजइ०।पहिरा
विवीनही।इसारनातहनइजाणपन
जइ॥३पनाकण०।हाथिलीधाआम
लानीपरिस्फुटप्रकट।मजावर्थ०॥
सावीजुहिइं।करीज्ञानादिक।मा
क्षा।पंसजाणीनइं।धर्मसि०।धर्मन
इ।विषइ।सीदाई जाइ।प्रमादीया
थाइ।तइस्पनइ।जाणिइ।कर्म०।त

नउपरूपानकरइ।तहरइं।जजयणा घाडी यइं जइंतातहकइ।अधिक निर्जराजइव
जादापवखुनउदाली लवउ।तजयणाकरतां निर्जरा हुइ॥२६ सुंकाई०।शुल्करायनउदा
ण आदिलगइ।नाडावउलावादि।प्रमुखाता ध्याप्रविइं।सय०।इसइलानिहतइ।वाणीयउ।ते

संविग्गपक्खवायस्स जाजहविहिजयणा सासा मतिक्कराहाइ ॥
२६ सुंकाईपरिसुद्धं सयलालक्कणइ वाणिउ विहिपामवयगीयत्था
आयंदहुसमायरइ आसु क्काजा गिण्हिय हवइ जा घावा वित
स्सजीवदया संविग्गपक्ख। जयणा ता दिहा साजवगास्स
किंम्हसगाणाआवण। ।किंवा कागाणकणगमालाए
।माक्षमलरववलियाणं किं। कहुवयममालाए। वरणक
रणालसाणं अविणयवज्जलाण सयया जागमिणं नमणी सयसाह
स्सा आइसइक्कहुंतासस्स नाऊणकरयलगया मलंवसजावउ
एहंसहं धम्मंमितामसीइयइत्ति कम्माइंगुरुयाइं ३० धम्मत्थकामसु

हत्ता कर्म्मइजितारी।तादकरीत।प्रमादकरइडइं॥३१धम्मत्थ०।धर्मअर्थकाम मोक्षमा
र्थजाणी।इनइ पविक्षडरूपाथेवरवाणी।तइंतत जहनउ।मनजिहांरमइ।तहनउमनतिहां
इजिवसइ।जीवसविक्षउक्कइस्याहिइं।मननवी।इजिकविजइ।एहनाणी।वरागांतत्ता०

श्राव्यवसायक्रियाकरइ।लासनादा
पइतउनकरइ।इसगीताईजइ।त
आयं०।ज्ञानादिकनउ।अधिक।आय
दपीसल्पादापवजा।गुणवस्तसमा।
चरइजि।जयणाकरीसवइ।तहकूर
लानजइ॥२७आसुक्काजा०।कणइं॥
मूकिउं।संयमयोग।तसाधवयरिइ
इं।जीवदयाधाउ। जिकाइं।कतली
जीवदयाजइ। जि।तेलणी॥
संविग्रपा॥ क्षिकनीज
यणा संविग्रपा क्षिक।नउमा
र्गपामसुरिइं।हीव उ॥२८किंम्हसा
गाणआवणएसृपकक्षि दिरनइअर्धि
दीनाराक्षिक्विकिसंउंकीजइ।अधका
गकनकमालरत्नमालाइ।किसुंका
ज।माक्षमल०।तिम।माक्षरूपिमित्रा
वादिकर्मसलिइं।करी।खवलियाणं
।गाढाखरडियाहइं।तवजलकमी॥

एकांत। वैराग्यरसमांहि। प्रकरण मांहि लीन थई। सुधारूप जीव रहइं। नियमं॰। केतलाइं इसा
स्तुं धर्मनइ। विषइ। विमुख। पण अंगरूप जीवइं॥२१ संजम॰ जे संयमतपनइ विषइ। आलस्य
तिहरूइं। वैराग्यकथाकाननइं। सुधा दिउ नरूइं। वली॥ केतला संयमतपनइ विषइ। आलस्य×

×संविग्नपाक्षिकनइं। सुधा हितज
इ पणि॥२२॥ साहूण॰। एउपदेश
मालाप्रकरण सांभलीनइ। जेहरू
इं। धर्मजिनाकनइं विषइ। उद्यमवि
त्ता संभलन ऊपनउ। अनइ विषइ॥
नइ विषइ। जेहरूइं। वैराग्य नऊप
नउं। जाणिज॰। तेह सउं जाणिवउं॥
ए अनंतसंसारीउ कालासर्पजि
म। असाधि इति ॥२३ कम्मा
णुप मिथ्यात्वा दिकाज
घणा कर्म तीहन इ। उपशमि
करी॥ केतलानइ। रूइ करी हलुउ
थाइ। तउ अवगछइ॰ प्रतिबोध कर
इ सही। ऊपजइ। सावी सघली होय।
इ वइसइ। कम्ममल॰ जे कर्ममलि
वीकणा। मिथ्यात्वपंकि विरथाता।
हरहइं। कहीतोइ। पामइ वही जा
इ होयइ कोइ नावसइ॥२४ उवएसम
०। जे धन्य नाग्रंथवंत तउ उपदेश॥

एकं पि जस्स लाइ हिअइ हिरमइ वेरग्गंतरसंतयमं सव्वं सुहावह
३१ संजमतव अलसाणं वेरग्गकहा न होइ कन्नसुहा संविग्गपक्खिया
णं जत्थ वि कम्मि वि नाणीणं २२ साहूण पगरणमिणं धम्मजणं
उद्यमा जस्स न य जणियं वर गं जाणिज्ज अणंतसंसारी २३
कम्माण सुबहुआणुव्व॥ सामण अवगच्छइ इमं सव्वं कं
ममल विक्कणाणं वच्चइ पास णलग्गं तं २४ उवएसमालमेयं
जो पढइ सुणइ गुणइ वा हिअए। सो जाणइ अप्पहियं नाऊण सु
हं समायरइ २५ धंतमणिदामससिगयणिहिपयपढमरकराणनाम
णं उवएसमालपगरणमिणमो रइयं हियट्ठाए २६ जिणवयणक॥

मालासूत्र। पढइ अनइ पढतउ। अर्थ सांभलइ। हियइ। अर्थ सलालइ। तजीवइ हलाकि। पर
लोकि। आपणपारूइं। हित आजाणिवा। आपहित जाणइ। अनइ जाणीनइ। सुखिइं। आपणउं
हितसमाचरइ॥२५ इर्थकरणहार आपणउ। नाम युक्तिइं। करी कहइ।× अवलासवबु ७

संविग्नपाक्षिक बइ। धंतमणि०। धंतामणि
२ दाम शिशमयगयपणि हिइहं वद्दं
पदीन। पहिला। अक्षर। तिहकरी। जेह
नउ नाम। ऊपजइ। तीणि। धर्मदासगणि
इं। एउपदेशमाला हित मांसिनइ। अ
र्थि। अथ जीवना। हित लगी रचिउं। २७
जिणवयण जिनवचन काद्वादशांगीरूपा य
क्षय। फल दायक। पण तनकल्पवृक्ष
। रूप। अनक स सर्वार्थशाखा ते
हकरी विस्तरी सहितकउ।
तप। नियम। रूप। सुनिमहात्मा
रूपीया सुमरीइं॥ हर्ष। हिवनणी॥
ऋग्ल मरूल। साधु। श्रम स्वहइं। इणइ
कल्पवृक्ष मिइं। सुगइ॰। सुगति दवाला
करूप सरस फल। अथ मास अनंता
सुखरस परिपूर्ण फलन उं दीधिवउं॥
नीपजिवं इवइ। इणइ हला॥२७ जुग्गा
सु०। एश्री

४४

जुग्गा सु०। एश्री उपदेशमाल सुसाधु अनइ वैराग्यवंत श्रावकरूइं योग्य॥ अनइ संयम

व। जाग एमाला रची॥४० संतिक
री०॥ एमाला श्रोतादिकनउ पवाम
तिणकरी। वृद्धि धर्मनी करणहारी॥
कल्याणकारणी मांगलिककारिणी
होउ जइ कहगा। कहणहाररू
इं। अनइ। प र्षदसांभलण
हारला कतेहरूइं
। तहरूपा नि र्वाणपामो रू
सुखनी देणहा रिजउ॥४१ इत्थस
०। एउपदेशमालाप्रकरणसंपूर्ण
कउ इहां समाप्ति थई। इणि ग्रंथि
सर्विनि सर्वसंख्या पंचसइ थाल जइ॥

पमायका आणागसुन्नव्वसालविव्विहो तवनियमकुसुमगुच्छो सु
गइफलबंधणा जयइ २७ जुग्गा सुसाहु वेरग्गियाण परलो
गपत्थिआणं च संविग्गपक्खिआणं दायव्वा बहुसुयाणं च २
इय धम्मदासगणिणा॥ जिणवयणुवएसकज्जमाला
ए मालव्व विवहकुसुमा कहिआ उ सुसीसवग्ग
स्स २ संतिकरी वुड्ढिकरी॥ कल्लाणकरी सुमंगलकरी य
होउ कहगस्स परिसाए तह य निव्वाणफलदाई ४० इत्थ समप्प
इ इणमो मालाउवएसपगरणं पगयं गाहाणं सव्वग्गं पंचसयाचे
वयालीसा ४१ जाव य लवणसमुद्दो जाव य नरकत्तमंडिओ मेरू ता

४२ जाव इ लव॥ जं लगइ लवणसमुद्र॥ आकाश तनउ अड। जं नक्षत्रमालाइं मंडित। अलं

रूइं अनि सुरवगाइं। परलोकना हि
तनइ कारणि॥ जे उद्यमवंत बइ। जे
संविग्न। पाक्षिकानरूइं योग्य छइ
दायउ। अनइ। वली। बहुश्रुत साधु
श्रावकरूइं देवी बीजा। अजाग्य
रूइं न देवी। ॥३७ इय॥
इसी परिइं धर्मदास
गणिइं। जिन वचनोपदे
सना कायनी माला कीधी। कहि
या पजिम माल्यं च व विविध जातिना
कुसुम करी॥ माल गुंथइ। तिम तपरू
मादिकना। अनक उपदेशाकरी। प
माला कीधी। शिष्य। वर्य विनीत सु

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

४५

करिउं समरूपव्वता३ा श्वतउब्बडातावपतंलगइं श्री धर्मदास आचार्यनी रचीमाला ॥ हि
रस्तावरजगमादिजउ ॥ अरक रमाञा अजाणतइघकइपढिउ ततीर्वकिरघमउं ॥ ४४ ॥
वयरइयामालापढियाधिरघावरादोउ ॥ ४५ ॥ अरकरमत्ताद्दाणंउंचि
यपढियं अयाणमाणेणं । तं खमदमज्जसव्वं जिणवयणविणिग्गया
वाणी ॥ ४२ ॥ इतिश्री उपदेसमालाप्रकरणं समाप्तं ॥ ॥ ६३

ग्र५

प्रति १६

MEMORIAL
DEBHAU...